अनुक्रमणिका

पुस्तक परिचय

गणित एवं फलित ज्योतिषशास्त्र के दोनों ही पक्षों में 'लग्न' का बड़ा महत्त्व है। ज्योतिष में लग्न को 'वीर्य' एवं बीज कहा गया है। इसी पर फलित ज्योतिष का सारा भवन, विशाल वटवृक्ष खड़ा है। ज्योतिष में गणित की समस्या तो कम्प्यूटर ने समाप्त कर दी परन्तु फलादेश की विकटता ज्यों की त्यों मौजूद है। बिना सही फलादेश के ज्योतिष की स्थिति निर्गन्ध पुष्प के समान है कई बार विद्वान् व्यक्ति भी, व्यावसायिक पण्डित जो, जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश करने से घबराते है, कतराते हैं। अत: इस कमी को दूर करने के लिए प्रस्तुत पुस्तक का लेखन प्रत्येक लग्न के हिसाब से अलग-अलग पुस्तकें लिख कर किया जा रहा है। ताकि फलित ज्योतिष क्षेत्र में एक नया मार्ग प्रशस्त हो सकें।

सबसे पहले हमने **'कर्कलग्न'** की पुस्तक प्रकाशित की। जिसका ज्योतिष की दुनिया में जोरदार स्वागत हुआ। अब यह **'मेषलग्न'** की पुस्तक पाठकों के हाथों में सौंपते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है मेषलग्न में भगवान शंकर, सिकन्दर महान, सम्राट पृथ्वीराज, फिल्म अभिनेता अशोक कुमार, अभिषेक बच्चन, राजनेताओं में गुलजारीलाल नन्दा, सरदारवल्लभ भाई पटेल, हरदेव जोशी, दलित नेता कांशीराम, जार्ज फर्नाडीस, चन्द्रबाबू नायडू जैसे व्यक्तित्व हुए हैं। मेषलग्न की इस हिन्दी पुस्तक का अंग्रेजी व गुजराती संस्करण भी शीघ्र प्रकाशित होगा। मेषलग्न की स्त्री जातक पर हम अलग से पुस्तक लिखकर अलग प्रकार से फलादेश देने का प्रयास कर रहे हैं।

इस प्रकार के प्रयास से आम आदमी अपनी जन्मपत्री स्वयं पढ़कर एवं अपने इष्ट मित्रों की जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश कर सकता है। आम आदमी तक फलित ज्योतिष का ज्ञान पहुंचाने का यह हमारा विनम्र प्रयास है। प्रत्येक दिन-रात में आकाश में बारह लग्नों का उदय होता है। एक लग्न लगभग दो घंटे का होता है। जन्म लग्न (जन्म समय) को लेकर जन्मपत्रिका के शास्त्रीय फलादेश को जानने व समझने की दिशा में उठाया गया, यह पहला कदम है, आशा है, ज्योतिष की दुनिया में इसका जोरदार स्वागत होगा। प्रबुद्ध पाठकों के लगातार आग्रह पर गणित व फलित ज्योतिष पर एक सारगर्भित सॉफ्टवेयर प्रोग्राम 'सृष्टिम' के नाम से भी बना रहे हैं जो अब तक के प्रचारित सभी सॉफ्टवेयर में अनुपम व अद्वितीय होगा। यदि प्रबुद्ध पाठकों का स्नेह अविरल सम्बल इसी प्रकार मिलता रहा, तो शीघ्र ही फलित ज्योतिष में नई क्रान्ति इस सॉफ्टवेयर के माध्यम से सम्पूर्ण संसार में आएगी। पुस्तक के अन्त में दी गई 'दृष्टान्त लग्न कुण्डलियों' से इस पुस्तक का व्यवहारिक महत्त्व कई गुना बढ़ गया है। यह एक अकाट्य सत्य है कि अपने जन्म लग्न पर फलादेश करने में प्रत्येक ज्योतिष प्रेमी 'मास्टर' होता है। आपने इस पुस्तक के माध्यम से क्या पाया और आपके अनुभव के खजाने में और क्या अवशेष ज्ञान बचा है? इसको पुस्तक के अन्तिम दो खाली पृष्ठों में लिखें। अनुभवों को लिपिबद्ध करें और हमें भी अपने अनुभवों से परिचित कराएं। हमें आपके पत्रों की प्रतीक्षा रहेगी परन्तु टिकट लगा, पता टाईप किया हुआ जवाबी लिफाफा पत्रोत्तर पाने की दिशा में आपको पहला सार्थक कदम होगा।

लेखक परिचय

अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वास्तुशास्त्री एवं ज्योतिषाचार्य डॉ. भोजराज द्विवेदी कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं। इन्टरनेशनल वास्तु एसोसिएशन के संस्थापक डॉ. भोजराज द्विवेदी की यशस्वी लेखनी में रचित ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, हस्तरेखा, अंकविद्या, आकृति विज्ञान, यंत्र-तंत्र-मंत्र विज्ञान, कर्मकाण्ड व पौरोहित्य पर लगभग 400 से अधिक पुस्तकें देश-विदेश की अनेक भाषाओं में पढ़ी जाती हैं। फलित ज्योतिष के क्षेत्र में अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) के माध्यम से इनकी 3000 से अधिक राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व की भविष्यवाणियां पूर्व प्रकाशित होकर समय चक्र के साथ-साथ चलकर सत्य प्रमाणित हो चुकी हैं।

4 सितम्बर 1949 को "**कर्कलग्न**" के अंतर्गत जन्मे डॉ. भोजराज द्विवेदी सन् 1977 से अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) का नियमित प्रकाशन व सम्पादन 26 वर्षों से करते चले आ रहे हैं। डॉ. द्विवेदी को अनेक स्वर्णपदक व सैकड़ों मानद उपाधियां विभिन्न नागरिक अभिनंदनों एवं राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के माध्यम से प्राप्त हो चुकी हैं। इनकी संस्था के अंतर्गत भारतीय प्राच्य विद्याओं पर अनेक अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय सम्मेलन देश-विदेशों में हो चुके हैं तथा इनके द्वारा ज्योतिषशास्त्र, वास्तुशास्त्र, तंत्र-मंत्र, पौरोहित्य पर अनेक पाठ्यक्रम भी पत्राचार द्वारा चलाए जा रहे हैं। जिनकी शाखाएं देश-विदेश में फैल चुकी हैं तथा इनके द्वारा दीक्षित व शिक्षित हजारों शिष्य इन दिव्य विद्याओं का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। भारतीय प्राच्य विद्याओं के उत्थान में समर्पित भाव से जो काम डॉ. द्विवेदी कर रहे हैं, वह एक साधारण व्यक्ति द्वारा सम्भव नहीं है वे इक्कीसवीं शताब्दी के तंत्र-मंत्र, वास्तुशास्त्र व ज्योतिष जगत् के तेजस्वी सूर्य हैं तथा कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं, जो कि **'युग पुरुष'** के रूप में याद किए जाएंगे। इनसे जुड़ना इनकी संस्था का सदस्य बनना आम लोगों के लिए बहुत बड़े गौरव व सम्मान की बात है।

1. हस्तरेखा विभाग–सन् 1981 में डॉ. भोजराज द्विवेदी द्वारा **'अंगुष्ठ से भविष्य ज्ञान'** एवं **'पांव तले भविष्य'** नामक दो पुस्तकें प्रकाशित हुईं। सामुद्रिक शास्त्र की दुनियां में इस नये विषय को लेकर हंगामा मच गया। पाठकों ने इन पुस्तकों को सराहा तथा इनके अनेक संस्करण छपे। सन् 1992 में **'ज्योतिष और आकृति'** तथा सन् 1996 में **'हस्तरेखाओं का गहन अध्ययन'** दो भागों में प्रकाशित हुए। अपने 40 वर्षों के अध्ययन से अनुभूत प्रस्तुत पुस्तक पर इस विषय के छठे पुष्प के रूप में पाठकों को समर्पित की है। **'हस्तरेखाओं का रहस्यमय संसार'** नामक यह कृति किसी भारतीय विद्वान् द्वारा लिखी गई संसार की श्रेष्ठ एवं बेजोड़ पुस्तकों में सर्वोपरि है। इस पुस्तक की कीर्ति ने जरमिन, कीरो एवं बेन्हाम जैसे विदेशी विद्वानों को मीलों पीछे छोड़ दिया।

2. ज्योतिष विभाग–इस विभाग के अंतर्गत विभिन्न कम्प्यूटर लगे हैं जो गणित एवं फलित दोनों प्रकार की जन्मपत्रियों का निर्माण करते हैं। व्यक्ति की जन्म तारीख, जन्म समय एवं जन्म स्थान के माध्यम से जन्मपत्रिका, वर्षफल, विवाहपत्रिका, प्रश्न पत्रिका आदि का निर्माण सूक्ष्मातिसूक्ष्म गणित सूत्रों द्वारा होता है। सही जन्मपत्रिका यदि बनी हुई है तो उस पर विभिन्न प्रकार के फलादेश करवाने की व्यवस्था भी उपलब्ध है। हमारे यहां हैण्ड-प्रिण्ट देखने की सुविधा एवं चेहरा देखकर भविष्य बताने की विद्या का चमत्कार केवल उन्हीं सज्जनों को प्राप्त है, जो हमारी संस्था **'अज्ञातदर्शन सुपर कम्प्यूटर सर्विसेज'** के संस्थापक, संरक्षक या आजीवन सदस्य हैं। 'अज्ञातदर्शन सुपर कम्प्यूटर सर्विसेज' के सदस्यों, व्यापारियों व उद्योगपतियों को वरीयता के साथ हम नियमित ज्योतिष सेवाएं घर बैठे भेजते हैं। इसके लिये निःशुल्क प्रपत्र अलग से प्राप्त करें। फलित ज्योतिष पर एक साफ्टवेयर **'सृष्टि'** के नाम से बन रहा है जो अब तक का सबसे अनुपम व अद्वितीय कार्य होगा।

3. वास्तु विभाग–हमने 'इंटरनेशनल वास्तु एसोशिएसन' की स्थापना कर रखी है। हमारे केन्द्र के वास्तुशास्त्रियों द्वारा वास्तु संबंधी विभिन्न त्रुटियों व दोषों का परिहार पूर्ण विधि-विधान से किया जाता है यदि व्यक्ति नक्शा भेजता है तो उस पर भी विचार-विमर्श करके सही स्थानों को चिह्नित व संशोधित करके नक्शा वापस भेज दिया जाता है। जो सज्जन 'वास्तु विजिट' कराना चाहते हैं उन्हें एडवांस ड्राफ्ट भेजकर समय निश्चित कराना चाहिए। वास्तु शास्त्र पर विद्वान लेखक की अनेक पुस्तकें हिन्दी व अंग्रेजी में प्रकाशित हैं। जो अपने आप में एक रिकॉर्ड उपलब्ध है।

4. यंत्र विभाग–विद्वान् ब्राह्मणों की देखरेख में विभिन्न प्रकार के यंत्रों का निर्माण शुभ नक्षत्र, दिन व मुहूर्त में किया जाता है। यंत्र बनने के पश्चात् उसमें विधिवत् प्राण प्रतिष्ठा करके ही भेजे जाते हैं। इस बात का पूरा ध्यान रखा

जाता है कि सभी यंत्र यजमान द्वारा निर्दिष्ट धातु में सर्वशुद्ध तरीके से बनाए जाते हैं। सभी यंत्र लाकेट में उभरे हुए होते हैं तथा बनने के पश्चात् निर्दिष्ट गंतव्य पर रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दिए जाते हैं। वी.पी. नहीं की जाती। वी.पी. के लिए आधा एडवांस प्राप्त होना अनिवार्य है। कार्यालय द्वारा अभिमंत्रित व सिद्ध यंत्रों का सम्पूर्ण सूची-पत्र अलग से प्रार्थना कर, प्राप्त किया जा सकता है।

5. रत्न विभाग—अनेक जिज्ञासु सज्जनों के विशेष आग्रह पर हमारे यहां विभिन्न रत्नों एवं राशि रत्नों के विक्रय की व्यवस्था की गई है। भाग्यवर्द्धक अंगूठियां एवं लॉकेट भी पूर्ण विधि-विधान के साथ बनाए जाते हैं। एक मुखी रुद्राक्ष, स्फटिक मालाएं, पारद शिवलिंग, हत्था जोड़ी, सभी प्रकार के तंत्र की सामग्री असली होने की गारंटी के साथ दी जाती है। इस हेतु सम्पूर्ण जानकारी हेतु सूची-पत्र अलग से प्राप्त करें।

6. विविध धार्मिक अनुष्ठान—संस्थान द्वारा 108 कुण्डीय पवित्र यज्ञ-कुण्डों, दस महाविद्याओं की जागृत 'श्रीपीठ' की स्थापना हो चुकी है। यहां पर विभिन्न प्रकार के दुर्योगों की शांति हेतु, व्यापार-व्यवसाय में रुकावट दूर करने हेतु, दुःख, क्लेश, भय, रोग से निवारण हेतु प्रेत बाधा एवं शत्रु को नष्ट करने हेतु, राजयोग, पद, प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु धार्मिक अनुष्ठान, यज्ञ, पूजा-पाठ एवं शांति कराने की सभी सुविधाएं भी उपलब्ध हैं। भारत एवं विदेशों में 'सामुहिक कालसर्पयोग शान्ति' कराने का श्रेय हमारे इस संस्थान को ही जाता है।

7. प्रकाशन विभाग—जो कुछ भी शोध कार्य कार्यालय के विद्वानों द्वारा होता है उसको निरन्तर प्रकाशित किया जाता है। ज्योतिष, आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, हस्तरेखा एवं प्राचीन भारतीय गूढ़ विद्या संबंधी पुस्तकों का प्रकाशन भी विभाग द्वारा किया जाता है। अब तक डॉ. द्विवेदी द्वारा 500 पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। जिसमें से 400 के लगभग प्रकाशित हो चुकी हैं। इसके अतिरिक्त हमारे कार्यालय से दो नियतकालीन प्रकाशन अनवरत रूप से चल रहे हैं।

1. **अज्ञातदर्शन (पाक्षिक)** 1977 से प्रकाशित, 2. **चण्डमार्तण्डपंचांग** एवं **कैलेण्डर (वार्षिक)** 1987 से नियमित प्रकाशित होते रहते हैं।

8. श्रीविद्या साधक परिवार—प्रायः सम्मोहन, यंत्र-मंत्र-तंत्र विद्या में रुचि रखने वाले अनेक जिज्ञासु सज्जनों, छात्र-छात्राओं के अनेक फोन व पत्र पूज्य गुरुदेव से मार्गदर्शन प्राप्त करने हेतु उनसे दीक्षा प्राप्त करने हेतु, मंत्र शिविरों में भाग लेने हेतु आते हैं। ऐसे जिज्ञासु साधकों को सर्वप्रथम 'श्रीविद्या साधक परिवार' का सदस्य बनना होता है। श्रीविद्या साधक परिवार से जुड़ने के बाद ही ऐसे जिज्ञासु सज्जनों को परमपूज्य गुरुदेव का पत्र या स्नेहिल सान्निध्य प्राप्त होता है।

विनम्र निवेदन—बाहर से पधारने वाले जिज्ञासु सज्जनों से विनम्र निवेदन है कि बिना कोई अत्यधिक ठोस कारण के परमपूज्य गुरुदेव से मिलने का दुराग्रह न रखें। सर्वश्री डॉ. भोजराज द्विवेदी से मिलने के लिए टेलीफोन नंबर-2637359, 3113513, फैक्स 2431883, मोबाइल-0291-3129105 पर पूर्व समय निश्चित करके ही मिला करें। यह आपकी और कार्यालय दोनों की सुविधा के लिए अत्यन्त जरूरी है।

इंटरनेशनल वास्तु एसोसिएशन (रजि.)—डॉ. भोजराज द्विवेदी उनके सहयोगियों ने मिलकर इंटरनेशनल वास्तु ऐसोशिएशन का गठन 14 दिसम्बर 1996 में किया तथा 7 दिसम्बर को इसे विधिवत रजिस्टर्ड कराया। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य भारत एवं भारत के बाहर सुदूर विदेशों में बसे जिज्ञासुओं को भारतीय प्राच्य विद्याओं की सही व सच्ची जानकारी देना तथा पत्राचार पाठ्यक्रम के माध्यम से उन्हें शिक्षित व दीक्षित करते हुए योग्य विद्यार्थियों एवं विद्वानों को प्रमाण पत्र एवं सैकड़ों जिज्ञासु सज्जन शिक्षित होते हैं। अब तक इस संस्था ने भारत व विदेशों में कम से कम 150 सैम्पोजियम, ऑडियो विज्यूल कार्यक्रम, अखिल भारतीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन सफलतापूर्वक आयोजित किए हैं। हमारे संस्थान की शाखाएं भी देश-विदेश में कार्यरत है। 50 रु. का मनीआर्डर भेजकर कोई भी सज्जन ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, मंत्र-तंत्र, विद्या, हस्तरेखा इत्यादि में प्रवीणता प्राप्त करने हेतु पत्राचार पाठ्यक्रम पुस्तिक मंगवाल सकता है तथा अन्य जिज्ञासु लोगों को शिक्षित करने हेतु अपने शहर में भी अन्तराष्ट्रीय वास्तु ऐसोशिएशन की शाखा भी खोल सकता है।

ज्योतिष शास्त्र की उपादेयता एवं महत्त्व

नारदीयम् में सिद्धांत, संहिता व होरा इन तीन भागों में विभाजित ज्योतिष शास्त्र को वेदभगवान का निर्मल (पवित्र) नेत्र कहा है।[1] पाणिनि काल से ही ज्योतिष की गणना वेद के प्रमुख छः अंगों में की जाने लगी थी।[2]

'वेदांग ज्योतिष' नामक बहुचर्चित व प्राचीन ग्रंथ हमें प्राप्त होता है जिसके रचनाकार ने ज्योतिष को काल विधायक शास्त्र बतलाया है, साथ में कहा है कि जो ज्योतिष शास्त्र को जानता है व यज्ञ को भी जानता है।[3] छः वेदांगों में से ज्योतिष मयूर की शिखा व नाग की मणि क समान महत्त्व को धारण किए हुए वेदांगो में मूर्धन्य स्थान को प्राप्त है।[4]

कालज्ञान की महत्ता को स्वीकार करते हुए कालज्ञ, त्रिकालज्ञ, त्रिकालविद्, त्रिकालदर्शी व सर्वज्ञ शब्दों का प्रयोग ज्योतिषी के लिए किया गया है।[5] स्वयं सायणाचार्य ने **'ऋग्वेदभाष्यभूमिका'** में लिखा है कि ज्योतिष का मुख्य प्रयोजन अनुष्ठेय यज्ञ के उचित काल का संशोधन है।[6] उदाहरणार्थ ''कृत्तिका नक्षत्र' में अग्नि का आधान करें।[7] कृत्तिका नक्षत्र में अग्नि का आधान ज्योतिष संबंधी ज्ञान के बिना संभव नहीं। इसी प्रकार से एकाष्टका में दीक्षा को प्राप्त होवे, फाल्गुण पौर्णमास में दीक्षित होवे[8] इत्यादि अनेक श्रुति वचन मिलते हैं।

ज्योतिष के सम्यक् ज्ञान के बिना इन श्रुतिवाक्यों का समुचित पालन नहीं किया जा सकता अत: वेद के अध्ययन के साथ-साथ ज्योतिष को वेदांग बतलाकर ऋषियों ने ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन पर पर्याप्त बल दिया।

---

1. सिद्धांत संहिता होरा रूप स्कन्ध त्रयात्मकम्।
   वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिः शास्त्रमकल्मषम्।। इति नारदीयम् (शब्दकल्पद्रुम) पृ. 550
2. छंद: पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
   ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तः श्रोत्रमुच्यते।।–पाणिनी शिक्षा, श्लोक/41
   मुहूर्त चिन्तामणि मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी सन् 1972 (पृ. 7)
3. तस्मादिदं कालविधान शास्त्रं, यो ज्योतिष वेद स वेद यज्ञम्–फ. ज्यो. वि. वृ. समीक्षा, पृ. 4
4. यथा शिखा मयूराणा नागानां मणयो यथा तद्वद्वेदांगशास्त्राणां ज्योतिष मूर्धनि संस्थितम् –इति वेदांग ज्योतिषम् 'शब्दकल्पद्रुम' (पृ. 550)
5. शब्द कल्पद्रुम, पृ. 655
6. वेद व्रतमासिक ''ज्योतिषविवेक (पृ. 4) गुरुकुल सिंहपुरा, रोहतक सन् 1976
7. कृत्तिकास्वाग्निमादधीत–तैत्तरीय ब्राह्मण 1/1/2/1
8. एकाष्टकायां दीक्षेरन् फाल्गुनीपूर्णमासे दीक्षेरन्–तैत्तरीय संहिता 6/4/8/1

ज्योतिष के ज्ञान की सबसे अधिक आवश्यकता कृषकों को पड़ती है क्योंकि वह जानना चाहता है कि पानी कब बरसेगा, खेतों में बीज कब बोना चाहिए? जमाना कैसा जाएगा? फसलें कैसी होंगी। वगैरा-वगैरा। हिन्दू षोडश-संस्कार एवं यज्ञ-हवन, निश्चित काल, मुहूर्त में ही किए जाते हैं। श्रुति कहती है।

ते असुरा अयज्ञा अदक्षिणा अनक्षत्राः।
यच्च किंचित् कुर्वत सतां कृत्यामेवाऽकुर्वत॥ 1 ॥[1]

अर्थात् वे यज्ञ जो करणीय हैं, वे कालानुसार (निश्चित मुहूर्त पर) न करने से देवरहित, दक्षिणा रहित, नक्षत्ररहित हो जाते हैं।

ज्योतिष से अत्यन्त स्वार्थिक अर्थ में अच् (अ) प्रत्यय-लगकर ज्योतिष शब्द निष्पन्न हुआ है। अच् प्रत्यय लगने से यह ज्योतिष शब्द पुल्लिंग में प्रयुक्त होता है।

द्युत्+इस् (इसिन्)
ज्युत+इस् =ज्योत्+इस्
ज्योतिस्

मेदिनी कोष के अनुसार "ज्योतिष" सकारान्त नपुंसक लिंग में 'नक्षत्र' अर्थ में तथा पुल्लिंग में अग्नि और प्रकाश अर्थ में प्रयुक्त होता है।[2]

'ज्योतस्' में 'इनि' और 'ठक्' प्रत्यय लगा करके ज्योतिषी और ज्योतिषिकः तीनों शब्द व्युत्पन्न होते हैं। जो ज्योतिष शास्त्र का नियमित रूप से अध्ययन करें अथवा ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता हो वह ज्योतिषी, ज्योतिषिक, ज्यौतिषिक, ज्योतिष शास्त्रज्ञ तथा दैवज्ञ कहलाता है।[3]

शब्दकल्पद्रुम के अनुसार 'ज्योतिष' ज्योतिर्मय सूर्यादि ग्रहों की गति इत्यादि को लेकर लिखा गया वेदांग शास्त्र विशेष है। अमरकोष की टीका में व्याकरणाचार्य भरत ने ग्रहों की गणना, ग्रहण इत्यादि प्रतिपाद्य विषयों वाले शास्त्र को ज्योतिष कहा है।[4]

हलायुधकोष में ज्योतिष के लिए सांवत्सर, गणक, दैवज्ञ, ज्योतिषिक, ज्यौतिषिक ज्योतिषी, ज्यौतिषी, मौहूर्तिक सांवत्सरिक शब्दों का प्रयोग हुआ है।[5]

वाचस्पत्यम् के अनुसार सूर्यादि ग्रहों की गति को जानने वाले तथा ज्योतिषशास्त्र का विधिपूर्वक अध्ययन करने वाले व्यक्ति को 'ज्योतिर्विद्' कहा गया है।[6]

---

1. फलित ज्योतिष विवेचनात्मक बृहत्पाराशर समीक्षा पृ. 4
2. ज्योतिषग्नौ दिवाकरे 'पुमान्नपुसंक-दृष्टौ स्यान्नक्षत्र प्रकाशयोः इति मेदिनीकोष-1929, पृ. सं. 536
3. हलायुध कोश हिन्दी समिति लखनऊ सन् 1967 (पृ. सं. 321)
4. शब्द कल्पद्रुम खण्ड-2 मोतीलाल बनारसीदास सन् 1961 पृ. स. 550
5. हलायुध कोश, हिन्दी समिति लखनऊ 1966 पृ. सं. 703
6. वाचस्पत्यम् भाग 4, चौखम्बा सीरिज वाराणसी सन् 1962 पृ. 3162

ज्योतिष की प्राचीनता

ज्योतिष शास्त्र कितना प्राचीन है, इसकी कोई निश्चित तिथि या सीमा स्थापित नहीं की जा सकती। यह बात निश्चित है कि जितना प्राचीन वेद है उतना ही प्राचीन ज्योतिष शास्त्र है। यद्यपि वेद कोई ज्योतिष की पुस्तक नहीं है तथापि ज्योतिष-सम्बन्धी अनेक गूढ़ तथ्यों व गणनाओं के बारे में विद्वानों में मत ऐक्यता का नितान्त अभाव है।

तारों का उदय-अस्त प्राचीन (वैदिक) काल में भी देखा जाता था। तैत्तिरीय ब्राह्मण एवं शतपथ ब्राह्मण में ऐसे अनेक संकेत व सूचनाएं मिलती हैं। लोकमान्य तिलक ने अपनी पुस्तक **'ओरायन'** के पृष्ठ 18 पर ऋग्वेद का काल ईसा पूर्व 4500 हजार वर्ष बताया।[1] वहीं पं. रघुनन्दन शर्मा ने अपनी पुस्तक **'वैदिक-सम्पत्ति'** में मृगशिरा में हुए इसी वसन्तसम्पात को लेकर, तिलक महोदय की त्रुटियों का आकलन करते हुए अकाट्य तर्क के साथ प्रमाणपूर्वक कहा है कि ऋग्वेद काल ईसा से कम 22,000 वर्ष प्राचीन है।[2]

भारतीय ज्योतिर्गणित एवं वेध-सिद्धांतों का क्रमबद्ध सबसे प्राचीन एवं प्रमाणिक परिचय हमें **'वेदांग ज्योतिष'** नामक ग्रन्थ में मिलता है।[3] यह ग्रन्थ सम्भवत: ईसापूर्व 1200 का है। तब से लेकर अब तक ज्योतिष शास्त्र की अक्षुण्णता कायम है।[4]

वस्तुत: फिर वे यज्ञ ही नहीं कहलाते। इसलिए जो कुछ भी यज्ञादि (धार्मिक) कृत्य करना हो, उसे निर्दिष्ट कालानुसार ही करना चाहिए। कहा भी है–**यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञान्**[5]

अतीतानागते काले, दानहोमजपादिकम्।
उषरे वापितं बीजं, तद्वद्भवति निष्फलम् ॥2॥[6]

इस प्रकार से यह सिद्ध है कि ज्योतिष के बिना कालज्ञान का अभाव रहता है। कालज्ञान के बिना समस्त श्रौत्, स्मार्त कर्म, गर्भाधान, जातकर्म, यज्ञोपवीत, विवाह इत्यादि संस्कार ऊसर जमीन में बोए गए बीज की भांति निष्फल हो जाते हैं। तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण के ज्ञान के बिना तालाब, कुंआ, बगीचा, देवालय-मन्दिर, श्राद्ध, पितृकर्म, व्रत-अनुष्ठान, व्यापार, गृहप्रवेश, प्रतिष्ठा इत्यादि कार्य नहीं हो सकते। अत: सभी वैदिक एवं लौकिक व्यवहारों की सार्थकता, सफलता के लिए ज्योतिष का ज्ञान अनिवार्य है।

---

1. भारतीय ज्योतिष का इतिहास, डॉ गोरखप्रसाद (प्रकाशन 1974) उत्तरप्रदेश शासन लखनऊ, पृ. 10
2. वैदिक सम्पति प. रघुनन्दन शर्मा (प्रकाशन 1930) सेठ शूरजी वल्लभ प्रकाशन, कच्छ केसल, बम्बई पृ. 90
3. **छन्द: पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोथ पठ्यते, ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते। शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्, तस्मात्सांगमधीत्यैव, ब्रह्म लोके महीयते॥**–पाणिनीय शिक्षा, श्लोक 41-42
4. Vedic Chronology and Vedanga Jyotisa&(Pub. 1925) Messrs Tilak Bross, Gaikwar Wada, POONA CITY, page-3
5. ज्योतिर्निबन्ध श्री शिवराज (पु. 1919), आनन्दाश्रम मुद्रणालय पूना, पृ.1
6. ज्योतिर्निबन्ध श्लोक (2) पृष्ठ 2

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि, विवादस्तेषु केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं, चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ ।।3।।[1]

संसार में जितने भी शास्त्र हैं वे केवल विवाद (शास्त्रार्थ) के विषय हैं, अप्रत्यक्ष हैं, परन्तु ज्योतिष विज्ञान ही प्रत्यक्ष शास्त्र है, जिसकी साक्षी सूर्य और चन्द्रमा घूम-घूम कर दे रहे हैं। सूर्य, चन्द्र-ग्रहण, प्रत्येक दिन का सूर्योदय, सूर्यास्त चन्द्रोदय, चन्द्रास्त, ग्रहों की शृंगोन्नति, वेध, गति, उदय-अस्त इस शास्त्र की सत्यता एवं सार्थकता के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य, सर्वस्योक्तं शुभाशुभम्।
ज्योतिर्ज्ञान तु यो वेद, स याति परमां गतिम् ।।4।।[2]

ज्योतिष चक्र ने संसार के लिए शुभ व अशुभ सारे काल बतलाए हैं। जो ज्योतिष के दिव्य ज्ञान को जानता है व जन्म-मरण से मुक्त होकर परमगति (स्वर्गलोक) को प्राप्त करता है। संसार में ज्ञान-विज्ञान की जितनी भी विद्याएं हैं, वह मनुष्य को ईश्वर की ओर नहीं मोड़ती, उसे परमगति का आश्वासन नहीं देती, पर ज्योतिष अपने अध्येता को परमगति (मोक्ष) प्राप्ति की गारन्टी देता है। यह क्या कम महत्त्व की बात है।

अर्थार्जने सहाय: पुरुषाणामापदर्णवे पोत:।
यात्रा समये मन्त्री जातकमपहाय नास्त्यपर:।।5।।[3]

ज्योतिष एक ऐसा दिलचस्प विज्ञान है जो कि जीवन की अनजान राहों में मित्र व शुभचिन्तकों की लम्बी शृंखला खड़ी कर देता है। इसके अध्येता को समाज व राष्ट्र में भारी धन, यश व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

जातक का ज्योतिष शास्त्र को छोड़कर कोई सच्चा नहीं है। क्योंकि द्रव्योपार्जन में यह सहायता देता है, आपत्ति रूपी समुद्र में नौका का कार्य करता है तथा यात्रा काल में सुहृदय मित्र की तरह सही सम्मति देता है। जन सम्पर्क बनाता है। स्वयं वराहमिहिर कहते हैं कि देशकाल परिस्थिति को जानने वाला दैवज्ञ जो काम करता है, वह हजार हाथी और चार हजार घोड़े भी नहीं कर सकते।[4] यदि ज्योतिष न हो तो मुहूर्त, तिथि, नक्षत्र, ऋतु, अयन आदि सब विषय उलटपुलट हो जाए।[5] बृहत्संहिता की भूमिका में ही वराहमिहिर कहते हैं कि **दीपहीन रात्रि और सूर्य हीन आकाश की तरह ज्योतिषी से हीन राजा शोभित नहीं होता, वह जीवन के दुर्गम मार्ग में अंधे की तरह भटकता रहता है।**[1] **अत: जय, यश, श्री, भोग और मंगल की इच्छा रखने वाले राजपुरुष को सदैव विद्वान व श्रेष्ठ ज्योतिषी का अपने पास रखना चाहिए।**[2]

---

1. जातकसार दीप-चन्द्रशेखरन् (पृष्ठ 5) मद्रास गवर्मेंट ओरियण्टल सीरिज, मद्रास
2. शब्दकल्पद्रुम, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ 550
4. सुगम ज्योतिष-प. देवीदत्त जोशी (प्रकाशन 1992) मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, पृष्ठ 17
4. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/37
5. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/25

ज्योतिष शास्त्र के साथ एक विडम्बना यह है कि यह शास्त्र जितना अधिक प्रचलित व प्रसिद्ध होता चला गया, अनधिकारी लोगों की संगत से यह शास्त्र उतना ही अधिक विवादास्पद होता चला गया। अनेक नास्तिकों, अनीश्वर वादी सज्जनों एवं कुतर्की विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से ज्योतिष विद्या पर क्रूरतम कठोर प्रहार किए। सत्य की निरन्तर खोज में एवं अनवरत अनुसंधान परीक्षणों में संलग्न भारतीय ऋषियों ने अपने आपको तिल-तिल जलाकर, अपने प्राणों की आहुति देकर श्रुति परम्परा से इस दिव्य विद्या को जीवित रखा।

ज्योतिष वस्तुतः सूचनाओं और सम्भावनाओं का शास्त्र है। इसके उपयोग व महत्त्व को सही ढंग से समझने पर मानव जीवन और अधिक सफल व सार्थक हो सकता है। मान लीजिए ज्योतिष गणना के अनुसार अष्टमी की शाम को आठ बजे समुद्र में ज्वारभाटा आएगा। आपको पता चला तो आप अपना जहाज समुद्र में नहीं उतारेंगे और करोड़ों रुपयों के जान व माल के नुकसान से बच जाएंगे यदि आपको पता नहीं है, तो बीच रास्ते में आप मारे जाएंगे। ज्योतिषी कहता है कि आज अमुक योग के कारण वर्षा होगी तो वर्षा तो होगी पर आपको पता है तो आप छाता तान कर चलेंगे, दुनिया अचानक वर्षा के कारण तकलीफ में आ सकती है पर आपकी सावधानी से आप भीगेंगे नहीं।

ज्योतिष का उपयोग मनुष्य के दैनिक जीवन व दिनचर्या से जुड़ा हुआ है। मारक योग में ऑपरेशन या तेज गति का वाहन न चलाकर व्यक्ति दुर्घटना से बच सकता है। ज्योतिष अंधेरे में प्रकाश की तरह मनुष्य की सहायता करता है। ज्योतिष संकेत देता है कि समय खराब है सोने में हाथ डालेंगे, मिट्टी हो जाएगा, समय शुभ है तो मिट्टी में हाथ डालोगे, सोना हो जाएगी। मौसम विज्ञान की चेतावनी की तरह ज्योतिष का उपयोग किया जाना चाहिए। क्योंकि घड़ी की सुई के साथ-साथ चल रहा मानव जीवन का प्रत्येक पल ज्योतिष से जुड़ा हुआ है। यह तो मानव मस्तिष्क एवं बुद्धि की विलक्षणता है कि आप किस विज्ञान से क्या व कितना ग्रहण कर पाते हैं।

सच तो यह है कठिनाई के क्षणों मे ज्योतिष विद्या मानवीय सभ्यता के लिए अमृत-तुल्य उपादेय है। घोर कठिनाई के क्षणों में, विपत्ति की घड़ियों में, या ऐसे समय में जब व्यक्ति के पुरुषार्थ एवं भौतिक संसाधनों का जोर नहीं चलता, तब व्यक्ति सीधा मन्दिर-मस्जिद या गिरजाघरों में, या फिर सीधा किसी ज्योतिषी की शरण में जाकर अपने दुःख दर्द की फरियाद करता है, प्रार्थनाएं करता है। मन्दिर-मस्जिद और गिरजाघरों में पड़े निर्जीव पत्थर तो बोलते नहीं, पर ईश्वर की वाणी ज्योतिषी के मुखारविन्द से प्रस्फुटित होती है। ऐसे में इष्ट सिद्ध ज्योतिषी की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है। भारत में विद्वान ज्योतिषी हो और ब्राह्मण हो तो लोग उसे ईश्वर तुल्य सम्मान देते हैं। भविष्यवक्ता होना अलग बात है तथा ज्योतिषी होना दूसरी बात है। भारत में भविष्यवक्ता को उतना सम्मान नहीं मिलता, जितना शास्त्र ज्ञाता ज्योतिष

---

1. अप्रदीपा यथा रात्रिरनादित्यां यथा नभः।
   तथाऽसांवत्सरो राजा, भ्रमत्यन्ध इवाध्वनि।।-बृहत्संहिता, अ.1/24
2. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/26

शास्त्र के अध्येता को। स्वयं वराहमिहिर ने कहा है–

म्लेच्छा हि यवनास्तेषु, सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम्।
ऋषिवत्तेऽपि पूज्यन्ते, किं पुनर्दैवविद् द्विजः॥1॥[1]

अर्थात् व्यक्ति कितना भी पतित हो, शूद्र-म्लेच्छ चाहे यवन ही क्यों न हो। इस ज्योतिषशास्त्र के सम्यक् (भली-भांति) अध्ययन से वह ऋषि के समान पूजनीय हो जाता है। इस दिव्य-ज्ञान की गंगा स्नान से व्यक्ति पवित्र व पूजनीय हो जाता है। फिर उस ब्राह्मण की क्या बात? जो ब्राह्मण भी हो, दैवज्ञ भी हो, इस दिव्य विद्या को भी जानता हो, उसकी तो अग्रपूजा निश्चय ही होती है।

इस श्लोक में 'सम्यक्' शब्द पर विशेष जोर दिया गया है। सम्यक् ज्ञान गुरु कृपा से ही आता है। पुस्तक के माध्यम से आप गुरु के विचारों के समीप तो जरूर पहुंचते हैं पर अन्ततोगत्वा वह किताबी ज्ञान ही कहलाता है। भारतीय वाङ्मय में गुरु का बड़ा महत्त्व है। अतः ज्योतिष जैसी गूढ़ विद्या गुरुमुख से ही ग्रहण करनी चाहिए तभी उसमें सिद्धहस्तता प्राप्त होती है।

कई लोग ज्योतिष को भाग्यवाद या जड़वाद से जोड़ने की कुचेष्टा भी करते हैं परन्तु अब सिद्ध हो चुका है कि ज्योतिष पुरुषार्थवाद की युक्ति संगत व्याख्या है। पुरुषार्थवाद की सीमाओं को ठीक से समझना ही ज्योतिर्विज्ञान की उपादेयता है। ज्योतिर्विज्ञान पुरुषार्थ का शत्रु नहीं, यह व्यक्ति को पुरुषार्थ करने से रोकता भी नहीं, अपितु सही समय (काल) में सही पुरुषार्थ करने की प्रेरणा देता है।[2]

मेरे निजी शब्दों में **'ज्योतिष विद्या वह दिव्य विज्ञान है जो भूत, भविष्य तथा वर्तमान तीनों कालों को जानने समझने की कला सिखलाता है। प्रकृति के गूढ़ रहस्यों को उद्घाटित करता है तथा इस देवविद्या के माध्यम से हम मानवीय प्राणी के शुभाशुभ भविष्य को संवारने की क्षमता भी प्राप्त कर सकते हैं।'**

अतः इस शास्त्र की उपादेयता एवं महत्त्व गूंगे के गुड़ की तरह से मिठास परिपूर्ण परन्तु शब्दों से अनिर्वचनीय है। वेदव्यास अपनी वाणी से ज्योतिषशास्त्र का महत्त्व प्रकट करते हुए कहते हैं कि काष्ठ (लकड़ी) का बना सिंह एवं कागज पर सम्राट का चित्र आकर्षक होते हुए भी निर्जीव होता है। ठीक उसी प्रकार से वेदों का अध्ययन कर लेने पर भी ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन किए बिना ब्राह्मण निर्वीर्य (निष्प्राण) कहलाता है।[3]

❑❑❑

---

1. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/30
2. वक्री ग्रह–(प्रकाशन–1991) डायमंड प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 140
3. यथा काष्ठमयः सिंहो यथा चित्रमयो नृपः।
   तथा वेदावधीतोऽपिज्योतिषशास्त्रं बिना द्विजः॥–वेद व्यास, ज्योतिर्निबन्ध 20/ पृ. 2

लग्न प्रशंसा

लग्नं देव: प्रभु: स्वामी लग्नं ज्योतिः परं मतम्।
लग्नं दीपो महान् लोके, लग्नं तत्वं दिशन् गुरुः॥

त्रैलोक्यप्रकाश में बताया है कि लग्न ही देवता है। लग्न ही समर्थ स्वामी, परमज्योति है। लग्न से बड़ा दीपक संसार में कोई नहीं है, क्योंकि गुरु रूप ज्योतिष के ऋषियों का यही आदेश है।

न तिथिर्न च नक्षत्रं, न योगो नैन्दवं बलम्।
लग्नमेव प्रशंसन्ति, गर्गनारदकश्यपा:॥5॥

आचार्य लल्ल ने बताया है कि गर्ग, नारद, कश्यप ऋषियों ने तिथि-नक्षत्र व चन्द्र बल को श्रेष्ठ न मानकर, केवल लग्न बल की ही प्रशंसा की है॥5॥

इन्दु: सर्वत्र बीजाम्भो, लग्नं च कुसुमप्रभम्।
फलेन सदृशो अंशश्च भावाः स्वादुफलं स्मृतम्॥7॥

भुवन दीपक नामक ग्रंथ में बताया है कि समस्त कार्यों में चन्द्रमा बीज सदृश है। लग्न पुष्प के समान, नवमांश फल के तुल्य और द्वादश भाव स्वाद के समान होता है।

❑❑❑

लग्न का महत्त्व

यथा तनुत्पादनमन्तरैव पराङ्ग सम्पादनपत्र मिथ्या।।
विना विलग्नं परभावसिद्धिस्ततः प्रवक्ष्ये हि विलंग्नसिद्धिम्।।

जिस प्रकार स्वयं के शरीर की उपेक्षा करके अन्य पराए अंगों (दूसरे लोगों पर) पर ध्यान देना दोषपूर्ण है। (उचित नहीं है) ठीक उसी प्रकार से लग्न भाव की प्रधानता व महत्त्व को ठीक से समझे बिना अन्य भावों (षोडश वर्ग) को महत्त्व देना व्यर्थ है।

लग्नवीर्यं विना यत्र, यत्कर्म क्रियते बुधैः।
तत्फलं विलयं याति, ग्रीष्मे कुसरितो यथा।।8।।

ज्योतिर्विदाभरण' में कहा है कि जिस कार्य का आरम्भ निर्बल लग्न में किया जाता है। वह कार्य नष्ट होता है, जैसे गरमी के समय में बरसाती नदियां विलीन हो जाती हैं।।8।।

आचार्य रेणुक ने बताया है कि जिस प्रकार जन्म लग्न से शुभ व अशुभ फल की प्राप्ति होती है, उसी प्रकार समस्त कार्यों में लग्न के बली होने पर कार्य की सिद्धि होती है। अतः समस्त कामों में बली लग्न का ही विचार करके आदेश देना चाहिए।।9।।

आदौ हि सम्पूर्णफलप्रदं स्यान्मध्ये पुनर्मध्यफलं विचिंत्यम्।
अतीव तुच्छं फलमस्य चान्ते विनिश्चयोऽयं विदुषामभीष्टः।।10।।

आचार्य श्रीपति जी ने बताया है कि लग्न के प्रारम्भ में संपूर्ण फल की, मध्यकाल में मध्यम फल की और लग्नान्त में अल्प फल होता है, यह विद्वानों का निर्णय है।।10।।

❑❑❑

जनश्रुतियों में प्रचलित प्रत्येक लग्न की चारित्रिक विशेषताएं

राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में जनश्रुतियों के आधार पर लावणी में प्रस्तुत यह गीत जब मैंने पहली बार समदंडी ग्राम के राजज्योतिषी पं. मगदत्त जी व्यास के मुख से राग व लय के साथ सुना तो मन्त्र-मुग्ध रह गया। इस गीत में द्वादश लग्नों में जन्में मनुष्य का जन्मगत स्वभाव, चरित्र, साररूप में संकलित है। जो कि निरन्तर अनुसंधान, अनुभव एवं अकाट्य सत्य के काफी नजदीक है। प्रबुद्ध पाठकों के ज्ञानार्जन एवं संग्रह हेतु इसे ज्यों का त्यों यहां दिया जा रहा है।

ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
जिसका जन्म हो ***मेषलग्न*** में, क्रोध युक्त और महाविकट।
सभी कुटुम्ब की करे पालना, लाल नेत्र रहते हर दम।
करे गुरु की सेवा सदा नर, जिसका होता ***वृषभलग्न***।
तरह-तरह के शाल-दुशाला, पहने कण्ठ में आभुषण
मिथुनलग्न के चतुर सदा नर, नहीं किसी से डरता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
कर्कलग्न के देखे सदा नर, उनके रहती बीमारी।
सिंहलग्न के महापराक्रमी, करे नाग की असवारी।
कन्यालग्न के होत नपुन्सक, रोवे मात और महतारी।
तुलालग्न के तस्कर बालक, खेले जुआं और अपनी नारी।
वृश्चिकलग्न के दुष्ट पदार्थ, आप अकेला खाता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत् वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
बुद्धिमान और गुणी सुखी नर, जिसका होता धनु लग्न।
मकरलग्न मन्द बुदि के, अपने धुन में वो भी मगन।

कुम्भलग्न के पूत बडे अवधूत, रात-दिन करते रहते भजन।
मीनलग्न के सुत का जीना, मृत्यु लोक में बड़ा कठिन।
नहीं किसी का दोष, कर्मफल अपने आप बतलाता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥

❑❑❑

लग्न किसे कहते हैं? लग्न क्या है? लग्न का महत्त्व

हिन्दी में 'लग्न' अंग्रेजी में जिसे ऐसेडेन्ट (Ascendent) कहते हैं। इसके पर्यायवाची शब्दों में देह, तनु, कल्प, उदय, आय, जन्म, विलग्न, होरा, अंग, प्रथम, वपु इत्यादि प्रमुख हैं। ज्योतिष की भाषा में एक "समय" विशेष की परिमापन का नाप है जो लगभग दो घंटे का होता है। ज्योतिष की भाषा में जिसे जन्मकुण्डली कहते हैं वह वस्तुतः 'लग्न' कुण्डली ही होती है। लग्न कुण्डली को जन्मांग भी कहते है। क्योंकि "लग्न" का गणितागणित स्पष्टीकरण जन्म समय के आधार पर ही किया जाता है।

लग्न कुण्डली अभीष्ट समय में आकाश का मानचित्र है। इसकी स्पष्ट धारणा आप अंग्रेजी कुण्डली को सामने रखकर बनाएं तो साफ हो जाएगी क्योंकि अंग्रेजी में इसे हम Map of Heaven कहते हैं। बीच में पृथ्वी एवं उसके ऊपर वृत्ताकार घूमती हुई राशिमाला को विदेशों में Birth-Horoscope कहते हैं। इसलिए पारम्परिक ज्योतिष वृत्ताकार कुण्डली को ही प्राथमिकता देते हैं। परन्तु भारत में इसका प्रचलन नगण्य है। वस्तुतः आकाश में दीखने वाली बारह
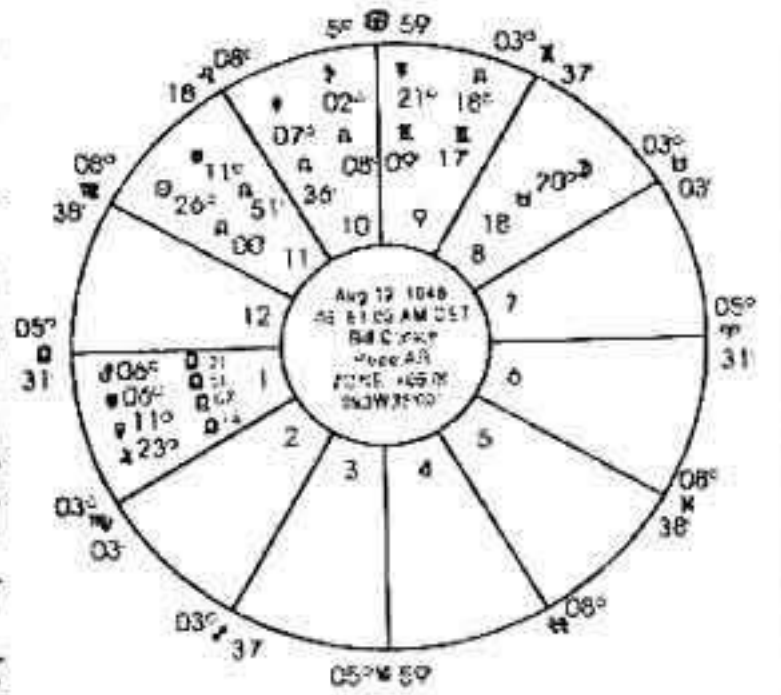
राशियां ही बारह लग्न हैं। जन्म कुण्डली के प्रथम भाव (पहले) घर को ही लग्न भाव, लग्न स्थान कहा जाता है। दिन और रात में 60 घटी होती है। 60 घटी में बारह लग्न होते हैं। 60 में बारह का भाग देने पर 2½ घटी का एक लग्न कहलाता है। यह लग्न कुण्डली ही जन्मपत्रिका का मुख्य आधार है जो खगोलस्थ ग्रहों के द्वारा निर्मित होती है। यही ग्रह केन्द्र बिन्दु हैं जहां से गणित व फलित ज्योतिष सूत्रों की स्थापना प्रारम्भ होती है। उपर्युक्त खाली जन्मकुण्डली है। इसके 12 विभाजन ही "द्वादश घर" या
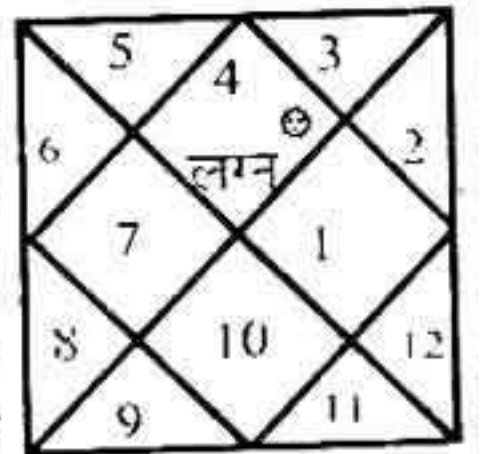
"बारह भाव" कहलाते हैं। इसका ऊपरी मध्य घर जहां सूर्य दिखलाई देता है पहला घर माना जाता है। यह घर जन्मकुण्डली की सीधा पूर्व है। चूंकि सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है। इसलिए सूर्योदय के समय जन्म लेने वाले व्यक्ति की जन्मकुण्डली में सूर्य उसी घर में होगा जिसे "लग्न" कहते हैं। चूंकि पृथ्वी अपनी धुरी पर एक चक्र 24 घंटों में पूर्ण कर लेती है, इसलिए सूर्य प्रत्येक दो घंटों में एक घर से दूसरे घर में जाता हुआ दिखलाई देगा। दूसरे अर्थों में पाठक जन्मकुण्डली को देखकर बता सकता है कि अमुक जन्मकुण्डली वाले व्यक्ति के जन्म सूर्य के किन दो घंटों के समय में हुआ था।

12
10
1 के.
11 लग्न
9
चं.
शु. 2
8
3 सू. बू.
5
7 रा.
4 गु.
श.
6

वृष / मिथुन च.शु. सु. बु.	प्रथम स्थान मेष केतु	मीन / कुम्भ
कर्क. गुरु	बंगाल	मकर
सिंह शनि / कन्या मं.	तुला राहु	धनु / वृश्चिक लग्न

मीन	मेष के.	वृष चं. शु.	मिथुन सु. बु.
कुम्भ	चेन्नई		कर्क गु.
मकर			सिंह श.
धनु	वृश्चिक लग्न	तुला रा.	कन्या मं.

चन्द्र 3 शुक्र 5 सूर्य 5 बुध 6	प्रथम स्थान के. 2	
गुरु 9	बंगाल	
श. 11 मं. 14	रा. 16	लग्न 17
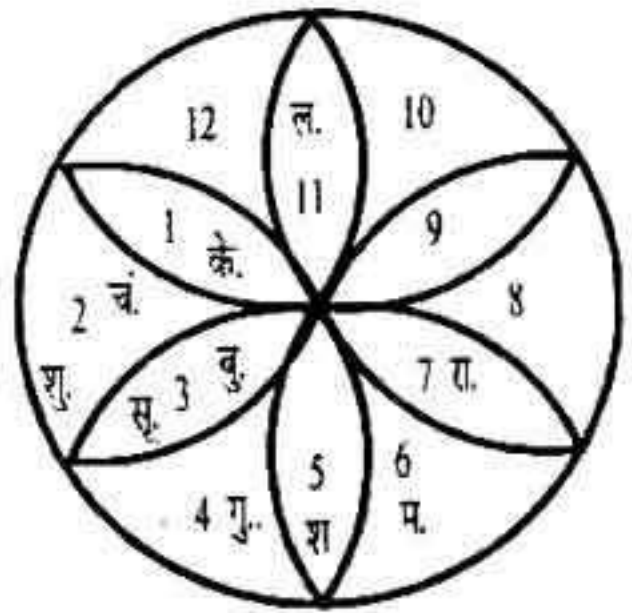
क्रमांक	लग्न	दीर्घादि	घटी पल	अवधि घ. मि.	दिशा
1.	मेष	ह्रस्व	4.00	1.36	पूर्व
2.	वृषभ	ह्रस्व	4.30	1.48	दक्षिण
3.	मिथुन	सम	5.00	2.00	पश्चिम
4.	कर्क	सम	5.30	2.12	उत्तर
5.	सिंह	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
6.	कन्या	दीर्घ	5.30	2.11	दक्षिण
7.	तुला	दीर्घ	5.30	2.12	पश्चिम
8.	वृश्चिक	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
9.	धनु	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
10.	मकर	सम	5.00	2.00	दक्षिण
11.	कुम्भ	लघु	4.30	1.48	पश्चिम
12.	मीन	लघु	4.00	1.36	उत्तर

सही व शुद्ध लग्न साधन के लिए तीन वस्तुओं की जानकारी आवश्यक है। **1. जन्म तारीख, 2. जन्म समय 3. जन्म स्थान।**

विभिन्न पंचांगों में आजकल दैनिक ग्रह स्पष्ट के साथ-साथ, भिन्न-भिन्न देशों की दैनिक लग्न सारणियां, अंग्रेजी तारीख एवं भारतीय स्टेण्डर्ड समय में दी हुई होती हैं। जिन्हें देखकर आसानी से अभीष्ट तारीख के दैनिक लग्न की स्थापना की जा सकती है।

लग्न का महत्त्व

लग्न वह प्रारम्भ बिन्दु है जहां से जन्मपत्रिका, निर्माण की रचना प्रारम्भ होती है। इसलिए शास्त्रकारों ने "लग्नं देहो वर्ग षट्कोगांनि" लग्न कुण्डली को जातक का शरीर माना है तथा जन्मपत्रिका के अन्य षोडश वर्ग उसके सोलह अंग कहे गए हैं।

जातक ग्रन्थों के अनुसार–

यथा तनूत्वादनमन्तरैव
परागसम्पादनम् अत्र मिथ्या।
बिना विलग्नं परभाव सिद्धिः
ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्न सिद्धिम्॥

जैसे वृक्ष के बिना फल-पुष्प-पत्र एवं पराग प्रक्रियाओं का कल्पना व्यर्थ है। उसी प्रकार लग्न साधन के बिना अन्य भावों की कल्पना एवं फल कथन प्रक्रिया भी व्यर्थ है। अतः जन्मपत्रिका निर्माण में "बीजरूप लग्न" ही प्रधान है तभी कहा गया है कि–**"लग्न बलं सर्वबलेषु प्रधानम्"**

लग्न ही व्यक्ति का चेहरा
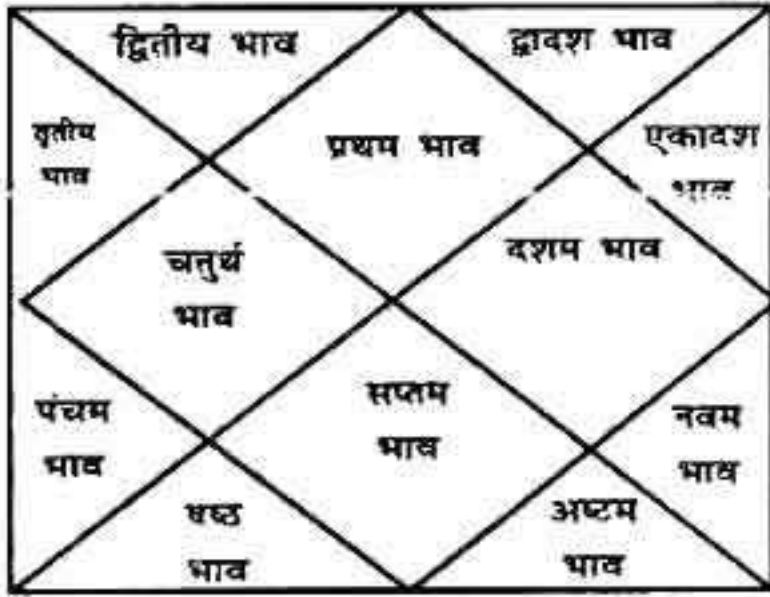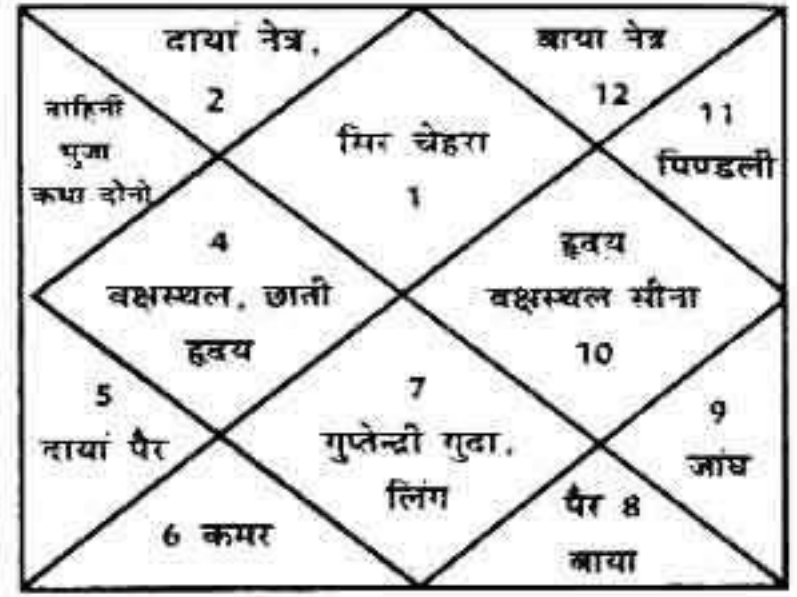
फलित ज्योतिष में कालपुरुष के शरीर के विभिन्न अंगों पर राशियों की कल्पना की गई है। लग्न कुण्डली में भी कालपुरुष के इन अंगों को विभिन्न भागों में विभाजित किया गया है।

द्रव्यं
व्यय
पराक्रमं
देहं
लाभ
सुख
राज्य
सुतौ
कलत्र
भाग्य
शत्रु
वृत्ति
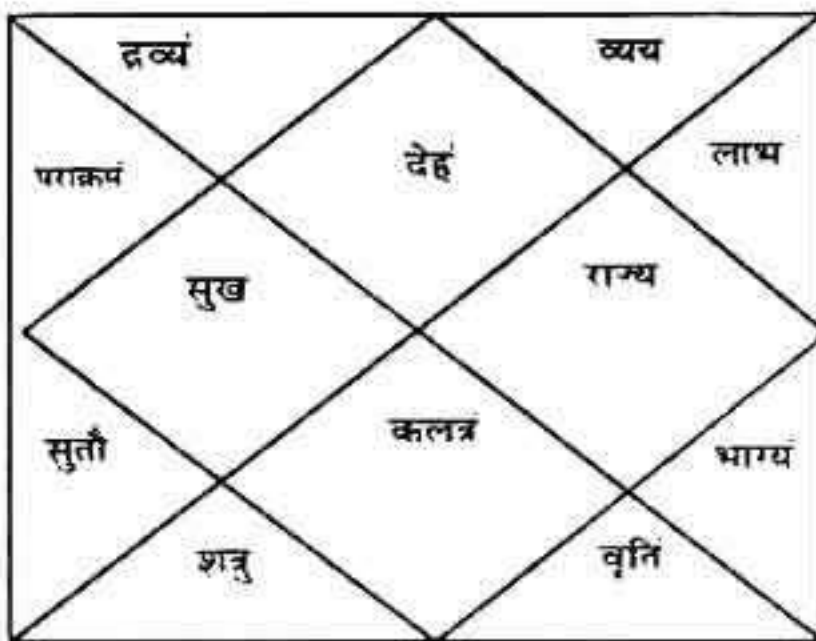
जिसमें लग्न ही व्यक्ति का चेहरा है। जैसा लग्न होगा वैसा ही व्यक्ति का चेहरा होगा। इस पर हमारी पुस्तक **"ज्योतिष और आकृति विज्ञान"** पढ़िए। लग्न पर जिन-जिन ग्रहों का प्रभाव होगा व्यक्ति का चेहरा व स्वभाव भी उन-उन ग्रहों के स्वभाव व चरित्र से मिलता-जुलता होगा। लग्न कुण्डली में कालपुरुष का जो भाव विकृत एवं पाप पीड़ित होगा। सम्बन्धित मनुष्य का वही अंग विशेष रूप से विकृत होगा, यह निश्चित है। अतः अकेले लग्न कुण्डली पर यदि व्यक्ति ध्यान केन्द्रित कर फलादेश करना शुरू कर दे तो वह फलित ज्योतिष का सिद्धहस्त चैम्पियन बन जाऊंगा।

जन्मकुण्डली का प्रथम भाव ही लग्न कहलाता है। इसे पहला घर भी कह सकते हैं। इसी प्रकार दाएं से चलते हुए कुण्डली के 12 कोष्ठक, बारह भाव या बारह घर कहलाते हैं। चाहे इस भाव में कोई भी अंक या राशि नम्बर क्यों न हो, उसमें कोई अन्तर नहीं पड़ता। अब किस भाव पर घर में क्या देखा जाता है इस पर जातक ग्रन्थों काफी चिन्तन किया गया है। एक प्रसिद्ध श्लोक इस प्रकार है।

देहं द्रव्यं पराक्रमः सुख, सुतौ शत्रुकलत्रं वृत्तिः।
भाग्यं राज्यं पदे क्रमेण, गदिता लाभ-व्यये लग्नतः॥

अर्थात् पहले भाव में देह-शरीर सुख, दूसरे में धन, तीसरे में पराक्रम, जन-सम्पर्क, भाई-बहन, चौथे में सुख, नौकर, माता, पांचवें में सन्तान एवं विद्या, छठे में शत्रु व रोग, सातवें में पत्नी, आठवें में आयु, नवमें स्थान में भाग्य, दसवें में राज्य, ग्यारहवें में लाभ एवं बारहवें स्थान में खर्च का चिन्तन करना चाहिए।

❑❑❑

मेषलग्न एक परिचय

1.	लग्नेश, अष्टमेश	–	मंगल
2.	धनेश, सप्तमेश	–	शुक्र
3.	पराक्रमेश, षष्ठेश	–	बुध
4.	पंचमेश	–	सूर्य
5.	भाग्येश, खर्चेश	–	गुरु
6.	राज्येश, लाभेश	–	शनि
7.	सुखेश	–	चंद्रमा
8.	त्रिकोणाधिपति	–	5-चंद्रमा, 9-गुरु
9.	दु:स्थान के स्वामी	–	6-बुध, 8-मंगल, 12-गुरु
10.	केन्द्राधिपति	–	7-शुक्र, 10-शनि
11.	पणफर के स्वामी	–	2-शुक्र, 5-सूर्य, 8-मंगल, 11-शनि
12.	आपोक्लिम	–	3, 6-बुध, 9, 12-गुरु
13.	त्रिकेश	–	6-बुध, 8-मंगल, 12-गुरु
14.	उपचय के स्वामी.	–	3, 6-बुध, 10, 11-शनि
15.	शुभ योग	–	1. सूर्य स्वगृही, 2. गुरु स्वगृही 3. क्षीण चन्द्र, 4. मंगल
16.	अशुभ योग	–	1. शनि, 2. बुध, 3. शनि (मंगल लग्नेश के शत्रु)
17.	निष्फल योग	–	1. गुरु+शुक्र, 2. गुरु+शनि 3. शनि अकेला किसी भी पापग्रह से युत या दुष्ट न हो और शुभ स्थान केन्द्र व त्रिकोण में हो तो शुभ है। तब अच्छे फल करेगा।
18.	सफल योग	–	1. सूर्य+मंगल, 2. सूर्य+चंद्र, 3. सूर्य+शुक्र, 4. सूर्य+शनि, 5. मंगल+गुरु, 6. चंद्र-गुरु
19.	राजयोगकारक	–	1. सूर्य, चंद्र, गुरु

20.	**मारकेश**	–	शुक्र, शुक्र मुख्य मारक है। मारकेश शुक्र से सम्बन्ध रखने पर शनि और बुध भी मारक होते हैं।
21.	**पापफलद**	–	शनि, बुध एवं शुक्र
22.	**शुभयुति**	–	शनि+गुरु
23.	**अशुभयुति**	–	मंगल+बुध

विशेष- मेषलग्न में मंगल अष्टमेश होते हुए भी लग्नेश होने के कारण अशुभ फल नहीं देगा। शुभ फलकारक ग्रहों की दशा में शुभ फल देता है।

❑❑❑

मेषलग्न का ज्योतिषीय विश्लेषण

मन्दसौम्यसिताः पापाः शुभौ गुरुदिवाकरौ।
न शुभं योगमात्रेण प्रभवेच्छनिजीवयोः॥1॥
परन्तु तेन जीवस्य पापत्वमपि सिध्यति।
कविः साक्षान्निहन्ता स्यान्मारकत्वेन लक्षितः॥2॥
मन्दादयो निहन्तारो भवेयुः पापिनो ग्रहाः।
शुभाशुभफलान्येवं ज्ञातव्यानि क्रियोद्भवे॥3॥

मेषलग्न में शनि, बुध और शुक्र अशुभफल देते हैं। गुरु और सूर्य शुभफल देते हैं। शनि गुरु का योग शुभफलदायक नहीं होता। परन्तु उतने से गुरु का अशुभत्व भी सिद्ध होता है। शुक्र मारक स्थान का अधिपति होने के कारण उसके मारक होना चाहिए परन्तु केवल इतने ही कारण पर से वह मारक नहीं बनता। शनि आदि करके पापग्रह मारक बनते हैं। इस प्रकार मेषलग्न में जातक को शुभाशुभ योग होते हैं वह ज्ञाताओं ने जानना चाहिए। मेषलग्न में शनि 10/11 स्थानों का, बुध 3/6 स्थानों का और शुक्र 2/7 स्थानों का अधिपति होता है। 3/6/8/11/12 इन स्थानों के अधिपति अशुभफल देते हैं ऐसा पूर्व में कहा गया है। शुभग्रह केन्द्र में हों तो शुभफल नहीं देते। उसी प्रकार मेषलग्न में लग्न स्वामी मंगल है और बुध, शुक्र तथा शनि उसके मित्र नहीं होते हैं, इस कारण से बुध, शुक्र और शनि अशुभ होते हैं। सूर्य पंचम स्थान का (त्रिकोण स्थान का) स्वामी और गुरु 9/12 स्थानों का स्वामी होता है। सूर्य और गुरु दोनों ही लग्न स्वामी मंगल के मित्र हैं और वे याने मकर और कुम्भ राशियों का स्वामी शनि अर्थात् दोनों शुभयोग कारक स्थानों का मालिक होने से प्रचंड राजयोग कारक होता है। ऐसा अनुभव है। लेकिन इस प्रकार का राजयोग करने वाला शनि किसी भी पापग्रह से युक्त, दृष्ट तथा अशुभ स्थान में नहीं होना चाहिए। वह अकेला और शुभ दृष्ट ऐसा होने पर ही उसके परमोच्च प्रकार के फल मिलते हैं। अन्यथा उसके वैभव कारक फलों में न्यूनता रहती है। शनि अकेला रहने की अपेक्षा अन्य शुभग्रह के साथ यदि संबंध करता हो तब अति उत्कृष्ट फल होते हैं। ''शनिदिवाकरौ'' इस पाठान्तर को यदि स्वीकार किया जाए तो इन दोनों का योग भी शुभ बन सकता है कारण शनि केन्द्राधिपति और त्रिकोणधिपति होता है और सूर्य चतुर्थ केन्द्र का स्वामी है। इसलिए प्रस्तुत श्लोक के अनुसार संबंध नहीं होने पर भी राजयोग होता है। परन्तु

सूर्य शनि का शत्रु होने के कारण कदाचित् फलों में किंचित न्यूनता आना संभव है। 'शनिशशी सुतौ'' ऐसा पाठान्तर यदि स्वीकार किया जाए तो शनि-बुध यह योग श्रेष्ठ बनता है। कारण बुध पंचम याने त्रिकोण का स्वामी होता है इसलिए अशुभ है। उसका योग शनि से (नवम-दशम स्थानों के अधिपति से), जो केन्द्र और त्रिकोण दोनों का स्वामी है, श्रेष्ठ प्रकार का राजयोग उत्पन्न कर सकता है। कारण वह दो त्रिकोण स्वामियों का भी योग है। बुध धनेश यद्यपि मारक स्थान का अधिपति है फिर भी पंचम इस त्रिकोण स्थान का स्वामी होने से शुभ है। इसके अतिरिक्त बुध शनि का मित्र है। इसलिए श्लोक 20 के अनुसार श्रेष्ठ राजयोग बनता है। वृषभ लग्न के लिए गुरु 8/11, स्थानों का, शुक्र 1/6 स्थानों का और चन्द्र 3 तीसरे स्थान का अधिपति होते हैं। 8/6/11 और ये 3 स्थान अशुभ हैं। शुक्र ग्रह के लिए प्रथम स्थान भी अशुभ है, इसके अलावा वह षष्ठ स्थान (त्रिषहाय) का स्वामी भी होने से (2) गुरु बारहवें स्थान का स्वामी होने से दूषित है और शुक्र सप्तम (मारक) भाव का स्वामी होने से दूषित है दोनों ही दूषित होने के कारण गुरु-शुक्र योग निष्फल होता है। सफलयोग-1. सूर्य-मंगल, 2. सूर्य-चन्द्र, 3. सूर्य-शुक्र (निष्कृष्ट और सदोष) कारक शुक्र सप्तम स्थान का स्वामी होने से दूषित है। सूर्य दूषित नहीं है। परन्तु एक दोषयुक्त होने से सफल राजयोग होता है। लेकिन यह योग निकृष्ट और सदोष है।

4. सूर्य-शनि, 5. मंगल-गुरु, 6. चन्द्र-गुरु-यदि चन्द्रमा पूर्ण हो तो चतुर्थ स्थान का (केन्द्र का) स्वामी होने के कारण राजयोग करता है। पूर्ण चन्द्र होने से उसे शुभ माना गया है। परन्तु इस ग्रंथ के नियमों के अनुसार केन्द्रेश यदि शुभग्रह हो तो अशुभ होता है, इसलिए यह योग सदोष होता है यदि चन्द्रमा क्षीण होवे तो शुभ होता है। और गुरु द्वादशेश होने से उसका दोष नष्ट करता है।

मेषलग्न के शुभाशुभ योग

1. शुभयोग-सूर्य पंचम स्थान का अर्थात् त्रिकोण स्थान का अधिपति होकर यदि स्वगृह में हो तो श्लोक 6 के अनुसार शुभ होकर शुभफल देने वाला होता है।

2. शुभयोग-गुरु नवम (त्रिकोण) स्थान का स्वामी है और वह स्वगृह में हो तो श्लोक 6 के अनुसार शुभफल देने वाला होता है।

3. शुभयोग-चन्द्रमा (विशेषता: क्षीणचन्द्रमा) केन्द्राधिपति होने के कारण से श्लोक 11 के अनुसार (अल्प) कम दूषित होता है और शुभ माना जाता है। वह शुभफल देने वाला होता है।

4. शुभयोग-मंगल अष्टम स्थान का स्वामी होकर लग्नेश भी होता है। श्लोक 9 के अनुसार उसे शुभ माना जाता है। और वह शुभफल देता है।

1. अशुभयोग-शनि दशम स्थान का अधिपति होने से पापग्रह है और एकादश स्थान का भी अधिपति होने से श्लोक 6 के अनुसार अशुभ माना गया है और वह अशुभ फल देने वाला मारक है।

2. अशुभयोग–बुध तृतीय एवं षष्ठ स्थान का अधिपति होने से श्लोक, 6 के अनुसार अशुभ माना गया है और वह अशुभफल देने वाला मारक है।

3. अशुभयोग–शुक्र द्वितीय एवं सप्तम (मारक-स्थानों का) स्थानों का अधिपति होकर सप्तम केन्द्र का भी अधिपति होता है और श्लोक 7-10 के अनुसार अशुभ है और मृत्युकारक अशुभफल देने वाला है। (विशेष करके यदि अन्य पापीग्रहों से संबंध करता हो तो निश्चय ही श्लोक 10 के अनुसार मृत्युकारक होता है।)

4. अशुभयोग–गुरु द्वादश स्थान का अधिपति होकर नवम स्थान (त्रिकोण स्थान) का भी अधिपति है। वह यदि दशम और एकादश स्थान के स्वामी शनि से सहस्थानाधिपत्य योग श्लोक 8 के अनुसार करे तो वह पापग्रह माना जाएगा और अशुभफल देने वाला होगा।

निष्फलयोग–1. गुरु-शनि, 2. गुरु-शुक्र।

1. शनि गुरु का योग निष्फल होता है। यह भी अशुभ है। गुरु नवम और द्वादश स्थानों का स्वामी होने से मारक (अशुभ) है। चन्द्रमा तृतीय स्थान का स्वामी होने से श्लोक 7 के अनुसार अशुभ है। इसलिए गुरु, शुक्र और चन्द्रमा अशुभ हुए। सूर्य चतुर्थ स्थान का स्वामी होता है। सूर्य इस पापग्रह को केन्द्र शुभ है। इसलिए श्लोक 7 के अनुसार वह शुभ हुआ। गुरु आदि करके अशुभग्रह मारक-लक्षण युक्त होते हैं।

❑❑❑

मेषलग्न की प्रमुख विशेषताएं एक नजर में

1.	लग्न	– मेष
2.	लग्न चिह्न	– मेंढ़ा
3.	लग्न स्वामी	– मंगल
4.	लग्न तत्त्व	– अग्नि तत्त्व
5.	लग्न उदय	– पूर्व
6.	लग्न स्वरूप	– चर
7.	लग्न अवधि	– 1 घंटा 36 मिनट
8.	लग्न स्वभाव	– उग्र
9.	लग्न बली	– रात्रिबली
10.	लग्न कान्ति	– लाल (रक्तवर्णी)
11.	लग्न दिशा	– पूर्व
12.	लग्न लिंग व गुण	– पुरुष
13.	लग्न जाति	– क्षत्रिय
14.	लग्न प्रकृति व स्वभाव	– क्रूर स्वभाव, चित्त प्रकृति
15.	लग्न का अंग	– सिर
16.	जीवन रत्न	– मूंगा
17.	अनुकूल रंग	– लाल
18.	शुभ दिवस	– मंगलवार, रविवार
19.	अनुकूल देवता	– शिवजी, भैरव, हनुमान
20.	व्रत, उपवास	– मंगलवार
21.	अनुकूल अंक	– नौ
22.	अनुकूल तारीखें	– 9/18/27
23.	लग्न वर्ण	– रक्त
24.	लग्न धातु	– ताम्बा
25.	जन्म काल में रुदन	– नहीं

26.	**जातक भोजन रुचि**	– गर्म
27.	**जातक की विशेषता**	– तेजस्वी
28.	**मित्र लग्न**	– सिंह, तुला व धनु
29.	**शत्रु लग्न**	– मिथनु व कन्या
30.	**व्यक्तित्व**	– दबंग, क्रोधयुक्त व साहसी
31.	**सकारात्मक तथ्य**	– कुटुम्ब को पालने वाला, चुनौती को स्वीकार करने वाला, सदैव क्रियाशील
32.	**नकारात्मक तथ्य**	– दम्भी, अधैर्यशील

❑❑❑

मंगल का वैदिक स्वरूप

चारों वेदों में मंगल या भौम से सम्बन्धित कोई सूक्त या मंत्र नहीं मिलता। 'पृथ्वीसूक्त' एवं पृथ्वी के बारे में रहस्यमय जानकारियों से परिपूर्ण अनेक मंत्र ऋग्वेद में हैं परन्तु इनके साथ मंगल ग्रह का कोई तारतम्य नहीं बैठता। वेदों में मंगल ग्रह की आराधना-पूजा व प्रतिष्ठा हेतु एक मंत्र सर्वाधिक प्रचलित है।

मंगल का वैदिक मंत्र

अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्यांऽअयम्।
अपा ॐ रेता ॐ सिजिन्वति॥
ॐ भौमाय नमः

–यजुर्वेद अ.3/मं. 12

जिसका शब्दिक अर्थ इस प्रकार है-"यह अग्नि द्युलोक के शिर के समान महान है और समस्त पृथ्वीलोक इस अग्नि के तेज से महान है। यही अग्नि जलों में सार (तेज) रूप से (दृष्टि उत्पादन निमित्त) विद्यमान है।"

सम्भवतः ऋषियों के द्यौलोक (अन्तरिक्ष) में ऐसा ज्वलनशील पिण्ड देखा हो, जिसमें जल-जीव व सृष्टि की सम्भावना हो तथा पृथ्वी से जिसका गहरा सम्बन्ध हो और उसे मंगल या भूमिपुत्र 'भौम' कह दिया हो। इस मंत्र के शब्दार्थ में तो कही नहीं, परन्तु गूढार्थ व समाधि भाषा में ऐसा भाव झलकता है। इस मंत्र के पीछे ॐ भौमाय नमः जोड़ दिया गया है। जिसका अर्थ है मंगल के ऐसे दिव्य रूप को नमस्कार है। कर्मकाण्ड (पूजा-पाठ) में अनादिकाल से मंगल के पूजन हेतु इसी मंत्र का प्रयोग होता है। मंगल के बारे में इससे अधिक जानकारी वेदों में नहीं है पर पौराणिक काल में मंगल का दिव्य रूप धीरे-धीरे स्पष्टतः मुखरित होता चला गया।

मंगल का पौराणिक स्वरूप

उत्पत्ति कथा–वाराहकल्प की बात है। भगवान वाराह ने रसातल से पृथ्वी का उद्धार कर उसको अपनी कक्षा में स्थापित कर दिया था। पृथ्वी देवी की उद्विग्नता मिट गई थी और वे स्वस्थ हो गई थीं। उनकी इच्छा भगवान को पति के रूप में पाने की हो गई। उस समय वाराह भगवान

का तेज करोड़ों सूर्य के सदृश्य असह्य था। पृथ्वी की अधिष्ठात्री देवी की कामना की पूर्ति के लिए भगवान वाराह अपने मनोरम रूप में आ गए और पृथ्वीदेवी के साथ वे दिव्य वर्ष तक एकान्त में रहे। इसके बाद वाराह-रूप में आकर पृथ्वीदेवी का पूजन किया (ब्रह्मवै. पु. 2/8/29–33)। उस समय पृथ्वीदेवी गर्भवती हो चुकी थीं, उन्होंने मंगल नामक ग्रह को जन्म दिया (ब्रह्मवै. पु. 2/8/43)। विभिन्न कल्पों में मंगल ग्रह की उत्पत्ति की विभिन्न कथाएं हैं। आजकल पूजा के प्रयोग में इन्हें भारद्वाज गोत्र कहकर सम्बोधित किया जाता है। यह कथा गणेशपुराण में आती है।

मंगल ग्रह के पूजन की बड़ी महिमा है। भौमव्रत में ताम्रपत्र पर भौम-यंत्र लिखकर मंगल की सुवर्णमय प्रतिमा प्रतिष्ठित कर पूजा करने का विधान है (भविष्यपुराण)। जिस मंगलवार को स्वाति नक्षत्र मिले, उसमें भौमवार-व्रत करने का विधान है। मंगल देवता के नामों का पाठ करने से ऋण से मुक्ति मिलती है। (पद्मपुराण)। अंगारक-व्रत की विधि मत्स्यपुराण के बहत्तरवें अध्याय में लिखी गई है। मंगल अशुभ ग्रह माने जाते हैं। यदि ये वक्रगति न चले तो एक-एक राशि को तीन-तीन पक्ष में भोगते हुए बारह राशियों को पार करते हैं (श्रीमद्. 5/22/14)।

वर्ण–मंगल ग्रह का वर्ण लाल होता है और इनके रोम भी लाल हैं। (मत्स्यपु. 94/3)।

वाहन–मंगल देवता का रथ सुवर्ण-निर्मित है। लाल रंग वाले घोड़े इस रथ में जुते रहते हैं। रथ पर अग्नि से उत्पन्न ध्वज लहराती रहती है। इस रथ पर बैठकर मंगल देवता कभी सीधी, कभी वक्रगति से विचरण करते हैं। (मत्स्यपु. 127/4-5)। कहीं-कहीं इनका वाहन मेष (भेड़ा) बताया गया है (श्रीतत्त्वनिधि)।

मंगल देवता का ध्यान इस प्रकार करना चाहिए–

रक्तमाल्याम्बरधरः शक्तिशूलगदाधरः।
चतुर्भुजः रक्तरोमा वरद स्याद् धरासुतः॥

(मत्स्य पु. 94/3)

'भूमिपुत्र मंगल देवता चतुर्भज हैं। इनके शरीर के रोएं लाल है। इनके हाथों में क्रम से शक्ति, त्रिशूल, गदा और वरदमुद्रा है। उन्होंने लाल मालाएं और लाल वस्त्र धारण कर रखे हैं।'

मंगल के अधिदेवता स्कन्ध, प्रत्याधिदेवता पृथ्वी है।

❑❑❑

मंगल का खगोलीय स्वरूप

सौरमण्डल में पृथ्वी के बाद मंगलग्रह का चौथा स्थान है। मंगल सूर्य से 22,40,00,000 कि.मी. की दूरी पर है। इसका व्यास 6860 कि.मी. है और अपने परिभ्रमण मार्ग पर 689 दिन में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करता है मंगल की भ्रमण गति 45 दिन में 20 अंश या डेढ़ दिन में एक अंश है। इसका गुरुत्व हमारा पृथ्वी के गुरुत्व के दसवें भाग के बराबर है। जिस प्रकार हमारी पृथ्वी के इर्द-गिर्द चन्द्रमा घूमता है उसी प्रकार मंगल के चारों ओर दो चन्द्रमा घूमते हैं। मंगल जब पृथ्वी के निकटतम होता है। तब पृथ्वी से उसकी दूरी 9.8 करोड़ कि.मी. की होती है। उस समय यह लालमणि के समान चमकता हुआ दिखलाई देता है तथा उसका अध्ययन भी सुगम रहता है।

मंगल ग्रह अस्त होने से 120 दिन बाद फिर उदय होता है। उदय के 300 दिन बाद वक्री होता है। वक्र के 60 दिन बाद मार्गी तथा मार्गी के 300 दिन बाद पुन: अस्त होता है। मंगल को अंगारक रुधिर, आग्नेय, त्रिनेत्र, भौम, भूमिसुत, कुज आदि नाम दिए गए हैं।

मंगल की गति–मंगल अपनी धुरी पर 24 घण्टा 37 मिनट और 22 सेकंड में एक चक्कर पूरा कर लेता है। यह 686 दिन 17 घण्टा 20 मिनट और 41 सेकंड में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी कर लेता है। इसकी चाल 15 मील प्रति सेकंड और 54000 मील प्रति घण्टा है। स्थूल मत से मंगल की चाल 18 मास मानी गई है। फलत: 45 दिन में एक राशि और डेढ़ दिन में एक अंश को पार कर जाता है। यह एक नक्षत्र पर 20 दिन और एक पाद पर 5 दिन रहता है।

जब यह वक्री होता है तो उस राशि को 127 दिन में और उससे अगली राशि को 15 दिन में पूरी करता है। जिस रशि पर मार्गी होता है उस पर 45 दिन रहता है। जब यह सूर्य से 135 डिग्री अंश की दूरी पर जाता है तो वक्री हो जाता है। उस समय इसकी चाल 65 दिन में 12 डिग्री अंश तक की हो जाती है। यह सूर्य से 17 डिग्री अंश की दूरी पर अस्त हो जाता है अस्त होने पर 120 दिन बाद फिर उदय होता है। उदय के 300 दिन बाद वक्री हो जाता है। तथा वक्री के 60 दिन बाद मार्गी हो जाता है। जब इसकी गति 46/11 होती है तो यह शीघ्रगामी (अतिचारी) हो जाता है।

❑❑❑

मंगल का ज्योतिषीय स्वरूप

मंगल की उत्पत्ति–पृथ्वी के पिता सूर्य और उसकी माता चन्द्र है। मंगल पृथ्वी का पुत्र है। सूर्य और चन्द्र इसके नाना नानी हैं। ननिहाल के पूर्ण गुण भी इसमें हैं और पृथ्वी से संघर्ष कर यह उससे अलग हुआ है। अत: इसमें मारकत्व भी है। सूर्य का तेजस्व और चंद्र की शीतलता इसमें है। यह प्रबल साहसी है। शक्ति का नेतृत्व इसका प्रतीक है। उज्जैन में इसकी उत्पत्ति मानी गई है। यह चतुर्भुज रूप है। शूल, गदा ये इसके शस्त्र हैं। यह भारद्वाज कुलीन क्षत्रिय है। मेष इसका वाहन है। इसका देवता कार्तिक स्वामी है, अग्नि तत्त्व है वर्षा में चमकती बिजली के समान इसकी कांति है।

रंग–शत्रुओं का विजेता, युद्ध प्रिय, ऋणकर्त्ता, ऋणहर्त्ता दोनों के रूप में प्रसिद्ध है। यह रक्त का प्रतीक होने से लाल रंग का है। वैद्यनाथ ने "संरक्त: गौर: कुज:" से लाल और सफेद के मिश्रण का रंग बताया है। वराहमिहिर ने इसे किंशुक के फूलों जैसा लाल बताया है। तपे हुए तांबे के समान इसकी कान्ति दर्शाई है। विदेशी विद्वानों ने अग्नि ज्वाला सम वर्ण बताया है।

बलवत्ता–इसका कद नाटा है। यह मेष और वृश्चिक राशियों का स्वामी है। मेष इसकी मूल त्रिकोण राशि है। मकर में यह उच्च का होता है और कर्क में नीच का बनता है। नवांश व द्रेष्काण में स्वगृही होकर बली होता है। मीन, वृश्चिक, कुंभ, मकर, मेष राशि के प्रारम्भ में बली होता है। मीन और कर्क में सुखप्रद होता है। नैसर्गिक कुण्डली में लग्नेश और अष्टमेश बनकर जन्म व मृत्यु पर यह अधिकार रखता है। यह रात्रिबली, कृष्ण पक्षी में बली व दक्षिण दिशा में बली होता है। अपनी होरा अपने मास, पर्व और काल में बली होता है। ग्रीष्म ऋतु चतुर्थ स्थान में इसका बल कमजोर रहता है। दशम में दिग्बली होता है। षष्ठ में हर्षबली होता है। यह तीसरे व षष्ठ भाव का कारक है, वहां भाव का नाश करता है। वह पुरुष ग्रह है, अत: स्त्री राशियों में ज्यादा सुखदायी रहता है। वक्री होने पर शुभ फल करता है।

कार्य और धन्धे–मंगल में शारीरिक व मानसिक कार्य का सामर्थ्य होता है। इसका प्रधान गुण है दूसरों के लिए खुद को भी कष्ट में डालना। थोड़े से इशारे से ये बात को फौरन समझ जाना, तर्क की प्रबल शक्ति का विकास इनमें होता है–इसलिए राजनेता, वकील, बिजली के कार्य वैज्ञानिक, मिस्त्री, व्यापारी, मशीनरी के कार्य, इंजीनियर, ओवरसिअर, भूस्वामी, जागीरदार, सुनार, दर्जी, लुहार, चमार, रसोईया, औषधि विक्रेता, चोर, डकैत, स्मगलर, नायक, सेनापति, सिपाही इन धंधों में मंगल की प्रधानता पाई जाती है।

धातु–सोना व तांबा है। रत्न मूंगा (प्रवाल) है। 5 से 9 रत्ती तक का मूंगा पहनने से यह फलता है।

दृष्टि–इसकी उर्ध्वदृष्टि है। 4, 7, 8वीं सम्पूर्ण दृष्टियां हैं, 3, 10 एकपाद, 5, 9 द्विपाद दृष्टियां हैं।

यह दशम भाव का पूर्ण दृष्टि का प्रभाव रखता है। केवल अपने घर को देखकर बुरा प्रभाव नहीं करता है, पर सप्तम दृष्टि प्राय: शत्रुता रखती है।

मित्रादि–मंगल के मित्र ग्रहों में सूर्य, गुरु, चंद्र हैं। बुध और राहु शत्रु है। शुक्र, शनि सम होते हैं। राहु की शत्रुता समता भाव पर निर्धारित है।

स्वरूप–जिन व्यक्तियों की मेष या वृश्चिक राशि होती है, या जिनके लग्न उपरोक्त होते हैं। वे प्राय: बिना सोचे-समझे सामने वाले व्यक्ति से टकरा जाते हैं। वे बहुत उतावले व त्वरित परिणाम चाहने वाले होते हैं। ये लोग तेजस्वी व दबंग होते हैं तुरन्त निर्णय लेने में सक्षम होते हैं। अपनी प्रतिभा से ऊंचे उठते हैं। क्रोधी व साहसी होते हैं।

उनका चेहरा ललाई लिए हुए कुछ गोरे रंग का या गेहुंआ होगा। मध्यम औसत कद, गर्दन लम्बी, बाल कुछ घुंघराले, नेत्रों में तीखापन, चेहरा कुछ लम्बा, आंखें गोल, दांत सुंदर, जातक के चेहरे के किसी भाग में चोट या मस्सा या लहसुन का निशान होगा, घुटने कमजोर होंगे। ललाट चौड़ी भी हो व बालों में हल घुंघरालापन रहेगा। व्यक्तित्व प्रभावशाली होगा। व्यक्ति स्वतंत्र विचार वाला होगा।

अचूक फल

- मंगल 12, 1, 4, 7, 8 भावों में स्थित हो तो कुण्डली मांगलिक होती है। कुछ अन्य ज्योतिषियों के आधुनिक शोध ने दूसरे स्थान के मंगल से कुण्डली को मांगलीक माना है। मांगलिक कुण्डली स्त्री व पुरुषों के लिए पारिवारिक कष्टदाई बनती है। पाप ग्रहों की इन स्थानों में स्थिति से मांगलिक तुल्य बनती है। शुक्र से 4 थे व 5वें मंगल भी कष्टदायी बनते हैं। गृहस्थ ठीक से नहीं चलता।
- केन्द्र में स्वगृही व उच्च राशि में स्थित मंगल से रुचक महायोग बनता है। जो साहस व शौर्य से धन, भूमि व वैभव का स्वामी बनता है।
- मंगल+शनि के संबंध से बिजली, विज्ञान व दो नंबर के धंधे बनते हैं। मंगल में शनि व शनि में मंगल की दशा बीमारी या कष्ट देती है।
- तीसरे मंगल छोटे भाई को देने वाला व उसका मारक भी होता है।
- पचम व एकादश भवन के मंगल पुत्र कारक और मारक भी होते हैं।
- दूसरे स्थान में स्थित मंगल पुत्र को अग्नि सम्बन्ध का एक्सीडेण्ट से हानि देते हैं।
- 6, 7, 12वें स्थान मं स्थित मंगल शत्रु और रोग की वृद्धि करता है।

- मंगल यदि गुरु से नियंत्रित हो जाए तो शुभ फल करेगा। गुरु से दृष्ट मंगल शुभ फल वाला होता है। परन्तु अभी शोध से मांगलिक स्थानों का मंगल गुरु से दृष्ट होकर प्रबल मंगल मारक बनता है। ऐसा फल दृष्टव्य है।
- मंगल का बल शुक्र तोड़ देता है। (मं.+शु) हो उस मंगल की दृष्टि से मृत्यु नहीं होती है। यह सेक्स बढ़ाता है।
- मंगल का शुक्र से किसी प्रकार का संबंध हो तो वह संतान योग देता है।
- अष्टमस्थ या अष्टम पर दृष्टिकर्त्ता अनियंत्रित मंगल जिस मंगल पर किसी शुभ व अशुभ ग्रह का असर न हो वह मंगल उम्र कम करता है। अचानक एक्सीडेण्ट से मृत्यु देता है।
- सूर्य+मंगल का योग सूर्य से नियंत्रित मंगल अकस्मात् दुर्घटना देता है।
- चंद्र व शुक्र के संबंध में मंगल दूषित होता है। व्यक्ति कुमार्गगामी, क्रोधी व व्यसनी बनाता है।
- 5, 7, 12वें भाव में मंगल के लोग परनिन्दक होते हैं।
- 2, 4, 6, 8, 12वें भावों में मंगल वाले डिग्रीयां प्राप्त करते हैं। परन्तु मन की अवस्था अविकसित रहती है।
- शुक्र या मंगल जन्म में केन्द्र में हो तो जब जब मंगल उसी राशि पर आएगा चोट देगा।
- जन्मदशा में मंगल की पांचवीं दशा अशुभ होगी।
- मंगल प्रथम भाव में जलीय राशि में हो तो मनुष्य मद्यवी व स्त्रीलोलुप होगा।
- मंगल लग्नेश होकर बलवान हो तो व्यक्ति बहुत पुरुषार्थी क्रियाशील, व्यवस्थापक, समाज में अग्रणी, साहसी व नेता होता है।
- 6, 8, 12वें भाव में शुभ ग्रह से युक्त व दृष्ट मंगल हो तो पठ्ठों का या सूखे का रोग देता है।
- मंगल तीसरी शत्रु राशि में हो तृतीयेश तथा मंगल पर पाप प्रभाव हो तो छोटा भाई नहीं होता।
- मंगल की दृष्टि जब दो ग्रहों पर पड़ रही हो तो किसी आपत्ति की सूचना होगी। जैसे–वृषभ लग्न में यदि मंगल की दृष्टि बुध व शुक्र पर पड़ेगी तो स्त्री की मृत्यु शीघ्र होगी।
- मेषलग्न व कन्या लग्न में बली मंगल आयु बढ़ाएगा। मकर का मंगल 7वें होगा तो 'काहल योग' से राजयोग करेगा।
- तीसरे भाव में मं+रा. युति से व्यक्ति वेश्यागामी होगा।
- तीसरे भाव में मंगल स्त्री राशि में हो तो भाइयों का सुख पुरुष राशि में हो तो बहनों का सुख प्राप्त होगा।
- मंगल जहां पर भी बैठा हो उस स्थान की हानि करेगा यदि शुभ दृष्ट न हो।

मंगल दोष शान्ति के उपाय

1. मंगल यंत्र की प्रतिष्ठा कर उसका पूजन करें।
2. ''भौमे तु रुद्र क्रिया'' महादेव का नित्य पूजन करें या ब्राह्मण हो तो नित्य अभिषेक स्वयं करें।
3. अगर कर्ज हो गया हो ऋण नाशक मंगल स्रोत्र का पाठ करें।
4. अगर एक्सीडेण्ट योग बनता हो तो हर शनि+मंगलवार को कुत्तों को मीठा देते रहें। हनुमान चालीसा का नित्य पाठ करें।
5. मंगल व्रत करें। मंगल को मसूर की दाल, गुड़ गौ को दें।
6. मंगल को बलवान करना हो तो तांबा, सोना मिश्रण से धातु की अंगूठी बनवाकर उसमें सवा पांच रत्ती से 9 रत्ती तक का मूंगा पहनें।
7. शनि में मंगल की दशा में मंगल का पालन करें व मंगल में शनि की दशा में शनि का पालन करें।
8. संकट मोचन हनुमत् स्त्रोत का पाठ नित्य करें।

किसी 2 उपायों का एक साथ अवलम्बन करें।

❑❑❑

मेषलग्न की चारित्रिक विशेषताएं

मेषलग्न का स्वरूप

रक्तवर्णो बृहद्गात्रश्चतुष्पाद्रदत्रिविक्रमी॥6॥
पूर्ववासी नृपज्ञातिः शैलचारी रजोगुणी।
पृष्ठोदयी पावकी च, मेषराशि कुजाधिपः ॥7॥

—बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे/अ. 4/श्लो. 16

रक्तवर्ण, लम्बाकद, चतुष्पद, रात्रिबली, पूर्ववासी, क्षत्रिय, पर्वतचारी, रजोगुणी, पृष्ठोदय, अग्नितत्त्व, इस प्रकार मेष है, इसका स्वामी मंगल है।

वृत्ताताम्रदृगुष्णशाक लघुभुक् क्षिप्रप्रसादोऽटनः,
कामी दुर्बलजानुरस्थिरधनः शूरोऽगंनावल्लभः।
सेवाज्ञः कुनखी व्रणांकिताशिरा मानी सहोत्थाग्रजः,
शक्त्या पाणितलेऽङि्कतोऽतिचपलस्तोये च भीरुः क्रिये॥1॥

बृहज्जातकम् अ. 16/श्लो. 1

यदि जन्म समय में मेषलग्न हो तो जातक कुछ गोलाई लिए हुए तथा कुछ लालिमा या विशेष चमक लिए नेत्रों वाला, गर्म खाने वाला, शाक-भाजी तथा कम खाने वाला, जल्दी ही प्रसन्न हो जाने वाला, भ्रमणशील, कामुक, कमजोर घुटनों वाला, चंचल धन वाला, शूरवीर, स्त्रियों का प्रिय, सेवाकार्य को जानने वाला, नाखूनों में विकास युक्त, सिर में घाव का निशान पाने वाला, स्वाभिमानी, अपने भाइयों में सबसे बड़ा या अपने गुणों से अग्रणी, हथेली में भाले के आकार की रेखा से युक्त, अति चपल तथा जल से डरने वाला होता है।

मेषे विलग्नेतु भवेत्प्रसूतश्चण्डो धनी सर्वकलासु दक्षः।
स्वपक्षहन्ता बहुमन्युयुक्तो मन्दमतिस्तीक्ष्णाकरः सदैव॥1॥

वृद्धयवनजातक अ. 24/श्लो. 1/पृ. 286

यदि मेषलग्न में जन्म हो तो मनुष्य प्रचण्ड स्वभाव वाला, धनवान, सभी कलाओं व शिल्प व्यवहार में चतुरता पाने वाला, अपने पक्ष का नाश करने वाला, अत्यधिक क्रोधी स्वभाव वाला, मन्द बुद्धि वाला एवं तीक्ष्णता युक्त कार्य करने वाला होता है।

बन्धुद्वेषकरोऽटनः कृशतनुः क्रोधी विवादप्रियो।
मानी दुर्बलजानुरस्थिरधनः शूरश्च मेषोदये।

–जातक पारिजात श्लो. 1/पृ. 678

मेष बन्धुओं से द्वेष करने वाला, दुर्बल शरीर, क्रोधी, विवाद प्रिय, मानी (गर्व सहित), कमजोर घुटने, धन स्थिर न रहे, शूरवीर होता है।

दाता हर्ता दीप्तः क्षयोदयी सङरप्रचण्डः स्यात्।
प्रियविग्रहस्त्रिभागे मेषाग्रे बन्धुषूग्रदण्डश्च ॥1॥

–सारावली पृ. 465/श्लो. 1

यदि जन्म लग्न में मेष राशि हो तथा मेष राशि का प्रथम द्रेष्काण हो तो जातक दानी, गिरकर उठने वाला, हरण करने वाला, तेजस्वी, युद्ध में शूर, कलह प्रेमी व बन्धुओं को कठोर दण्ड देने वाला होता है।

मेषलग्ने समुत्पन्नश्चण्डो मानी सकोपकः।
सुधीः स्वजनहन्ता च, विक्रमी पर वत्सलः॥

मानसागरी अ.1/श्लो. 1

मेषलग्न वाले जीव स्पष्टवादी, अभिमानी, कुपित परन्तु गुणवान, निज पराक्रम में यशस्वी, परिवार वालों से पृथक तथा अन्य जीवों का प्रेमी, धन सम्पदा युक्त तथा गुणग्राही रहता है।

भोज संहिता

कालपुरुष की कुण्डली में प्रथम भाव में मेष राशि ही रहेगी, यह स्थाई ज्ञान है। कालगणना व फलादेश के वक्त प्रथम, भाव को मेष राशि का मानकर ही चलना पड़ेगा। उस प्रथम भाव में जो राशि स्थित हो वह लग्न कहलाएगी।

जातक की लग्न राशि क्या है, और चंद्र राशि कौन-सी है? इन दोनों के सम्मिश्रण से जातक के स्वभाव का सटीक पता चलेगा।

जातक के स्वभाव में विशेषता प्रकट करने में नक्षत्रों का बड़ा महत्त्व है। नक्षत्रों में भी चरण फल श्रेष्ठ होंगे। उससे भी सूक्ष्म उपनक्षत्र स्वामी रहेंगे। अतः आपका जन्म लग्न कौन-सी राशि का, किस नक्षत्र में कितने अंशों पर स्थित है यह बहुत महत्वपूर्ण है। इसी तरह आपका चंद्र भी किस नक्षत्र में कितने अंशों पर गया है यह भी दृष्टव्य है। फिर चंद्र नक्षत्र स्वामी और लग्न नक्षत्र स्वामी में मित्रता, समता या शत्रुता है इस पर विचार आवश्यक होगा। तब कहीं जाकर आप जातक के वास्तविक स्वभाव का निर्णय ले सकेंगे।

नक्षत्रानुसार फलादेश

चू-चे-चो-ला	ली-लू-ले-लो	अ
अश्विनी-4	भरणी-4	कृत्तिका-1

अश्विनी, भरणी, कृत्तिका पादमेकौ मेष

–शीघ्रा बोध

इसमें दो पूर्ण नक्षत्र और एक पाद अर्थात् सवा दो नक्षत्र का भुगतान है। सूत्र है–मेष का स्वामी मंगल है–मंगल तीन ग्रह नक्षत्र स्वामियों के प्रभाव से सन्निहित है। अश्विनी–केतु, भरणी-शुक्र, कृतिका-सूर्य, उपरोक्त नक्षत्र स्वामियों की मुख्य भूमिका है फिर उसमें सहायक नक्षत्र के स्वामी भी होते है। जिसकी पार्श्व भूमिका होती है। प्रत्येक चरण का स्वामी नक्षत्र भिन्न होता है। उसका उससे मिश्रण है, इस तरह एक राशि में भी चरणानुसार भिन्न-भिन्न स्वभाव का परिचय मिलता है।

चन्द्रमा यदि अश्विनी नक्षत्र में हो–चंद्र या लग्न की अश्विनी नक्षत्र की स्थिति में जातक पारिजात अध्याय 6, श्लोक 85 में कहा है–**अश्विन्यां अतिबुद्धि-वित्त-विनय प्रज्ञा यशस्वी सुखी।** मंगल तर्क शक्ति का प्रबल कारक ग्रह है। इसमें संदेह नहीं है। उसी मंगल के दो मुख्य भाग प्रज्ञा और बुद्धि हैं। यहां पर मंगल अश्विनी नक्षत्र का प्रतिनिधित्व कर रहा है अश्विनी नक्षत्र में अश्व के समान बाजीकरण चंचलता भी है। अश्विनी कुमार देवों के वैद्य हैं जो चिर यौवन के दाता हैं। अश्विनी चंद्र का मित्र है अत: चंद्र के गुण लेकर यह स्वभाव में सुंदरता लाता है और मेषलग्न वालों को यश व सुख, विनय व धन भी देता है।

यदि आपका नाम "अ" से शुरू होता है तो आप सेक्स के मामले में भूखे होते हैं। जो भी जैसी भी औरत दिखलाई देगी उसी के प्रति आप एक विशेष ललक व चाहत का अनुभव करने लगेंगे, यह आपकी कमजोरी है। लाल रंग व ज्वलनशील पदार्थ आपके अनुकूल कहे जा सकते हैं। मंगल एक शौर्यवान व तेजोमय ग्रह होने से 'जहां शांति व सज्जनता असफल हो जाती है वहां पर आप झगड़े डांट डपट से अपना कार्य आसानी से सिद्ध कर सकते हैं।

यदि जातक का जन्म "अश्विनी नक्षत्र' में है तो ये स्वतंत्र विचारों वाले व्यक्ति होते हैं। दूसरों की हुकूमत इन्हें बिल्कुल पसंद नहीं होती तथा आप दूसरे के आधिपत्य में रहकर विकास कर ही नहीं सकते। आप जब स्वतंत्र कार्य करेंगे तभी आपका विकास संभव होगा। आपको अपने मनोभावों पर नियंत्रण रखना आवश्यक है। परन्तु क्रोधावस्था में आप आत्मनियंत्रण खो बैठते हैं। क्रोध जितना शीघ्रता से आता है उतना ही तीव्रता से उतर जाता है।

अश्विनी नक्षत्र का चरणानुसार फल–सारणी में वर्णित नक्षत्रांश में यदि चंद्र भी अश्विनी नक्षत्र में हो तो ऐसा जातक सभी को खूब प्यार करे। वह चतुर भी होगा व सुंदर भी तथा सौभाग्यशाली होगा।

अश्विन्या: प्रथमे पादे, जातो भवति तस्कर:।
द्वितीये चाल्पकर्मा च, तृतीये सुभगो भवेत्।
पादे चतुर्थके भोगी, दीर्घायु जायते नर:॥

अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में मंगल राशि स्वामी, नक्षत्र-स्वामी केतु, प्रथम चरण का स्वामी केतु, प्रथम चरण का स्वामी अंश 0 से 3.20 तक मंगल फिर क्रमश: केतु, शुक्र व सूर्य का मिश्रण होने से आभूषणकर्ता सुनार की ही जाति प्रगट होती है। फलस्वरूप चूंकि केतु और मंगल का प्राधान्य होने से वह तस्कर स्वभाव को ही प्रदर्शित करेगा। अत: इस लग्न के 3.20 अंश के भीतर स्वभाव में यह बात विशेषत: रहेगी। अन्य ग्रहों के सौजन्य व दृष्टिपात

अश्विन चरण	अंश अवधि	चरण के नवमांश स्वामी	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	उपनक्षत्र अशं से तक
प्रथम	0.00 से 3.20	मं.	मं.	के (1) शु (2) सू (3)	0.0.0 से 0.06.4 0.6.40 से 3.0.0 3.0.0 से 3.20.0
द्वितीय	3.20 से 6.40	शु.	मं.	चं (4) मं (5)	3.20.0 से 4.46.4 4.46.40 से 5.33.20
तृतीय	6.41.0 से 10.0	बु.	मं.	रा. (6) गु. (7)	5.33.20 से 6.40.2 7.33.20 से 9.20.00
चतुथं	10.10 से 13.20	च	म	श (8) बु. (9)	9.20.0 से 11.26.4 11.26.40 से 13.20.00

से कुछ बदलाव संभव है। केतु का फल मंगल की तरह होता है 'केतु कुजवत्' प्रसिद्ध है।

अश्विनी के दूसरे चरण में–जो 3.20 से 6.40 के अंश तक है। उसमें मंगल के साथ चरण स्वामी शुक्र है। केतु के साथ सूर्य+चंद्र+मंगल का मिश्रित योग है। अत: मंगल+शुक्र का संबंध सेक्स (काम) संवर्धन का है। शुक्र चंद्र की ही तरह कामुक है। अत: अतिकामुकता के कारण कार्य क्षेत्र में थोड़ा ही ध्यान जा पाता है या ओछे या छोटे तबके के कार्य करने का स्वभाव होता है। स्वभाव में ईर्ष्या व उससे जनित अकर्मण्यता रहती है।

अश्विनी का तीसरा चरण–6.40 से 10.00 तक का श्रेष्ठ है। इसका स्वामी बुध है। इसमें बुध+केतु+राहु+गुरु का सम्मिश्रण है। अत: जतिका या जातक ऐश्वर्यशाली होंगे। क्योंकि बुध और चंद्र को धन ऐश्वर्य विषय में सहायक माना है। व्यक्ति अपने क्रोध को कंट्रोल कर मीठा बोल सकेगा, या मस्त रहेगा। बुध ऐश्वर्य सुख का भोगी भी है।

अश्विनी के चतुर्थ चरण में जन्म हो तो मनुष्य भागी व दीर्घायु बनेगा। क्योंकि चतुर्थ चरण का स्वामी चंद्र है। यह नक्षत्र पाद चंद्र का होने से वह इस पाद में स्वक्षेत्री बनकर दीर्घायु भी देता है और लग्न में हो तो धन और भोग भी देगा।

चन्द्रमा यदि भरणी नक्षत्र में हो

भरणी नक्षत्र–स्वामी शुक्र, **राशि स्वामी**–मंगल

भरणी नक्षत्र में लग्न या चंद्र हो तो व्यक्ति–

दक्ष: सुखी सत्यवक्ता भरण्यां

भवेद्रोग: कृत निश्चय: स्यात्। —जातक परिजात/अ. 8

भरणी नक्षत्र में व्यक्ति चतुर सुखी, सच बोलने वाला व निरोगी तथा दृढ़ निश्चयी बनेगा। शुक्र लक्जीरियस व सेक्सी ग्रह है। फिर मेष के स्वामी मंगल की राशि में तो कामवासना बढ़ाता ही है। अत: 'जातक परिजात' में 'होरा प्रदीप' में भिन्न फल किसी अंग विशेष में त्रुटि भी बताता है। परन्तु शुक्र के नक्षत्र में चंद्रमा या उच्च राशि का बनता है। अत: रोग रहित और शुक्र चंद्र परस्पर शत्रु भी हैं। अत: किसी अंग में रोग दोनों ही संभव लगते हैं। अतिकामी को रोग भी हो सकता है व काम के लिए पौष्टिक पदार्थ भोक्ता होने से निरोगी भी बनता है पर रोगी होगा।

भरणी चरण	चरणों के अंश	नवांश चरणों स्वामी	अंशों के उपस्वामी व अंश
प्रथम	13.21 से 16.40	सू. सू.	शु/शु 13.20 से 15.33.20 शु/सू 15.33.20 से 16.13.20
द्वितीय	16.41 से 20.00	बु. बु.	शु/चं 16.33.20 से 17.20.00 शु/मं 17.20.00 से 18.6.40
तृतीय	20.1 से 23.20	शु. शु.	शु/रा 18.6.40 से 20.6.40 शु/गु 20.6.40 से 21.53.20
चतुर्थ	23.21 से 26.40	मं. मं.	सू/श 21.53.20 से 24.0.10 शु/बु 24.00.00 से 25.53.20

यदि आपका जन्म "भरणी" नक्षत्र में हुआ है तथा आपका नाम "ल" से आरम्भ होता है तो आप कुछ लम्बे कद वाले व्यक्तियों की गिनती में हैं। आपके अनेक मित्र हैं तथा मित्र गणों पर आपकी पूर्ण कृपा है। आपको छिछले एवं चुगलखोर मित्र कतई पसंद नहीं। आप दूरदर्शी होने के साथ-साथ मितव्ययी भी हैं। फिजूल के खर्च व व्यर्थ के दिखावे में आपकी रुचि नहीं है। आपके राशि का चिह्न मेढ़ा होने से आपके दिल में हिम्मत व आंखों में जोश है। आपकी हड्डियां व काठी मजबूत है। भ्रमण व घूमने फिरने के शौक के साथ-साथ आपको चरपरी, भड़कीली या उत्तेजनापूर्ण चटपटे भोजन में भी बहुत रुचि है।

त्यागी याम्याद्यपादे स्याद्, द्वितीये धनवान् सुखी
तृतीये क्रूर कर्मी च, चतुर्थेऽसौ दरिद्रभाक्॥

भरणी के प्रथम चरण में जन्म हो तो जातक त्यागी होगा। क्योंकि इस चरण का स्वामी सूर्य है। इसमें सात्विकता तथा पृथकता दोनों का समावेश है। चन्द्र द्वारा प्रदर्शित धन का यह त्याग भी करवाता है।

भरणी के द्वितीय चरण में मनुष्य धनी व सुखी होगा क्योंकि दूसरे चरण का स्वामी बुध है। जो अपने प्रभाव द्वारा चंद्र के गुणों को बढ़ाता है। चंद्र लग्न में धन और मन दोनों पुष्ट होते हैं। अत: व्यक्ति बुध+शुक्र+चंद्र मिश्रण से सुखी होगा।

भरणी के तृतीय चरण में व्यक्ति क्रूर कर्म करेगा, क्योंकि इस चरण का स्वामी शुक्र है अत: शुक्र व चंद राशि में शत्रुता होने से व्यक्ति के कर्म ठीक नहीं होंगे।

चतुर्थ चरण में मंगल का समावेश है। वह चौथे चरण का स्वामी होगा तो चंद्र मंगल की ही राशि में उससे शत्रुता करेगा। मंगल के ही चरण में चंद्रमा का आना दरिद्रता देगा।

भोज संहिता

मेषलग्न का स्वामी मंगल अग्नितत्त्व प्रधान होता है सो ऐसा जातक दबंग व क्रोधयुक्त होता है। यह पुरुष सूचक राशि है। इसका प्राकृतिक स्वभाव साहसी, अभिमानी व पौरुषशाली पुरुषों का प्रजनन है। ऐसे जातक को क्रोध शीघ्र आता है। कोई जरा सी भी विपरीत बात कह दे तो इनको सहन नहीं होता। इनका सिर मजबूत एवं इनमें मेढ़े तुल्य शीघ्रता से भिड़ने की शक्ति होती है। इनकी आंखें बकरे के समान पीत व रक्तवर्णीय होती हैं।

मेषलग्न वाले प्राय: मध्यम कद के होते हैं। सामान्यतया मेषलग्न में उत्पन्न जातक साहसी पराक्रमी, तेजस्वी तथा परिश्रमी होते हैं तथा अपने इन्हीं गुणों से वे जीवन में वांछित मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ रहते हैं। ये अत्यधिक सक्रिय एवं क्रियाशील होते हैं तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में इच्छित उन्नति प्राप्त करते हैं।

मेषलग्न के प्रभाव से जातक साहसी, परिश्रमी तथा पराक्रमी होगा तथा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को परिश्रम एवं निर्भयता से सम्पन्न करेगा। ऐसे जातक में स्वाभिमान का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा स्वपरिश्रम तथा योग्यता से जीवन में मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ होंगे।

इनके स्वभाव में प्रारंभ से ही तेजस्विता का भाव विद्यमान रहेगा फलत: यदा-कदा आप अनावश्यक क्रोध एवं चंचलता का प्रदर्शन करेंगे। जीवन में इनको जन्मभूमि के अतिरिक्त अन्य स्थान में सफलता एवं उन्नति प्राप्त होगी तथा वहीं इनका जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा। साथ ही सांसारिक सुखोपभोग के साधनों को भी आप परिश्रम पूर्वक अर्जित करके सुखपूर्वक इनका उपभोग करने में समर्थ होंगे।

इस लग्न में जन्मे जातक को जीवन में काफी समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा परन्तु अपने परिश्रम एवं दृढ़ संकल्प शक्ति के द्वारा आप इनका सामना तथा समाधान करने में समर्थ होंगे। इनकी प्रवृत्ति तथा उदारता तथा सहिष्णुता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अवसरानुकूल अन्य जनों को आप अपना सहयोग प्रदान करेंगे। जिससे आपके प्रति लोगों के मन में आदर का भाव उत्पन्न होगा।

मेषलग्न मे जन्मे जातकों के सांसारिक कार्य यद्यपि विलम्ब से सिद्ध होंगे परन्तु गौरव एवं सम्मान मृत्युपर्यन्त बना रहेगा। कार्य क्षेत्र में आपको परिश्रम से उन्नति प्राप्त होगी तथा

सामाजिक जनों के मध्य भी समय पर मान सम्मान मिलता रहेगा। आपको अपनी प्रवृत्ति का अन्य जनों के समक्ष सादगी पूर्ण प्रदर्शन करना चाहिए तथा इसमें अनावश्यक दिखावे का समावेश नहीं होना चाहिए। इस प्रकार से जीवन में आपको इच्छित सुख, ऐश्वर्य एवं वैभव की प्राप्ति होगी। इस प्रकार आप एक परिश्रमी, तेजस्वी, कार्य निकालने में चतुर परन्तु मन्द गति से कार्य करने वाले व्यक्ति होंगे तथा जीवन में आवश्यक सुखों का उपभोग करने में समर्थ होंगे।

मेषलग्न के जातक बहुत ही परिश्रमी व साहसिक कार्यों में रुचि लेने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति प्राय: खेल-कूद, शिकार, सैनिक व पुलिस विभाग, मशीन, भट्टी व ज्वलनशील पदार्थों तथा धातु रंजन इत्यादि वस्तुओं में रुचि लेते देखे गए हैं।

धार्मिक विचारों में मेषलग्न वालों की दृष्टिकोण अन्य लोगों से भिन्न होता है। आप शक्ति के उपासक हैं। ऐसे लोग अपने बात के धनी होते हैं तथा लग्न अग्नितत्त्व प्रधान होते हुए भी ऐसे जातक बात के धनी एवं शर्त के कट्टर होते हैं। किसी से किसी हद तक प्राय: झगड़ा करना पसन्द नहीं करते परन्तु यदि कोई जब सीमा उल्लंघन करने की चेष्टा करता है तो उसे जबरदस्त सबक सिखाए बिना नहीं रहते। युद्ध कला में प्राय: ऐसे व्यक्ति निपुण होते हैं। भूमि व कोर्ट-कचहरी संबंधी कार्यों में ये प्राय: विजय प्राप्त करते हैं।

यदि आपका जन्म 21 मार्च व 20 अप्रैल के मध्य हुआ है तो आपका भाग्योदय निश्चित रूप से 28 वर्ष के पश्चात संभव है। आप पूर्णत: स्वनिर्मित व्यक्ति हैं। आप अपना भाग्य स्वयं बनाने वाले व्यक्तियों में से हैं। परन्तु याद रखें बिना परिश्रम से आपको विशेष लाभ होने की संभावना नहीं है।

चंद्रमा यदि कृत्तिका नक्षत्र में हो

कृतिका नक्षत्र-स्वामी सूर्य, **राशि स्वामी**–मंगल

कृत्तिका चरण	चरणों के अंश	नवांश चरण स्वामी	अंशों के उपस्वामी व अंश
प्रथम	26.41 से 30.00	गु.	सू/सू 1. 26.40 से 27.20.00 सू/चं. 2. 27.20.00 से 28.26.00 सू/मं. 3. 26.26.40 से 29.13.20 सू/रा 4. 29.13.20 से 30.00.00

कृत्तिका का प्रथम चरण में होगा तो व्यक्ति सुंदर गुण से युक्त रहेगा। इसका स्वामी गुरु है। अत: गुरु+चंद्रयोग लक्ष्मीयोग+मंगल कीर्ति योग भी बनेगा। अत: श्रेष्ठफल मिलेगा। अश्विनी, भरणी व कृत्तिका के प्रथम चरण के संयोग से मेष राशि बनती है। अत: मेषलग्न या मेष राशि वालों का स्वभाव में उपरोक्त नक्षत्रों के गुणों का समन्वय होगा ही।

मेषलग्न के बारे में विशेष ज्ञातव्य तथ्य

- ❑ मेषलग्न में बैठा मंगल स्वगृही होगा। अत: मांगलिक दोष कम देगा।
- ❑ मंगल अश्विनी नक्षत्र में होगा तो किसी से बिल्कुल नहीं बनेगी।
- ❑ मेष में मंगल, मंगल दोष नहीं बनाता है।
- ❑ लग्न में चंद्र हो, मंगल भी हो तो मांगलिक दोष नहीं होगा।
- ❑ लग्न में गुरु+बुध हो तो मांगलिक दोष नहीं होगा। मंगल+गुरु+चंद्र+बुध युति हो तो दोष नहीं होगा।
- ❑ सूर्य लग्न में होगा तो उच्च का होकर भी पंचमेश है। वैधव्य दोष पूर्वश्लोकानुसार नहीं देगा। पर अंग में कुछ दोष करेगा।
- ❑ लग्न में शनि नीच का होकर बहुत दु:ख व संघर्ष देगा। शनि अग्नितत्त्व राशि में होने से स्वभाव कुछ मिलनसार पर ईर्ष्यालु होगा। ऐसी महिला जातक सरल व वचन की पक्की प्रमाणिकता वाली होगी। परन्तु साहस के काम क्रोध, झगड़ा और वाद-विवाद में रुचि वाली होगी। काम में कुशल होगी पर हमेशा असंतुष्ट रहेगी। स्वयं कमाएगी या नौकरी वाली होगी।
- ❑ लग्न में केवल मंगल+शनि की युति हो तो जातक स्वयं आत्महत्या कर सकता है। या आकस्मिक मृत्यु, कारागारवास हो सकता है।
- ❑ शनि+चंद्र का योग लग्न में हो तो दुष्ट स्वभाव की महिला होगी व चरित्र भ्रष्ट भी हो सकती है।
- ❑ लग्न में कोई ग्रह न हो तो ऐसा जातक धर्म परायण, समाज में प्रगति वाला जाति में आदर की दृष्टि से देखा जाने वाला होगा।

मेषलग्न की महिला जातक

इस लग्न में जन्मी महिला के शरीर का रंग चंद्रमा के नवांश के अनुसार होता है। चंद्रमा जिस नवांश में हो उसके अधिपति के अनुसार रंग का विचार प्राय: करना चाहिए। परन्तु जन्माक्षर बनाते वक्त ज्योतिषी प्राय: जन्म व राशि कुण्डली ही लिखते हैं। अत: जन्म की राशि और लग्न के मिश्रण से स्वभाव व रंग निरूपण करना प्रभावी रहता है। जन्म लग्न को देखने वाले ग्रहों की दृष्टि का समन्वय भी चरित्र-चित्रण सहायक होगा।

मेषलग्न में उत्पन्न नारी हमेशा शुद्ध स्वभाव की होगी। परन्तु वह दूसरों पर दोषारोपण करने वाली होगी। हर काम में उतावली होगी। उसे क्रोध भी शीघ्र आएगा, ठंडा भी जल्दी होगी पर गर्मी की चपलता दिल में उठी हुई रहती है। इसकी प्रकृति पितृ प्रधान होती है। वह बातचीत करते करते कड़वे वाक्यों का प्रयोग करने में नहीं हिचकती। अपने भाई-बहनों से विशेष लगाव नहीं रहता है। प्राय: अपने परिवार में बड़ी (ज्येष्ठ) होती है।

- ❑ लग्न व चंद्र विषम राशि में हो तो स्त्री पुरुष की तरह कठोर स्वभाव वाली व पुरुष के समान साहसिक प्रकृति की होगी। मेष में मेष का चंद्र यह फल करेगा। शुभ दृष्टि व

पाप दृष्टि से चरित्र व स्वभाव में अंतर पड़ेगा। शुभ दृष्ट हो तो सुशीला अन्यथा दुष्ट स्वभाव की होगी।

- लग्नस्थ मंगल आठवें भाव पर दृष्टि करके एक्सीडेंट योग बनाएगा, यदि अनियंत्रित है। अर्थात् मंगल किसी भी ग्रह की दृष्टि से रहित हो।
- मेष राशि का मंगल लग्न में सिर दर्द व रक्त पीड़ा का अनुभव कराएगा।
- मेष राशि का मंगल निर्भय व शेर की तरह पराक्रम कराएगा। क्रोधी व व्यसनी बनाएगा। तीखे पदार्थ खाने में रुचि होगी। आग का भय रहेगा। पित्त रोग होंगे। स्वधर्म में रुचि नहीं होगी, सुधारक मतों का पक्षपात करना यह अनुभव में आएगा।
- मंगल सूर्य या चंद्र ये तीनों ही साथ हो तो व्यक्ति बहुत क्रूर व अल्पायु होगा। परन्तु किम्बहुना योग के कारण राजा तुल्य ऐश्वर्य भोगेगा।
- शरीर हट्टा-कट्टा रहेगा, बहुत खून का होना मेष का मंगल करेगा। बचपन में पेट के रोग व दांतों का रोग भी देगा।
- लग्न में मंगल वाली स्त्री स्वाभिमानी, पराक्रमी व सुंदर होगी तथा चुनरी मंगल वाली महिला होगी।
- लग्न में पाप ग्रह–सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु ये कुण्डली को मांगलिक तुल्य बनाते हैं। सप्तम पर पूर्ण दृष्टि करके वैवाहिक सुख में भी कमी करते हैं।
- **मूर्तो करोति विधवादिनकृत कुजश्च।** या फिर लग्नस्थित दिनकर **कुरूते अंग पीड़ाम् भूमि सुतो वितनुते रुधिर प्रकोपम्।** से लग्न में मंगल व सूर्य की स्थिति को कष्टकारक सर्वत्र माना गया है।
- "**कुजाष्टमे कुटीला मृगांक्षी अनंगरंगा परपुरुषसंगा, मृतावयेषु कुलधर्म भंगा:**" अर्थात् जिस स्त्री का मंगल आठवें में हो वह मृगनयनी होती है, कुटिल होगी। नित-नए वस्त्राभूषण व श्रृंगार करने वाली होती है तथा परपुरुष के बहकावे में शीघ्र आती है। कई बार अंतर्जातीय विवाह या परपुरुषप्रेम के कारण बदनाम होने से कुल का गौरव नष्ट कर देती है।
- लग्न में राहु स्थित हो तो 5वें दृष्टि करके संतान को बाधा करेगी। सातवें दृष्टि से पति में पृथकता देगी। नवमी दृष्टि से भाग्य हीन भी करेगी।
- लग्न में केतु हो तो व्यक्ति के शरीर का कोई अंग टूटता है या रोग बढ़ता है या अपघात होता है। लग्नगत केतु के फल प्राय: सभी ज्योतिषियों ने अशुभ बताए हैं। इससे बांधवों में कष्ट होता है दुर्जनों से व्यक्ति को भय रहता है। मानसिक चिंता व उद्वेग बढ़ते हैं। वात पीड़ा होती है।
- वैसे मेष राशि तीन नक्षत्रों के समूह से पल्लवित होती है। अत: संपूर्ण राशि में केतु+शुक्र+मंगल+सूर्य का खास तौर पर प्रभाव सिमटा रहता है। अत: स्त्री के स्वभाव में कुछ क्रोध लड़ने-झगड़ने, हर बात को अन्यथा ले लेने का स्वभाव होता है। ऐसी महिला बहुत उतावली व तुरंत परिणाम चाहने वाली होती है। रंग सुंदर पर कुछ गेहुंआ

ही होगा, ललाई उसमें रहेगी। यह बालावस्था में ही अपने माता-पिता के पास कम रहने वाली होगी। वात-पित्त रोग से पीड़ित भी रहेगी। स्वभाव से कंजूस भी होगी। अपनी वस्तु को किसी को कम ही देना पसंद करेगी। खर्च भी कम करेगी। संग्रह का शौक होगा। इसके जीवन में परदेश या विदेश यात्रा के अवसर प्राप्त होते रहेंगे। पति राजकीय अधिकारी, नेता, पुलिस अफसर, मिलट्री में अधिकारी, इंजीनियर, फौजदारी वकील, समाज का प्रभावशाली व्यक्ति होगा। व्यापारी हो तो लाल रंग की वस्तुओं का फैन्सी स्टोर हो सकता है। संतान कई हो सकती हैं। गर्भपात भी संभव है। जीवन में मृत्युभय (अपघात) तीन बार आता है। तीसरे वर्ष अग्नि से, 7वें वर्ष में कुत्ते या जानवर के काटने का और 30वें वर्ष में चोट का। अत: खतरों से बचने के बाद 68 वर्ष तक अन्य कोई मारक योग नहीं। मृत्यु पित्त दोष या गिरने से या विष खाने से संभावित होती है। विद्रोह की भावना प्रबल होती है। चोरी-छिपे बातें सुनने की आदत होती है।

मेषलग्न में रत्न धारण का वैज्ञानिक विवेचन
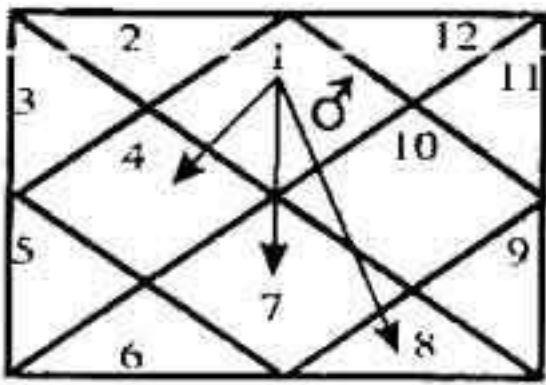
1. माणिक्य–मेषलग्न में सूर्य पंचम त्रिकोण का स्वामी है और लग्नेश मंगल का मित्र है। अत: मेषलग्न के जातक को बुद्धि-बल प्राप्त करने, आत्मोन्नति के लिए संतान-सुख, प्रसिद्धि, राज्य-कृपा प्राप्ति के लिए सदा माणिक्य धारण करना चाहिए। सूर्य की महाद्रशा में उसको धारण करना, अत्यंत लाभदायक होगा।

2. मोती–मेषलग्न की कुण्डली में चन्द्र चतुर्थ भाव का स्वामी है। चतुर्थ चन्द्र लग्नेश मंगल का मित्र है। अत: मोती धारण करने से मेषलग्न के जातक मानसिक शान्ति, मातृ सुख, विद्या-लाभ, गृह-भूमि लाभ आदि प्राप्त कर सकते हैं। मोती चन्द्र की महादशा में विशेष रूप से फलप्रद होगा। यदि मोती लग्नेश मंगल के रत्न मूंगे के साथ पहना जाए तो और भी अधिक लाभकर होगा।

3. मूंगा–मंगल लग्न का स्वामी है। अत: मेषलग्न के जातक को मूंगा आजीवन धारण करना चाहिए। उसके धारण करने से आयु, बुद्धि, स्वास्थ्य में उन्नति, यश मान प्राप्त होगा तथा जातक सभी प्रकार सुखी होगा। यह इस जातक का 'जीवन रत्न' है।

4. पन्ना–मेषलग्न के लिए बुध दो अनिष्ट भावों–तृतीय और षष्ठ का स्वामी है। अत: इस लग्न के जातक को कभी नहीं पहनना चाहिए।

5. पुखराज–मेषलग्न के लिए गुरु नवम (त्रिकोण) और द्वादश भाव का स्वामी है। नवम का स्वामी होने के कारण गुरु इस लग्न के लिए शुभ ग्रह माना गया है। अत: पुखराज धारण करने से जातक की बुद्धि, बल, ज्ञान, विद्या में उन्नति, धन, मान-प्रतिष्ठा और भाग्य में उन्नति होती है। गुरु महादशा में पुखराज धारण करना ज्यादा लाभदायक सिद्ध होगा। यदि इसे मूंगे के साथ धारण किया जाए तो बहुत लाभप्रद होगा।

6. **हीरा**–मेषलग्न के लिए शुक्र द्वितीय और सप्तम स्थान का स्वामी होने के कारण प्रबल मारकेश है। इसके अतिरिक्त लग्नेश मंगल और शुक्र में परस्पर मित्रता नहीं है। तब भी कुण्डली में यदि शुक्र स्वगृही अपनी उच्चराशि में हो या यह शुभ स्थिति में हो तो शुक्र की महादशा में हीरा धारण करने से धन-प्राप्ति, दाम्पत्य-सुख, विवाह-सुख हो सकता है। परन्तु मेषलग्न के जातक को हीरा धारण करने से बचना चाहिए।

7. **नीलम**–मेषलग्न के लिए शनि दशम और एकादश का स्वामी है। दोनों शुभ भाव हैं परन्तु, एकादश भाव के स्वामित्व के कारण शनि को लग्न के लिए शुभ ग्रह नहीं माना है। परन्तु शनि द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, नवम, दशम, एकादश या लग्न में स्थित हो तो शनि की महादशा में नीलम धारण करने से में लाभ हो सकता है। वैसे नीलम नहीं पहनना चाहिए क्योंकि शनि मंगल का शत्रु है।

विशिष्ट उद्देश्यपूरक संयुक्त रत्न

1. **सन्तान हेतु**–मणिक्य, मूंगा (सवा चार रत्ती)।
2. **भाग्योदय हेतु**–पुखराज (सवा पांच रत्ती), मूंगा (सवा चार रत्ती)।
3. **आरोग्य हेतु**–मूंगा (सवा चार रत्ती), माणिक (सवा चार रत्ती)।
4. **स्थाई लक्ष्मी हेतु**–हीरा (सवा चार रत्ती), पुखराज (सवा पांच रत्ती)।

नक्षत्रों पर विशेष फलादेश

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युन्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
1	अश्विनी	चू,चे,चो,ला	मेष	मंगल	अश्व	देव	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	आद्य	चतु.	सोना	सिंह 3 हि. 1	केतु	7
2.	भरणी	ली,लू,ले,लो	मेष	मंगल	गज	मनु.	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	शुक्र	20
3.	कृतिका	अ	मेष	मंगल	मीढ़ा	राक्षस	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरुड़	सूर्य	6
3.	कृतिका	ई,उ,ए	वृष	शुक्र	मीढ़ा	राक्षस	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरुड़	सूर्य	6
4.	रोहिणी	ओ,वा,वी,वू	वृष	शुक्र	सर्प	मनु.	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	ग. 1 हि. 3	चन्द्र	10
5.	मृगशिरा	वे,वो	वृष	शुक्र	सर्प	देव	वैश्य	पूर्व	भूमि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	मंगल	7
5.	मृगशिरा	का,की	मिथुन	बुध	सर्प	देव	शूद्र	पूर्व	वायु	मध्य	द्विप	सोना	बिलाड़	मंगल	7
6.	आर्द्रा	कु,घ,ङ,छ	मिथुन	बुध	श्वान	मनु.	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि. 2 सि.1	राहु	18
7.	पुनर्वसु	के,को,ह	मिथुन	बुध	मार्जार	देव	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि.2 मी. 1	गुरु	16
7.	पुनर्वसु	ही	कर्क	चन्द्र	मार्जार	देव	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चांदी	मीढ़ा	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युञ्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
8.	पुष्य	ह,हे,हो,डा	कर्क	चन्द्र	मीढ़ा	देव	विप्र	मध्य	जल	मध्य	द्विप	चांदी	मि. 3 श्वा. 1	शनि	19
9.	आश्लेषा	डी,डू,डे,डो	कर्क	चन्द्र	मार्जार	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चांदी	श्वान	बुध	17
10.	मघा	मा,मी,मू,मो	सिंह	सूर्य	मूषक	राक्षस	क्षत्रीय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	मूषक	केतु	7
11.	पूर्व फा.	मो,टा,टी,टू	सिंह	सूर्य	मूषक	मनुष्य	क्षत्रीय	मध्य	वायु	मध्य	चतु.	चांदी	मू. 3 श्वा. 3	शुक्र	20
12	उ. फा.	टे	सिंह	सूर्य	गौ	मनुष्य	क्षत्रीय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	श्वान	सूर्य	6
12.	उ. फा.	टो,पा,पी	कन्या	बुध	गौ	मनुष्य	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	श्वा. 1 मू. 2	सूर्य	6
13.	हस्त	पू,ष,ण,ठ	कन्या	बुध	भैंस	देव	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	मू. 1 मी. 1 श्वा. 2	चन्द्र	10
14.	चित्रा	पे,पो	कन्या	बुध	व्याघ्र	राक्षस	वैश्य	मध्य	भूमि	मध्य	द्विपद	चांदी	मूषक	मंगल	7
14.	चित्रा	रा,री	तुला	शुक्र	व्याघ्र	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	मध्य	द्विपद	चांदी	हरिण	मंगल	7
15.	स्वाति	रू,रे,रो,ता	तुला	शुक्र	भैंस	देव	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	चांदी	हि. 3 सर्प 1	राहु	18
16.	विशाखा	ती,तू,ते	तुला	शुक्र	मध्य	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	सर्प	गुरु	16
16.	विशाखा	तो	वृश्चिक	मंगल	मध्य	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	अन्त्य	कीट	ताम्बा	सर्प	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युन्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
17.	अनुराधा	ना,नी,नू,ने	वृश्चिक	मंगल	मृग	देव	विप्र	मध्य	जल	व्याघ्र	कीट	ताम्बा	सर्प	शनि	19
18.	ज्येष्ठा	नो,या,यी,यू	वृश्चिक	मंगल	मृग	राक्षस	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	कीट	ताम्बा	सर्प 1 हिरण 3	बुध	17
19.	मूल	भे,भो,भा,भी	धनु	गुरु	श्वान	राक्षस	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	आद्य	द्विपद	ताम्बा	हि. 2 मूषक 2	केतु	7
20.	पूर्वाषाढ़ा	भू,धा,फा,ढा	धनु	गुरु	कपि	मनुष्य	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	मध्य	द्विपद	ताम्बा	1 मू 1 स 1 मू2 1 श्वान	शुक्र	20
21.	उ. षा.	भे	धनु	गुरु	नकुल	मनुष्य	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	मूषक	सूर्य	6
21.	उ. षा.	भो,जो,जी	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	1 मू. 2 सिं.	सूर्य	6
22.	अभिजित्	जू,जे,जो,खा	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	सिं. 3 वि. 1	×	×
23.	श्रवण	खी,खू,खे,खो	मकर	शनि	कपि	देव	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	चन्द्र	10
24.	धनिष्ठा	गा,गी	मकर	शनि	सिंह	राक्षस	वैश्य	अन्त्य	भूमि	मध्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
24.	धनिष्ठा	गू, गे	कुम्भ	शनि	सिंह	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	मध्य	द्विपद	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
25.	शतभिषा	गो,सा,सी,सू	कुम्भ	शनि	अश्व	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	1 बि. 3 मी	राहु	18
26.	पूर्वा भा.	से,सो,द	कुम्भ	शनि	सिंह	मनुष्य	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	2 मी. 1 सर्प	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युन्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
26.	पूर्व भा.	दी	मीन	गुरु	सिंह	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	जल	लोहा	सर्प	गुरु	16
27.	उ. भा.	दू,थ,झ,ञ	मीन	गुरु	गौ	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	मध्य	जल	लोहा	2 सर्प 2 सिंह	शनि	19
28.	रेवती	दे,दो,चा,ची	मीन	गुरु	गज	देव	विप्र	पूर्व	जल	अन्त्य	जल	सोना	2 सर्प 2 सिंह	बुध	17

विभिन्न नक्षत्रों का ग्रहों के साथ सम्बन्ध

	क्र.	नक्षत्र नाम	नक्षत्र देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मेष	1	अश्विनी	अश्विनी कुमार	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	सम
	2.	भरणी	यम	शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
	3.	कृतिका	अग्नि	सूर्य	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
वृष	4.	रोहिणी	ब्रह्मा	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	5.	मृगशिरा	चन्द्र	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
मिथुन	6.	आर्द्रा	रुद्र	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	मित्र
	7.	पुनर्वसु	अदिति	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
कर्क	8.	पुष्य	गुरु	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र
	9.	आश्लेषा	सूर्य	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
सिंह	10.	मघा	पितृ	केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	सम
	11.	पू. फा.	भग	शुक्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	मित्र
	12	उ. फा.	अर्यमण	सूर्य	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
कन्या	13.	हस्त	सूर्य	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	14.	चित्रा	त्वष्टा	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु

	क.	नक्षत्र नाम	नक्षत्र देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तुला	15.	स्वाति	वायु	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	मित्र
	16.	विशाखा	इन्द्राग्नि	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शनि	17.	अनुराधा	मित्र	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र
	18.	ज्येष्ठा	इन्द्र	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	सम
धनु	19.	मूला	नैऋति	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	सम
	20.	पू. षा.	उदक	शुक्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	मित्र
मकर	21.	उ. षा.	विश्वेदेवा	सूर्य	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	22.	अभिजित्	ब्रह्मा										
	23.	श्रवण	विष्णु	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	24.	धनिष्ठा	अष्टावसु	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	25.	शतभिषा	वरुण	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	मित्र
कुंभ	26.	पूर्वा भा.	अजैकचरण	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	27.	उ. भा.	अहिर्बुध्य	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र
मीन	28.	रेवती	पूषा	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र

नक्षत्र चरण, नक्षत्रस्वामी एवं नक्षत्र चरणस्वामी

मेष राशि											
1. अश्विनी (केतु)				2. भरणी (शुक्र)				3. कृतिका (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
चु.	0/3/20/0	1	मं.	ली.	0/16/40/0	1	सू.	आ	0/30/0/0	1	गु.
चे.	0/6/40/0	2	शु.	लू	0/20/0/0	2	बु.	–	–	–	–
चो	0/10/0/0	3	बु.	ले.	0/23/20/0	3	शु.	–	–	–	–
ला	0/13/20/4/	4	चं.	लो	0/26/40/0	4	मं.	–	–	–	–
वृष राशि											
3. कृत्तिका (सूर्य)				4. रोहिणी (चन्द्र)				5. मृगशिरा (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ई	1/30/20/0	2	श.	ओ	1/13/20/0	1	मं.	वे	0/20/40/1	1	सू.
उ	1/6/40/0	3	श	वा	1/16/40/0	2	शु.	वो	0/30/0/0	2	बु.
				वी	1/20/0/0	3	बु.	–	–	–	–
ए	1/10/0/0	4	मं.	च	1/23/20/0	4	चं.	–	–	–	–

मिथुन राशि

5. **मृगशिरा** (मंगल)				6. **आर्द्रा** (राहु)				7. **पुनर्वसु** (गुरु)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
का	2/3/20/0	3	शु.	कु	2/10/0/0	1	गु.	के	2/23/20/0	1	मं.
की	2/6/40/0	4	मं.	घ	2/13/20/0	2	श.	को	2/26/40/0	2	शु.
				ड़	2/16/40/0	3	श.	हा	2/30/0/0	3	बु.
				छ	2/20/0/0	4	गु.	–	–	–	–

कर्क राशि

7. **पुनर्वसु** (गुरु)				8. **पुष्य** (शनि)				9. **आश्लेष** (बुध)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ही	3/30/20/0	4	चं.	हू	3/6/40/0	1	सू.	डी	3/20/0/0	1	गु.
–	–	–	–	हे	3/10/0/0	2	बु.	डू	3/23/20/0	2	श.
–	–	–	–	हो	3/13/20/0	3	शु.	डे	3/26/40/0	3	श.
–	–	–	–	डा	3/16/40/0	4	मं.	डो	3/30/0/0	4	गु.

सिंह राशि

10. **मघा** (केतु)				11. **पूर्वाफाल्गुनी** (शुक्र)				12. **उत्तरफाल्गुनी** (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
मा	4/3/20/0	1	मं.	मो	4/16/40/0	1	सू.	टे	4/30/0/0	1	गु.
मी	4/6/40/0	2	शु.	टा	4/20/0/0	2	बु.	–	–	–	–
मू	4/10/0/0	3	बु.	टी	4/23/20/0	3	शु.	–	–	–	–
मे	4/13/20/0	4	चं.	टू	4/26/40/0	4	म.	–	–	–	–

कन्या राशि

12. **उत्तराफाल्गुनी** (सूर्य)				13. **हस्त** (चन्द्र)				14. **चित्रा** (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
टो	5/3/20/0	2	श.	पू	5/13/20/0	1	म.	पे	5/26/40/0	1	सू.
पा	5/6/40/0	3	श.	ष	5/16/40/0	2	शु.	पे	5/30/0/0	2	बु.
पी.	5/10/0/0	4	गु.	ण	5/20/0/0	3	बु.	–	–	–	–
–	–	–	–	ठ	5/23/20/0	4	च.	–	–	–	–

तुला राशि

14. चित्रा (मंगल)

अक्षर		नरण	स्वामी
रा	6/3/20/0	3	शु.
री	6/6/40/0	4	मं.
–	–	–	–
–	–	–	–

15. स्वाति (राहु)

अक्षर		चरण	स्वामी
रू	6/10/0/0	1	गु.
रे	6/13/20/0	2	श.
रो	6/16/40/0	3	श.
ता	6/20/0/0	4	गु.

16. विशाखा (गुरु)

अक्षर		चरण	स्वामी
ती	6/23/20/0	1	मं.
तू	6/26/40/0	2	शु.
ते	6/30/0/0	3	बु.
–	–	–	–

वृश्चिक राशि

16. विशाखा (गुरु)

अक्षर		चरण	स्वामी
तो	7/3/20/0	4	चं.
–	–	–	–
–	–	–	–
–	–	–	–

17. अनुराधा (शनि)

अक्षर		चरण	स्वामी
ना	7/6/40/0	1	सू.
नी	7/10/0/0	2	बु.
नू	7/13/20/0	3	शु.
ने	7/16/40/0	4	मं.

18. ज्येष्ठा (बुध)

अक्षर		चरण	स्वामी
नो	7/20/0/0	1	गु.
या	7/23/20/0	2	श.
यी	7/26/40/0	3	श.
यू	7/30/0/0	4	शु.

धनु राशि

17. मूल (केतु)

अक्षर		चरण	स्वामी
ये	8/3/20/0	1	मं.
यो	8/6/40/0	2	शु.
या	8/10/0/0	3	बु.
यी	8/13/20/0	4	चं.

18. पूर्वाषाढ़ा (शुक्र)

अक्षर		चरण	स्वामी
भू	8/16/40/0	1	सू.
धा	8/20/0/0	2	बु.
फा	8/23/20/0	3	शु.
ढा	8/26/40/0	4	मं.

21. उत्तराषाढ़ा (सूर्य)

अक्षर		चरण	स्वामी
भे	8/30/0/0	1	गु.
–	–	–	–
–	–	–	–
–	–	–	–

मकर राशि

21. उत्तराषाढ़ा (सूर्य)

अक्षर		चरण	स्वामी
भो	9/3/20/0	2	श.
जा	9/6/40/0	3	श.
जी	9/10/0/0	4	गु.
–	–	–	–

22. श्रवण (चन्द्र)

अक्षर		चरण	स्वामी
खी	9/13/20/0	1	मं.
खू	9/16/40/0	2	शु.
खे	9/20/0/0	3	बु.
खो	9/23/20/0	4	चं.

23. धनिष्ठा (मंगल)

अक्षर		चरण	स्वामी
गा	9/26/40/0	1	सू.
गी	9/30/0/0	2	बु.
–	–	–	–
–	–	–	–

कुंभ राशि

23. धनिष्ठा (मंगल)				24. शतभिषा (राहु)				26. पूर्वाभाद्रपद (गुरु)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
गू	10/3/20/0	3	शु.	गो	10/10/0/0	1	गु.	ते	10/23/20/0	1	मं.
गे	10/6/40/0	4	मं.	ता	10/13/20/0	2	श.	तो	10/26/40/0	2	श.
–	–	–	–	ती	10/16/40/0	3	श.	दा	10/30/0/0	3	बु.
–	–	–	–	तू	10/19/0/04	4	गु.	–	–	–	–

मीन राशि

26. पूर्वाभाद्रपद (गुरु)				27. उत्तराभाद्रपद (शनि)				28. रेवती (बुध)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
दी	10/3/20/0	4	चं.	दू	11/6/40/4	1	सू.	दे	11/20/0/0	1	गु.
–	–	–	–	थ	11/10/0/0	2	बु.	दो	11/23/20/0	2	श.
–	–	–	–	झ	11/13/20/0	3	शु.	चा	11/26/40/0	3	श.
–	–	–	–	ञ	11/16/40/0	4	गु.	ची	11/30/0/0	4	गु.

मेषलग्न पर अंशात्मक फलादेश

मेषलग्न, अंश 0 से 1

1. **लग्न नक्षत्र**–अश्विनी	2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–0/0 से 3/20 तक	4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–चतुष्पद	6. **योनि**–अश्व
7. **गण**–देव	8. **नाड़ी**–आद्य
९. **नक्षत्र देवता**–अश्विन कुमार	10. **वर्णाक्षर**–चू
11. **वर्ग**–सिंह	12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु	14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र	16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–उत्तम

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–उत्तम

18. **प्रधान विशेषता**–अश्विन्या: प्रथमे पादे जातो भवति तस्कर:।

–जातक सारदीप

अश्विनी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति गुण, बुद्धि एवं प्रज्ञा से युक्त, धन-ऐश्वर्य से सम्पन्न, विनयी, यशस्वी व सुखी होते हैं। ये अंतर्मुखी व धैर्यशाली होते हैं। दूसरों लोगों की बातों पर आसानी से विश्वास नहीं करते। अश्विनी के प्रथम चरण में जन्म होने के कारण, जातक में स्वभावत: बिना पूछे अन्य लोगों की वस्तुएं उठाने की आदत होती है।

लग्न जीरो से एक अंश के भीतर होने से मृतावस्था में है, कमजोर है। फिर भी लग्न नक्षत्र स्वामी केतु लग्नेश मंगल का मित्र होने से जातक को केतु की दशा अच्छी जाएगी।

मेषलग्न, अंश 1 से 2

1. **लग्न नक्षत्र**–अश्विनी	2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–0/0 से 3/20 तक	4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–चतुष्पद	6. **योनि**–अश्व
7. **गण**–देव	8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अश्विन कुमार	10. **वर्णाक्षर**–चू

11. **वर्ग**–सिंह
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–उत्तम
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–उत्तम
18. **प्रधान विशेषता**–अश्विन्या: प्रथमे पादे जातो भवति तस्कर:।

–जातक सारदीप

अश्विनी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति गुण, बुद्धि एवं प्रज्ञा से युक्त, धन-ऐश्वर्य से सम्पन्न विजयी, यशस्वी व सुखी होते हैं। ये अंतर्मुखी व धैर्यशाली होते हैं। दूसरों लोगों की बातों पर आसानी से विश्वास नहीं करते। अश्विनी के प्रथम चरण में जन्म होने के कारण, जातक में स्वभावत: बिना पूछे अन्य लोगों की वस्तुएं उठाने की आदत होती है।

लग्न एक से दो अंश का होने से बलवान है। नक्षत्र स्वामी केतु लग्नेश का मित्र होने से इस जातक को केतु की दशा अच्छी जाएगी। मंगल ग्रह भी शुभफल देगा।

मेषलग्न, अंश 2 से 3

1. **लग्न नक्षत्र**–अश्विनी
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–0/0 से 3/20 तक
4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–अश्व
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अश्विन कुमार
10. **वर्णाक्षर**–चू
11. **वर्ग**–सिंह
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–उत्तम
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–उत्तम
18. **प्रधान विशेषता**–अश्विन्या: प्रथमे पादे जातो भवति तस्कर:।

–जातक सारदीप

अश्विनी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति गुण, बुद्धि एवं प्रज्ञा से युक्त, धन-ऐश्वर्य से सम्पन्न विजयी, यशस्वी व सुखी होते हैं। ये अंतर्मुखी व धैर्यशाली होते हैं। दूसरों लोगों की बातों पर आसानी से विश्वास नहीं करते। अश्विनी के प्रथम चरण में जन्म होने के कारण, जातक में स्वभावत: बिना पूछे अन्य लोगों की वस्तुएं उठाने की आदत होती है।

लग्न दो से तीन अंश के भीतर होने से बलवान है। जन्म नक्षत्र स्वामी केतु लग्नेश मंगल का मित्र होने के कारण इस जातक को केतु एवं मंगल दोनों की दशा अच्छा फल देगी।

मेषलग्न, अंश 3 से 4

1. **लग्न नक्षत्र**–अश्विनी
2. **नक्षत्र पद**–1-2

3. **नक्षत्र अंश**–0/0 से 3/20 तक
4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–अश्व
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अश्विन कुमार
10. **वर्णाक्षर–चू**
11. **वर्ग**–सिंह
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–उत्तम
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–उत्तम
18. **प्रधान विशेषता**–अश्विन्या: प्रथमे पादे जातो भवति तस्कर:।

–जातक सारदीप

अश्विनी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति गुण, बुद्धि एवं प्रज्ञा से युक्त, धन-ऐश्वर्य से सम्पन्न विजयी, यशस्वी व सुखी होते हैं। ये अंतर्मुखी व धैर्यशाली होते हैं। दूसरों लोगों की बातों पर आसानी से विश्वास नहीं करते। अश्विनी के प्रथम चरण में जन्म होने के कारण, जातक में स्वभावत: बिना पूछे अन्य लोगों की वस्तुएं उठाने की आदत होती है।

लग्न तीन से चार अंश के भीतर होने से उदित अशों में बलवान है। जन्म नक्षत्र स्वामी केतु लग्नस्वामी मंगल का भिन्न होने के कारण, इस जातक को केतु एवं मंगल दोनों की दशा अच्छा फल देगी।

मेषलग्न, अंश 4 से 5

1. **लग्न नक्षत्र**–अश्विनी
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–3/20 से 6/40 तक
4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–अश्व
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अश्विन कुमार
10. **वर्णाक्षर**–चे
11. **वर्ग**–सिंह
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्रता
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्रता
18. **प्रधान विशेषता**–'द्वितीये चाल्पकर्मा च'

–जातक सारदीप

अश्विनी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति गुण, बुद्धि एवं प्रज्ञा से युक्त, धन-ऐश्वर्य से सम्पन्न विजयी, यशस्वी व सुखी होते हैं। ये अंतर्मुखी व धैर्यशाली होते हैं। दूसरों लोगों की बातों पर आसानी से विश्वास नहीं करते। अश्विनी के दूसरे चरण में जन्म होने के कारण, जातक कठोर परिश्रम में कम विश्वास रखेगा और छोटे-छोटे, अल्प अवधि के काम करने में रुचि रखेगा।

लग्न चार से पांच अंशों के भीतर उदित अंशों में होने से बलवान है। जन्म नक्षत्र स्वामी केतु, लग्नस्वामी मंगल का मित्र होने के कारण, इस जातक को केतु एवं मंगल दोनों की दशा अच्छा फल देगी।

मेषलग्न, अंश 5 से 6

1. **लग्न नक्षत्र**–अश्विनी
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–3/20 से 6/40 तक
4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–अश्व
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अश्विन कुमार
10. **वर्णाक्षर**–चे
11. **वर्ग**–सिंह
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्रता
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्रता
18. **प्रधान विशेषता**–'द्वितीये चाल्पकर्मा च'

–जातक सारदीप

अश्विनी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति गुण, बुद्धि एवं प्रज्ञा से युक्त, धन-ऐश्वर्य से सम्पन्न विजयी, यशस्वी व सुखी होते हैं। ये अंतर्मुखी व धैर्यशाली होते हैं। दूसरों लोगों की बातों पर आसानी से विश्वास नहीं करते। अश्विनी के दूसरे चरण में जन्म होने के कारण, जातक कठोर परिश्रम में कम विश्वास रखेगा और छोटे-छोटे, अल्प अवधि के काम करने में रुचि रखेगा।

लग्न पांच से छः अंशों के भीतर उदित अंशों में होने से बलवान है। जन्म नक्षत्र स्वामी केतु, लग्न स्वामी मंगल का मित्र है। नक्षत्र चरण स्वामी शुक्र भी केतु से मित्रभाव रखता है। फलतः ऐसे जातक को मंगल, शुक्र एवं केतु की दशाएं शुभ फलप्रद होंगी।

मेषलग्न, अंश 6 से 7

1. **लग्न नक्षत्र**–अश्विनी
2. **नक्षत्र पद**–2-3
3. **नक्षत्र अंश**– 3/20 से 6/40 तक
4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–अश्व
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अश्विन कुमार
10. **वर्णाक्षर**–चे
11. **वर्ग**–सिंह
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्रता

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—मित्रता

18. **प्रधान विशेषता**—'द्वितीये चाल्पकर्मा च'

—जातक सारदीप

अश्विनी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति गुण, बुद्धि एवं प्रज्ञा से युक्त, धन-ऐश्वर्य से सम्पन्न विजयी, यशस्वी व सुखी होते हैं। ये अंतर्मुखी व धैर्यशाली होते हैं। दूसरों लोगों की बातों पर आसानी से विश्वास नहीं करते। अश्विनी के दूसरे चरण में जन्म होने के कारण, जातक कठोर परिश्रम में कम विश्वास रखेगा और छोटे-छोटे, अल्प अवधि के काम करने में रुचि रखेगा।

लग्न छः से सात अंशों के भीतर, उदित अंशों में होने से बलवान है। जन्म नक्षत्र स्वामी केतु, लग्न स्वामी, मंगल का मित्र है। नक्षत्र चरण स्वामी शुक्र भी केतु से भिन्न भाव रखता है। फलतः यह जातक जीवन के प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करेगा तथा शुक्र, मंगल व केतु की दशा-अंतर्दशा, प्रत्यन्तर दशा जातक को समय-समय पर शुभ फल देगी।

मेषलग्न, अंश 7 से 8

1. **लग्न नक्षत्र**—अश्विनी
2. **नक्षत्र पद**—3
3. **नक्षत्र अंश**—6/40 से 10/0 तक
4. **वर्ण**—क्षत्रिय
5. **वश्य**—चतुष्पद
6. **योनि**—अश्व
7. **गण**—देव
8. **नाड़ी**—आद्य
9. **नक्षत्र देवता**—अश्विन कुमार
10. **वर्णाक्षर**—चो
11. **वर्ग**—सिंह
12. **लग्न स्वामी**—मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**—'तृतीये सुभगोभवेत्'

—जातक सारदीप

अश्विनी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति गुण, बुद्धि विद्या से युक्त, धन, ऐश्वर्य से सम्पन्न, विजयी, यशस्वी व सुखी होते हैं। ये अंतर्मुखी व धैर्यशील होते हैं। दूसरे लोगों की बातों पर आसानी से विश्वास नहीं करते। अश्विनी नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म होने के कारण सुन्दर, धनी-मानी व ऐश्वर्यशाली होगा।

लग्न सात से आठ अंशों के भीतर उदित अंशों में होने से बलवान है। जन्म नक्षत्र स्वामी केतु, लग्न स्वामी मंगल का मित्र है। नक्षत्र चरण स्वामी बुध केतु से शत्रु भाव रखता है। फलतः यह जातक उद्विग्न-अशान्त रहेगा। इस जातक को मंगल व केतु की दशा तो शुभफल देगी पर बुध की दशा जातक को अशान्त रखेगी।

मेषलग्न, अंश 8 से 9

1. **लग्न नक्षत्र**–अश्विनी
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–6/40 से 10/0 तक
4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–अश्व
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अश्विन कुमार
10. **वर्णाक्षर**–चे
11. **वर्ग**–सिंह
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रुता
18. **प्रधान विशेषता**–'तृतीये सुभगोभवेत्'

–जातक सारदीप

अश्विनी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति गुण, बुद्धि, विद्या से युक्त, धन, ऐश्वर्य से सम्पन्न, विजयी, यशस्वी व सुखी होते हैं। ये अंतर्मुखी व धैर्यशील होते हैं। दूसरे लोगों की बातों पर आसानी से विश्वास नहीं करते। अश्विनी नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म होने के कारण सुन्दर, धनी-मानी व ऐश्वर्यशाली होगा।

लग्न आठ से नौ अंशों के भीतर होने से उदित अंशों में है, बलवान है। जन्म नक्षत्र स्वामी केतु लग्नेश मंगल का मित्र है परन्तु नक्षत्र चरणस्वामी बुध केतु से शत्रुभाव रखता है। फलत: यह जातक थोड़ा उद्विग्न व अशान्त रहेगा। इस जातक को मंगल व केतु की दशा तो शुभ फल देगी पर बुध की दशा जातक को अशान्त रखेगी।

मेषलग्न, अंश 9 से 10

1. **लग्न नक्षत्र**–अश्विनी
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–6/40 से 10/0 तक
4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–अश्व
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अश्विन कुमार
10. **वर्णाक्षर**–चो
11. **वर्ग**–सिंह
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रुता
18. **प्रधान विशेषता**–'तृतीये सुभगोभवेत्'

–जातक सारदीप

अश्विनी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति गुण, बुद्धि विद्या से युक्त, धन, ऐश्वर्य से सम्पन्न, विजयी, यशस्वी व सुखी होते हैं। ये अंतर्मुखी व धैर्यशील होते हैं। दूसरे लोगों की बातों पर आसानी से विश्वास नहीं करते। अश्विनी नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म होने के कारण सुन्दर, धनी-मानी व ऐश्वर्यशाली होगा।

लग्न नौ से दस अंशों के भीतर होने से उदित अंशों में है, बलवान है। जन्म नक्षत्र स्वामी केतु लग्नेश मंगल का मित्र है परन्तु नक्षत्र चरण स्वामी बुध केतु से शत्रुभाव रखता है। फलत: यह जातक थोड़ा उद्विग्न व अशान्त रहेगा। इस जातक को मंगल व केतु की दशा शुभफल देगी पर बुध की दशा जातक को अशान्त रखेगी।

मेषलग्न, अंश 10 से 11

1. **लग्न नक्षत्र**–अश्विनी
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–10/0 से 13/20 तक
4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–अश्व
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अश्विन कुमार
10. **वर्णाक्षर**–ला
11. **वर्ग**–सिंह
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–चंद्रमा
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रुता
18. **प्रधान विशेषता**–'पादे चतुर्थके भोगी दीर्घायु: जायते नर:'

–जातक सारदीप

अश्विनी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति गुण, बुद्धि, विद्या से युक्त, धन, ऐश्वर्य से सम्पन्न, विजयी, यशस्वी व सुखी होते हैं। ये अंतर्मुखी व धैर्यशील होते हैं। दूसरे लोगों की बातों पर आसानी से विश्वास नहीं करते। अश्विनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म होने के कारण जातक भोगी होगा एवं दीर्घायु को प्राप्त करेगा।

लग्न दस से ग्यारह अंश के भीतर होने से उदित अंशों में है बलवान है जन्म नक्षत्र स्वामी केतु लग्नेश मंगल का मित्र है। नक्षत्र चरण स्वामी चन्द्रमा, केतु से शत्रुभाव रखता है। फलत: इस कुण्डली वाला जातक थोड़ा उद्विग्न व अशान्त रहेगा। इस जातक को मंगल व केतु की दशाएं शुभ फल देंगी। चन्द्रमा की दशा में जातक अशान्त व उद्विग्न रहेगा।

मेषलग्न, अंश 11 से 12

1. **लग्न नक्षत्र**–अश्विनी
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–10/0 से 13/20 तक
4. **वर्ण**–क्षत्रिय

5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–अश्व
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अश्विन कुमार
10. **वर्णाक्षर**–ला
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–चंद्रमा
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रुता
18. **प्रधान विशेषता**–'पादे चतुर्थके भोगी दीर्घायु: जायते नर:'

–जातक सारदीप

अश्विनी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति गुण, बुद्धि, विद्या से युक्त, धन, ऐश्वर्य से सम्पन्न, विजयी, यशस्वी व सुखी होते हैं। ये अंतर्मुखी व धैर्यशील होते हैं। दूसरे लोगों की बातों पर आसानी से विश्वास नहीं करते। अश्विनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म होने के कारण जातक भोगी होगा एवं दीर्घायु को प्राप्त करेगा।

लग्न ग्यारह से बारह अंश के भीतर होने से उदित अंशों में है, बलवान है। जन्म नक्षत्र स्वामी केतु, लग्नेश मंगल का मित्र है। नक्षत्र चरण स्वामी चन्द्रमा, केतु से शत्रुभाव रखता है। फलत: इस कुण्डली वाला जातक थोड़ा उद्विग्न व अशान्त रहेगा पर जातक को मंगल व केतु की दशाएं शुभ फल देंगी। चन्द्रमा की दशा में जातक अशान्त व उद्विग्न रहेगा।

मेषलग्न, अंश 12 से 13

1. **लग्न नक्षत्र**–अश्विनी
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–10/0 से 13/20 तक
4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–अश्व
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अश्विन कुमार
10. **वर्णाक्षर**–ला
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–चंद्रमा
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रुता
18. **प्रधान विशेषता**–'पादे चतुर्थके भोगी दीर्घायु: जायते नर:'

–जातक सारदीप

अश्विनी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति गुण, बुद्धि, विद्या से युक्त, धन, ऐश्वर्य से सम्पन्न, विजयी, यशस्वी व सुखी होते हैं। ये अंतर्मुखी व धैर्यशील होते हैं। दूसरे लोगों की बातों पर आसानी से विश्वास नहीं करते। अश्विनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म होने के कारण जातक भोगी होगा एवं दीर्घायु को प्राप्त करेगा।

लग्न बारह से तेरह अंश के भीतर होने से उदित अंशों में है, बलवान है। जन्म नक्षत्र स्वामी केतु लग्नेश मंगल का मित्र है। नक्षत्र चरण स्वामी चन्द्रमा, केतु से शत्रुभाव रखता है। फलतः इस कुण्डली वाला जातक थोड़ा उद्विग्न व अशान्त रहेगा। इस जातक को मंगल व केतु की दशा शुभफल देगी। चन्द्रमा की दशा में जातक अशान्त व उद्विग्न रहेगा।

मेष लग्न, अंश 13 से 14

1. लग्न नक्षत्र–भरणी	**2. नक्षत्र पद**–1
3. नक्षत्र अंश–13/20 से 16/40 तक	**4. वर्ण**–क्षत्रिय
5. वश्य–चतुष्पद	**6. योनि**–गज
7. गण–मानव	**8. नाड़ी**–मध्य
9. नक्षत्र देवता–यम	**10. वर्णाक्षर**–ली
11. वर्ग–हरिण	**12. लग्न स्वामी**–मंगल
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शुक्र	**14. नक्षत्र चरण स्वामी**–सूर्य
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–सम	**16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रुता

18. प्रधान विशेषता–'त्यागी याम्याद्यापदे स्याद्'

–जातक सारदीप

भरणी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति पूर्वाग्रही, स्थिर अथवा 'रिजर्व नेचर' के होते हैं। ऐसे जातक योजनाबद्ध तरीके से काम करना पसन्द करते हैं व धुन के धनी होते है। ऐसे जातक प्रायः नैतिक मूल्यों की रक्षा करते हुए सैद्धान्तिक जीवन जीना पसन्द करते हैं। भरणी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म होने के कारण जातक त्यागी होता है तथा खर्चीले स्वभाव का होता है।

लग्न तेरह से चौदह अंश के भीतर होने से बलवान है। मध्यबली है। जन्म नक्षत्र स्वामी शुक्र लग्नेश मंगल से सम भाव रखता है। नक्षत्र चरण स्वामी सूर्य शुक्र का शत्रु है। फलतः जातक में 70% आशावादी विचार एवं 30% निराशावादी विचार होंगे। जातक को मंगल व शुक्र की दशा शुभ फलदाई होगी परन्तु सूर्य की दशा में जातक थोड़ा परेशान रहेगा।

मेषलग्न, अंश 14 से 15

1. लग्न नक्षत्र–भरणी	**2. नक्षत्र पद**–1
3. नक्षत्र अंश–13/20 से 16/40 तक	**4. वर्ण**–क्षत्रिय
5. वश्य–चतुष्पद	**6. योनि**–गज
7. गण–मानव	**8. नाड़ी**–मध्य
9. नक्षत्र देवता–यम	**10. वर्णाक्षर**–ली

11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शुक्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–सूर्य
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–सम
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रुता
18. **प्रधान विशेषता**–'त्यागी याम्याद्यापदे स्याद्'

–जातक सारदीप

भरणी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति पूर्वाग्रही, स्थिर अथवा 'रिजर्व नेचर' के होते हैं। ऐसे जातक योजनाबद्ध तरीके से काम करना पसन्द करते हैं व धुन के धनी होते है। ऐसे जातक प्राय: नैतिक मूल्यों की रक्षा करते हुए सैद्धान्तिक जीवन जीना पसन्द करते हैं। भरणी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म होने के कारण जातक त्यागी होता है तथा खर्चीले स्वभाव का होता है।

लग्न चौदह से पंद्रह अंश के भीतर होने से मध्यम बली है। जन्म नक्षत्र का स्वामी शुक्र, लग्नेश मंगल से सम भाव रखता है। नक्षत्र चरण का स्वामी सूर्य शुक्र का शत्रु है। फलत: जातक में 30% निराशावादी एवं 70% आशावादी विचार होंगे। जातक को मंगल व शुक्र की दशा शुभ फलदाई साबित होगी। परन्तु सूर्य की दशा में जातक थोड़ा परेशान होगा।

मेषलग्न, अंश 15 से 16

1. **लग्न नक्षत्र**–भरणी
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–13/20 से 16/40 तक
4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–गज
7. **गण**–गज
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–यम
10. **वर्णाक्षर**–ली
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शुक्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–सूर्य
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–सम
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रुता
18. **प्रधान विशेषता**–'त्यागी याम्याद्यापदे स्याद्'

–जातक सारदीप

भरणी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति पूर्वाग्रही, स्थिर अथवा 'रिजर्व नेचर' के होते हैं। ऐसे जातक योजनाबद्ध तरीके से काम करना पसन्द करते हैं व धुन के धनी होते हैं। ऐसे जातक प्राय: नैतिक मूल्यों की रक्षा करते हुए सैद्धान्तिक जीवन जीना पसन्द करते हैं। भरणी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म होने के कारण जातक त्यागी होता है तथा खर्चीले स्वभाव का होता है।

लग्न पंद्रह से सोलह अंश के भीतर होने से मध्यम बली है। जन्म नक्षत्र का स्वामी शुक्र, लग्नेश मंगल के समभाव रखता है। नक्षत्र चरण स्वामी सूर्य शुक्र का शत्रु है। फलत: जातक

में 30% निराशावादी एवं 70% आशावादी विचार होंगे। जातक को मंगल व शुक्र की दशा शुभ फलदाई साबित होगी। परन्तु सूर्य की दशा में जातक थोड़ा परेशान होगा।

मेषलग्न, अंश 16 से 17

1. लग्न नक्षत्र–भरणी
2. नक्षत्र पद–2
3. नक्षत्र अंश–16/40 से 20/40 तक
4. वर्ण–क्षत्रिय
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–गज
7. गण–मानव
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–यम
10. वर्णाक्षर–ली
11. वर्ग–हरिण
12. लग्न स्वामी–मंगल
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शुक्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–चन्द्र
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–सम
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रुता
18. प्रधान विशेषता–'द्वितीये धनवान् सुखी।'

–जातक सारदीप

भरणी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति पूर्वाग्रही, स्थिर अथवा 'रिजर्व नेचर' के होते हैं। ऐसे जातक योजनाबद्ध तरीके से काम करना पसन्द करते हैं व धुन के धनी होते हैं। ऐसे जातक प्राय: नैतिक मूल्यों की रक्षा करते हुए सैद्धान्तिक जीवन जीना पसन्द करते हैं। भरणी नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म होने के कारण जातक धनवान व सुखी होगा।

लग्न सोलह से सत्रह अंशों वाला होने के कारण मध्यम बली है। जन्म नक्षत्र स्वामी शुक्र लग्नेश मंगल के समभाव रखता है। परन्तु नक्षत्र चरण स्वामी चन्द्रमा शुक्र से शत्रुभाव रखता है। फलत: ऐसे जातक को जीवन में सफलता संघर्ष के बाद मिलती है। जातक को मंगल की दशा श्रेष्ठ है। शुक्र की दशा साधारण परन्तु चन्द्रमा की दशा व अंतर्दशा संघर्षकारी साबित होगी।

मेषलग्न, अंश 17 से 18

1. लग्न नक्षत्र–भरणी
2. नक्षत्र पद–2
3. नक्षत्र अंश–16/40 से 20/40 तक
4. वर्ण–क्षत्रिय
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–गज
7. गण–मानव
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–यम
10. वर्णाक्षर–लू
11. वर्ग–हरिण
12. लग्न स्वामी–मंगल
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शुक्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–चन्द्र

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–सम   16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–महाशत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रुता
18. **प्रधान विशेषता**–'द्वितीये धनवान् सुखी।'

–जातक सारदीप

भरणी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति पूर्वाग्रही, स्थिर अथवा 'रिजर्व नेचर' के होते हैं। ऐसे जातक योजनाबद्ध तरीके से काम करना पसन्द करते हैं व धुन के धनी होते हैं। ऐसे जातक प्राय: नैतिक मूल्यों की रक्षा करते हुए सैद्धान्तिक जीवन जीना पसन्द करते हैं। भरणी नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म होने के कारण जातक धनवान व सुखी व्यक्ति होगा।

लग्न सत्रह से अठारह अंश के भीतर होने के कारण मध्यबली है। लग्न नक्षत्र शुक्र नक्षत्र शुक्र लग्नेश मंगल से सम है। नक्षत्र चरण स्वामी चन्द्र शुक्र का महाशत्रु है फलत: जातक का दिमाग थोड़ा खुराफाती होगा। वह जीवन में सफल व्यक्ति तो होगा पर कभी-कभी दिमाग से अशान्त या बैचेन रहेगा। ऐसे जातक को मंगल व शुक्र की दशा ठीक जाएगी परन्तु चन्द्र की दशा मानसिक पीड़ा देगी।

मेषलग्न, अंश 19 से 20

1. **लग्न नक्षत्र**–भरणी   2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–16/40 से 20/0 तक   4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–चतुष्पद   6. **योनि**–गज
7. **गण**–मानव   8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–यम   10. **वर्णाक्षर**–लू
11. **वर्ग**–हरिण   12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शुक्र   14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–चन्द्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–सम   16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–महाशत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रुता
18. **प्रधान विशेषता**–'द्वितीये धनवान् सुखी।'

–जातक सारदीप

भरणी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति पूर्वाग्रही, स्थिर अथवा 'रिजर्व नेचर' के होते हैं। ऐसे जातक योजनाबद्ध तरीके से काम करना पसन्द करते हैं व धुन के धनी होते हैं। ऐसे जातक प्राय: नैतिक मूल्यों की रक्षा करते हुए सैद्धान्तिक जीवन जीना पसन्द करते हैं। भरणी नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म होने के कारण जातक धनवान व सुखी व्यक्ति होगा।

लग्न उन्नीस से बीस अंशों के भीतर होने के कारण मध्यम बली है। लग्न नक्षत्र शुक्र, लग्नेश मंगल में सम है। नक्षत्र चरण स्वामी चन्द्र शुक्र का महाशत्रु है। फलत: जातक का दिमाग थोड़ा खुराफाती होगा। वह जीवन में सफल व्यक्ति तो होगा पर कभी-कभी दिमाग से अशांत

या बेचैन रहेगा। ऐसे जातक को मंगल व शुक्र की दिशा ठीक जाएगी परन्तु चन्द्र की दिशा मानसिक पीड़ा देगी।

मेषलग्न, अंश 20 से 21

1. लग्न नक्षत्र–भरणी
2. नक्षत्र पद–3
3. नक्षत्र अंश–20/0 से 23/20 तक
4. वर्ण–क्षत्रिय
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–गज
7. गण–मानव
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–यम
10. वर्णाक्षर–ले
11. वर्ग–हरिण
12. लग्न स्वामी–मंगल
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शुक्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शुक्र
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–सम
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–उत्तम
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–अच्छा
18. प्रधान विशेषता–'तृतीये क्रूर कर्मी च।'

–जातक सारदीप

भरणी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति पूर्वाग्राही, स्थिर अथवा 'रिजर्व नेचर' के होते हैं। ऐसे जातक योजनाबद्ध तरीके से काम करना पसन्द करते हैं व धुन के धनी होते हैं। ऐसे जातक प्रायः नैतिक मूल्यों की रक्षा करते हुए सैद्धान्तिक जीवन जीना पसन्द करते हैं। भरणी नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म होने के कारण जातक क्रूर (निर्दयी) होगा तथा साहसपूर्ण, जोखिम भरे कार्य करने में रुचि रखेगा।

लग्न बीस से इक्कीस अंशों के भीतर होने से मध्यम बली है। लग्न नक्षत्र स्वामी शुक्र लग्नेश मंगल से समभाव रखता है तथा नक्षत्र चरण स्वामी भी शुक्र होने से शुक्र का तत्त्व बढ़ गया है। ऐसे जातक थोड़े रंगीन मिजाज के होंगे। इन्हें मंगल व शुक्र की दशा उत्तम फल देने वाली साबित होगी।

मेषलग्न, अंश 21 से 22

1. लग्न नक्षत्र–भरणी
2. नक्षत्र पद–3
3. नक्षत्र अंश–20/0 से 23/20 तक
4. वर्ण–क्षत्रिय
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–गज
7. गण–मानव
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–यम
10. वर्णाक्षर–ले
11. वर्ग–हरिण
12. लग्न स्वामी–मंगल
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शुक्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शुक्र
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–सम
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–उत्तम

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–अच्छा
18. **प्रधान विशेषता**–'तृतीये क्रूर कर्मी च।'

–जातक सारदीप

भरणी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति पूर्वाग्राही, स्थिर अथवा 'रिजर्व नेचर' के होते हैं। ऐसे जातक योजनाबद्ध तरीके से काम करना पसन्द करते हैं व धुन के धनी होते हैं। ऐसे जातक प्रायः नैतिक मूल्यों की रक्षा करते हुए सैद्धान्तिक जीवन जीना पसन्द करते हैं। भरणी नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म होने के कारण जातक क्रूर (निर्दयी) होगा तथा साहसपूर्ग, जोखिम भरे कार्य करने में रुचि रखेगा।

लग्न इक्कीस से बाईस अंशों के भीतर होने से मध्यम बली है। लग्न नक्षत्र स्वामी शुक्र लग्नेश मंगल से समभाव रखता है तथा नक्षत्र चरण स्वामी भी शुक्र होने से शुक्र का तत्त्व बढ़ गया है। ऐसे जातक थोड़े रंगीन मिजाज के होंगे। इन्हें मंगल व शुक्र की दशा उत्तम फल देने वाली साबित होगी।

मेषलग्न, अंश 22 से 23

1. **लग्न नक्षत्र**–भरणी
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–20/0 से 23/20 तक
4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–गज
7. **गण**–मानव
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–यम
10. **वर्णाक्षर**–लू
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शुक्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–सम
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–उत्तम
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–अच्छा
18. **प्रधान विशेषता**–'तृतीये क्रूर कर्मी च।'

–जातक सारदीप

भरणी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति पूर्वाग्राही, स्थिर अथवा 'रिजर्व नेचर' के होते हैं। ऐसे जातक योजनाबद्ध तरीके से काम करना पसन्द करते हैं व धुन के धनी होते हैं। ऐसे जातक प्रायः नैतिक मूल्यों की रक्षा करते हुए सैद्धान्तिक जीवन जीना पसन्द करते है। भरणी नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म होने के कारण जातक क्रूर (निर्दयी) होगा तथा साहसपूर्ण, जोखिम भरे कार्य करने में रुचि रखेगा।

लग्न बाईस से तेईस अंशों के भीतर होने से मध्यमबली है। लग्न नक्षत्र स्वामी शुक्र, लग्नेश मंगल से समभाव रखता है तथा नक्षत्र चरण स्वामी भी शुक्र का तत्त्व बढ़ गया है। ऐसे

जातक थोड़े रंगीन मिजाज के होंगे। इन्हें मंगल व शुक्र की दिशा उत्तम फल देने वाली साबित होगी।

मेषलग्न, अंश 23 से 24

1. **लग्न नक्षत्र**–भरणी	2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–23/20 से 26/40 तक	4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–चतुष्पद	6. **योनि**–गज
7. **गण**–मानव	8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–यम	10. **वर्णाक्षर**–लो
11. **वर्ग**–हरिण	12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शुक्र	14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–सम	16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–सम

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–सम

18. **प्रधान विशेषता**–'चतुर्थेऽसौ दरिद्रभाक्।'

–जातक सारदीप

भरणी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति पूर्वाग्राही, स्थिर अथवा 'रिजर्व नेचर' के होते हैं। ऐसे जातक योजनाबद्ध तरीके से काम करना पसन्द करते हैं। ऐसे जातक धुन के धनी होते हैं। ऐसे जातक प्रायः नैतिक मूल्यों की रक्षा करते हुए सैद्धान्तिक जीवन जीना पसन्द करते हैं। भरणी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म होने के कारण जातक के पास सब कुछ होते हुए भी धन की कमी महसूस करता रहेगा।

लग्न तेईस अंश से चौबीस अंशों के भीतर होने के कारण अवरोह अवस्था का है। लग्न नक्षत्र स्वामी शुक्र लग्नेश मंगल से सम भाव रख रहा है। नक्षत्र चरण स्वामी भी मंगल अतः मंगल का प्रभाव इस जातक पर विशेष रहेगा। फलतः जातक को मंगल की दशा, अंतरदशा उत्तम फल देगी। जबकि शुक्र की दशा साधारण ही रहेगी।

मेषलग्न, अंश 24 से 25

1. **लग्न नक्षत्र**–भरणी	2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–23/20 से 26/40 तक	4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–चतुष्पद	6. **योनि**–गज
7. **गण**–मानव	8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–यम	10. **वर्णाक्षर**–लो
11. **वर्ग**–हरिण	12. **लग्न स्वामी**–मंगल

13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शुक्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–सम
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–सम
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–अच्छा
18. प्रधान विशेषता–'चतुर्थेऽसौ दरिद्रभाक्।'

–जातक सारदीप

भरणी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति पूर्वाग्राही, स्थिर अथवा 'रिजर्व नेचर' के होते हैं। ऐसे जातक योजनाबद्ध तरीके से काम करना पसन्द करते हैं। ऐसे जातक धुन के धनी होते हैं। ऐसे जातक प्राय: नैतिक मूल्यों की रक्षा करते हुए सैद्धान्तिक जीवन जीना पसन्द करते हैं। भरणी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म होने के कारण जातक के पास सब कुछ होते हुए भी वह धन की कमी महसूस करता रहेगा।

लग्न चौबीस से पचीस अंशों के भीतर होने से अवरोही अवस्था में है। लग्न नक्षत्र स्वामी शुक्र, लग्नेश मंगल से समभाव रखता है। नक्षत्र चरण स्वामी मंगल है। मंगल तत्त्व यहां प्रमुख होने से जातक बहादुर व साहसी होगा। इन्हें मंगल की दशा व शुक्र की दशा अच्छी जाएगी।

मेषलग्न, अंश 25 से 26

1. लग्न नक्षत्र–भरणी
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–23/20 से 26/40 तक
4. वर्ण–क्षत्रिय
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–गज
7. गण–मानव
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–यम
10. वर्णाक्षर–लो
11. वर्ग–हरिण
12. लग्न स्वामी–मंगल
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शुक्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–सम
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–सम
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–सम
18. प्रधान विशेषता–'चतुर्थेऽसौ दरिद्रभाक्।'

–जातक सारदीप

भरणी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति पूर्वाग्राही, स्थिर अथवा 'रिजर्व नेचर' के होते हैं। ऐसे जातक योजनाबद्ध तरीके से काम करना पसन्द करते हैं। ऐसे जातक धुन के धनी होते हैं। ऐसे जातक प्राय: नैतिक मूल्यों की रक्षा करते हुए सैद्धान्तिक जीवन जीना पसन्द करते हैं। भरणी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म होने के कारण जातक के पास सबकुछ होते हुए भी धन की कमी महसूस करता रहेगा।

लग्न पचीस से छब्बीस अंशों के भीतर होने से अवरोही अवस्था का है। लग्न नक्षत्र स्वामी शुक्र, लग्नेश मंगल से समभाव रखता है। नक्षत्र चरण स्वामी मंगल है। मंगल तत्त्व यहां प्रमुख होने से जातक बहादुर व साहसी होगा। इन्हें मंगल व शुक्र की दशा अच्छी जाएगी।

मेषलग्न, अंश 26 से 27

1. **लग्न नक्षत्र**–भरणी
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–23/20 से 26/40 तक
4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–गज
7. **गण**–मानव
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–यम
10. **वर्णाक्षर**–लो
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शुक्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–सम
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–सम
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–अच्छा
18. **प्रधान विशेषता**–'चतुर्थेऽसौ दरिद्रभाक्।'

–जातक सारदीप

भरणी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति पूर्वाग्राही, स्थिर अथवा 'रिजर्व नेचर' के होते हैं। ऐसे जातक योजनाबद्ध तरीके से काम करना पसन्द करते हैं। ऐसे जातक धुन के धनी होते हैं। ऐसे जातक प्रायः नैतिक मूल्यों की रक्षा करते हुए सैद्धान्तिक जीवन जीना पसन्द करते हैं। भरणी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म होने के कारण जातक के पास सबकुछ होते हुए भी धन की कमी महसूस करता रहेगा।

लग्न छब्बीस से सत्ताईस अंशों के भीतर होने से अवरोही अवस्था का है। लग्न नक्षत्र स्वामी शुक्र, लग्नेश मंगल से समभाव रखता है। नक्षत्र चरण स्वामी मंगल है। मंगल तत्त्व यहां प्रमुख होने से जातक बहादुर व साहसी होगा। इन्हें मंगल की दशा व शुक्र की दशा अच्छी जाएगी।

मेषलग्न, अंश 27 से 28

1. **लग्न नक्षत्र**–कृत्तिका
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–24/40 से 30/0 तक
4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–मेष
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–अग्नि
10. **वर्णाक्षर**–अ
11. **वर्ग**–गरुड़
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–सूर्य
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–सम
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–सम
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्रता

18. प्रधान विशेषता–'बहुलनक्षत्रप्रभवं बलं लभते जुष्टम्।'

–जातक सारदीप

कृत्तिका नक्षत्र में जन्मा 'तेजस्वी बहुलोद्भव: प्रभुसमो' व्यक्ति तेजस्वी, राजा के समान पराक्रमी, पढ़ालिखा, विद्या एवं धन से युक्त जातक होता है। कृत्तिका नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्मे व्यक्ति का भाग्योदय जन्मस्थान से हटकर दूरस्थ प्रदेशों में होता है। **'हीरा वो जो खान से निकल गया, इंसान सो जो वतन से निकल गया'** वाली कहावत इन पर शत-प्रतिशत लागू होती है। जातक विदेश जाकर भी खूब धन कमा सकता है।

लग्न सत्ताईस से अट्ठाईस अंशों वाला होकर अवरोही अवस्था का है परन्तु मेषलग्न का स्वामी मंगल तो अट्ठाईस अंशों में जाकर ही पूर्ण उच्चता (श्रेष्ठता) को प्राप्त करता है। फलत: इस अवस्था में आप लग्न मंगल की रहस्यमय शक्ति से परिपूर्ण होकर बलवान हो गया है। फलत: मंगल की दशा, सूर्य एवं गुरु की दशा, अंतर्दशा जातक को अत्यन्त शुभफलदायक होगी। यह जातक मंगल की रहस्यमय शक्ति का स्वामी होगा।

मेषलग्न, अंश 28 से 29

1. लग्न नक्षत्र–कृत्तिका
2. नक्षत्र पद–1
3. नक्षत्र अंश–24/40 से 30/0 तक
4. वर्ण–क्षत्रिय
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–मेष
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–अग्नि
10. वर्णाक्षर–अ
11. वर्ग–गरुड़
12. लग्न स्वामी–मंगल
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–सूर्य
14. नक्षत्र चरण स्वामी–गुरु
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–सम
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्रता
18. प्रधान विशेषता–'बहुलनक्षत्रप्रभवं बलं लभते जुष्टम्।'

–जातक सारदीप

कृत्तिका नक्षत्र में जन्मा 'तेजस्वी बहुलोद्भव: प्रभुसमो' व्यक्ति तेजस्वी, राजा के समान पराक्रमी, पढ़ा-लिखा, विद्या एवं धन से युक्त जातक होता है। कृत्तिका नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्मे व्यक्ति का भाग्योदय जन्मस्थान से हटकर दूरस्थ प्रदेशों में होता है। **'हीरा वो जो खान से निकल गया, इंसान सो जो वतन से निकल गया'** वाली कहावत इन पर शत-प्रतिशत लागू होती है। जातक विदेश जाकर भी खूब धन कमा सकता है।

लग्न अट्ठाईस से उनतीस अंशों वाला होकर अवरोही अवस्था का है। परन्तु मेषलग्न का स्वामी मंगल तो अट्ठाईस अंशों में जाकर ही पूर्ण उच्चता (श्रेष्ठता) को प्राप्त करता है। फलत: इस अवस्था में आप लग्न मंगल की रहस्यमय शक्ति में परिपूर्ण होकर बलवान हो गया

है। फलत: मंगल की दशा, सूर्य एवं गुरु की दशा, अंतर्दशा जातक को अत्यन्त शुभफलदायक होगी। यह जातक मंगल की रहस्यमय शक्ति का स्वामी होगा।

मेषलग्न, अंश 29 से 30

1. **लग्न नक्षत्र**–कृत्तिका
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–26/40 से 30/0 तक
4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–मेष
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–अग्नि
10. **वर्णाक्षर**–अ
11. **वर्ग**–क्षत्रीय
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–सूर्य
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–सम
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–सम
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–सम
18. **प्रधान विशेषता**–'बहुलनक्षत्रप्रभव बल लभतं जुष्टम्।'

–जातक सारदीप

कृत्तिका नक्षत्र में जन्मा 'तेजस्वी बहुलोद्‌भव: प्रभुसमो' व्यक्ति तेजस्वी, राजा के समान पराक्रमी, पढ़ा-लिखा, विद्या एवं धन से युक्त जातक होता है। कृत्तिका नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्मे व्यक्ति का भाग्योदय जन्मस्थान से हटकर दूरस्थ प्रदेशों में होता है। **'हीरा वो जो खान से निकल गया, इंसान सो जो वतन से निकल गया'** वाली कहावत इन पर शत-प्रतिशत लागू होती है। जातक विदेश जाकर भी खूब धन कमा सकता है।

लग्न उनतीस से तीस अंशों वाला होकर अवरोह की अन्तिम अवस्था में है। फलत: लग्न निर्बल अवस्था में है। जब लग्न ही निर्बल हो तो अन्य शुभ ग्रह क्या भला कर पाएंगे? वाली कहावत इन पर चरितार्थ होती है। निर्बल लग्न वाला व्यक्ति जब अन्य कोई विशेष ग्रहस्थिति न हो, शरीर व भाग्य से कमजोर रहता है।

❑❑❑

मेषलग्न और आयुष्य योग

1. मेषलग्न वाले के लिए शुक्र मारकेश होकर भी मारक नहीं, शनि घातक है परन्तु शुक्र अरिष्ट फलदायक है। बुध अशुभफलदायक होकर कभी-कभी मारक का काम करता है। आयुष्य प्रदाता ग्रह मंगल है।
2. मेषलग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति की मृत्यु मुखरोग, कीटाणुजन्म रोग, अपने ही घर में या, अपने ही कुल में उत्पन्न मनुष्य द्वारा सम्भव होती है।
3. मेषलग्न में जन्म लेने वाले मनुष्य की आयु 75 वर्ष के आसपास होती है। जन्म के उपरान्त प्रथम माह में कष्ट, 13 वर्ष की आयु में अल्पकष्ट, 18 वर्ष में जलभय, 50 वर्ष की आयु में अंग रोग, 60 वर्ष की आयु में असाध्य बीमारी होने का भय रहता है।
4. मेषलग्न में कर्क का सूर्य चौथे, शनि मीन का बारहवें, मंगल सातवें, एवं पूर्ण बली चन्द्रमा यदि बारहवें हो तो व्यक्ति चिरंजीवी होता है।
5. मेषलग्न में मेष का नवमांश हो, नवमांश में गुरु और शुक्र लग्न में हो, चन्द्रमा वृष या धनु के नवमांश में हो, मंगल सिहांसनांश में हो तो व्यक्ति यशस्वी एवं चीरंजीवी होता है।
6. मेषलग्न में सूर्य दसवें, गुरु कर्क राशि में, मंगल, शनि इत्यादि पापग्रह तीसरे, छठे या एकादश में हो तो जातक ऋषि-मुनियों की तरह यशस्वी, दीर्घजीवी एवं चिरायु होता है।
7. मेषलग्न में सूर्य एवं मंगल हो, गुरु केन्द्र में हो तो व्यक्ति सौ वर्ष का स्वस्थ आयु भोगता है।
8. मेषलग्न में सूर्य एवं मंगल आठवें हो तथा कर्क का गुरु चौथे हो तो जातक सौ वर्ष की स्वस्थ शतायु को भोगता है।
9. मेषलग्न में सिंह का चन्द्रमा पंचम में हो, त्रिकोण में गुरु एवं दशम में मंगल हो तो व्यक्ति दीर्घायु होता है।
10. मेषलग्न में मंगल एवं शनि दशम भाव में हो तो जातक स्वस्थ व सौ वर्ष से ऊपर की दीर्घायु को भोगता है।
11. मेषलग्न में मंगल लग्न में हो तथा गुरु व शुक्र से देखते हों तो जातक सौ वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।
12. मेषलग्न में चन्द्रमा छठे कन्या राशि का हो, अष्टम स्थान में कोई पापग्रह न हो तथा सभी शुभग्रह केन्द्रवर्ती हों तो जातक 86 वर्ष की स्वस्थ आयु को भोगता है।

13. मेषलग्न में उच्च का गुरु केन्द्र में हो, बुध त्रिकोण में हो तथा मंगल बलवान हो तो जातक 80 वर्ष की स्वस्थ आयु प्राप्त करता है।
14. मेषलग्न में लग्नेश मंगल लग्न में हो, सभी शुभग्रह केन्द्र में हो तो जातक 75 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।
15. मेषलग्न में मंगल हो, मंगल पांचवे सिंह का तथा सूर्य सातवें तुला का हो तो जातक 70 वर्ष की निरोग आयु को प्राप्त करता है।
16. मेषलग्न में शनि+मंगल+सूर्य हो, चन्द्रमा द्वादश में तथा गुरु बलहीन हो तो ऐसा जातक 70 वर्ष तक जीता है।
17. मेषलग्न में चन्द्रमा+सूर्य दशम भाव में, शनि नीच का लग्न में, गुरु अन्य का चतुर्थ भाव में हो तो एक प्रकार के उच्च राजयोग की सृष्टि होती है पर ऐसा जातक मात्र 69 वर्ष तक ही जी पाता है।
18. यदि शनि लग्न में, कर्क का चन्द्रमा चौथे, मंगल सातवें और सूर्य दसवें किसी भी अन्य शुभ ग्रह के साथ हो तो ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
19. मेषलग्न में अष्टमेश मंगल सातवें हो तथा चन्द्रमा छठे या आठवें स्थान में पापग्रहों के साथ हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
20. शनि लग्न में मंगल किसी भी अन्य ग्रह के साथ हो, चन्द्रमा आठवें या द्वादश स्थान में हो तो ऐसा जातक सैद्धान्तिक विद्वान् होता हुआ 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
21. मेषलग्न में बलवान चन्द्रमा लग्न में हो पर सूर्य से 120 अंश दूर हो तो जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 48 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
22. मेषलग्न में लग्नेश मंगल अष्टम भाव में पापग्रहों के साथ हो और छठे स्थान में बुध पापग्रहों के साथ हो शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जीता है।
23. मेष (चर) लग्न में चन्द्रमा कन्या या वृश्चिक राशि का शुभग्रहों से दृष्ट न हो, कोई भी शुभ ग्रह केन्द्र में न हो तो जातक मात्र 33 वर्ष तक जीता है।
24. मेषलग्न में शनि+मंगल हो, चन्द्रमा आठवें एवं गुरु छठे हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।
25. मेषलग्न के द्वितीय व द्वादश भाव में पापग्रह हो, लग्नेश निर्बल हो, तो लग्न, द्वितीय व द्वादश भाव शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।
26. मेष का गुरु एवं मीन का मंगल परस्पर एक-दूसरे के घर में बैठने वाला बालारिष्ट योग बनता है ऐसे जातक की मृत्यु 12 वर्ष के भीतर होती है।
27. मेषलग्न के चौथे राहु तथा चन्द्रमा आठवें शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो बालारिष्ट योग बनाता है ऐसा जातक आठ वर्ष के पूर्व मृत्यु को प्राप्त होता है।

28. मेषलग्न में अष्टमेश मंगल छठे स्थान में षष्टेश बुध के साथ हो, शनि सप्तम में अन्य पापग्रहों के साथ हो, अष्टम स्थान में भी पापग्रह हो तो जातक 31 वर्ष की आयु में ही शल्य चिकित्सा या गुप्तरोग के कारण मृत्यु को प्राप्त करता है।
29. मेषलग्न में मंगल हो, गुरु बारहवें हो, शुक्र छठे स्थान में नीच का हो, शुभ ग्रहों को लग्न पर दृष्टि न हो तो उपाय न करने पर ऐसे जातक की एक माह में मृत्यु हो जाती है।
30. मेषलग्न में सूर्य+चन्द्रमा यदि कन्या राशि में, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो, तो बालारिष्ट योग बनता है तथा बालक की नौ वर्ष की आयु में मृत्यु होती है।
31. मेषलग्न में गुरु लग्नस्थ हो, चन्द्रमा छठे या आठवें, शुभ ग्रहों के दृष्ट न हो तो बालारिष्ट योग बनता है। ऐसे जातक की आयु आठ वर्ष की आयु में होती है।
32. मेषलग्न में सूर्य द्वादश में, चन्द्रमा छठे या आठवें, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक की तत्काल मृत्यु होती है।
33. मेषलग्न में लग्न या पंचम भाव में सूर्य+राहु+शनि+मंगल+गुरु इन पांच ग्रहों की युति हो, चन्द्रमा निर्बल हो तो जातक शीघ्र मर जाता है।
34. मेषलग्न के सप्तम भाव में सूर्य के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक मातृघातक होता है।
35. मेषलग्न के चतुर्थ भाव में मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक मातृघातक होता है।
36. मेषलग्न में लग्नस्थ शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक मातृघातक होता है।

❑❑❑

मेषलग्न और धनयोग

मेषलग्न में जन्म लेने वाले जातकों के लिए धनप्रदाता ग्रह शुक्र है। धनेश शुक्र की शुभाशुभ स्थिति से धन स्थान से सम्बन्ध जोड़ने वाले ग्रहों की स्थिति एवं योगायोग, शुक्र एवं धनस्थान पर पड़ने वाले ग्रहों की दृष्टि सम्बन्ध से जातक की आर्थिक स्थिति, आय के स्रोतों तथा चल सम्पत्ति को पता चलता है। इसके अतिरिक्त पंचमेश सूर्य, भाग्येश गुरु एवं लाभेश शनि एवं लग्नेश मंगल अनुकूल स्थितियां मेषलग्न वालों के लिए धन ऐश्वर्य एव वैभव को बढ़ाने में पूर्णरूप से सक्षम होती है।

वेसे मेषलग्न के लिए शनि, बुध और शुक्र अशुभफल देते हैं। बुध परमपापी है। गुरु और रवि शुभ फल देते हैं। अशुभ योग के संयोग में गुरु निश्चित रूप से अशुभ फल देगा। शुक्र मारक स्थान का अधिपति होकर भी घातक नहीं है पर अरिष्ट फलदायक है। शनि इत्यादि पापग्रह इस लग्न के लिए घातक होते हैं। मंगल लग्नेश व अष्टमेश होने पर भी लग्नेश होने के कारण अशुभ फल नहीं देगा। मंगल स्वगृही हो तो उत्तम फल देगा।

शुभयुति–शनि+गुरु

शुभ योग–सूर्य स्वगृही, शुक्र स्वगृही, क्षीण चन्द्र, मंगल अच्छी स्थिति में।

अशुभ युति–मंगल+बुध

राजयोग कारक–रवि, गुरु, चन्द्र

लक्ष्मी योग–शनि नवम में, गुरु सप्तम में, शुक्र पंचम में, सूर्य तृतीय में।

सफल योग– 1. सू.+मं. 2. सू.+चं. 3. सू.+शु.,
4. सू.+श. 5. मं.+गु. 6. चं.+गु.

निष्फल योग–1. गु.+श., 2. गु+शुक्र

विशेष योगायोग

1. मेषलग्न में गुरु कर्क या धनु राशि में हो तो जातक अल्प प्रयत्न से ही खूब धन कमाता है। धन के मामले में ऐसा व्यक्ति भाग्यशाली कहलाता है।
2. मेषलग्न में शुक्र, वृष, तुला या मीन का हो तो व्यक्ति धनाढ्य होता है। लक्ष्मी उसका पीछा नहीं छोड़ती।
3. मेषलग्न में मंगल एवं शुक्र परस्पर परिवर्तन योग करके बैठे हो अर्थात् मंगल वृष या तुलाराशि में हो तथा शुक्र, मेष राशि में हो तो जातक स्वयं के पुरुषार्थ या पराक्रम से

धनवान बनता है, इसमें कोई सन्देह नहीं।

4. मेषलग्न में शुक्र एवं शनि परस्पर स्थान परिवर्तन करके बैठे हों अर्थात् शुक्र के घर में शनि तथा शनि के घर में शुक्र हो तो ऐसा व्यक्ति महाभाग्यशाली होता है तथा जीवन में अत्यधिक धन अर्जित करता है।
5. मेषलग्न हो, चन्द्रमा लग्न में मंगल के साथ हो तथा शनि केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक 28 एवं 32 वर्ष की आयु के मध्य धन कमाता है तथा कीचड़ में कमल की तरह, साधारण परिवार में जन्म लेता हुआ धीरे-धीरे खूब धन कमाता हुआ आगे बढ़ता है।
6. मेषलग्न में सूर्य सिंह का पंचम भाव में हो तथा लाभस्थान में कुम्भ का गुरु स्वगृहाभिलाषी हो तो जातक महाधनी होता है। ऐसा व्यक्ति धनशाली व्यक्तियों में अग्रगण्य होता है।
7. मेषलग्न में मंगल, शनि, शुक्र और बुध इन चार ग्रहों की युति हो तो जातक महाधनी होता है।
8. मेषलग्न में सिंह का सूर्य पंचम में हो, लाभ में शनि चन्द्रमा गुरु में से कोई ग्रह को तो व्यक्ति महालक्ष्मीवान होता है तथा अतुल सम्पत्ति एवं ऐश्वर्य को भोगता है।
9. मेषलग्न में मंगल, सूर्य, शुक्र और चन्द्रमा से युत या दृष्ट हो तो व्यक्ति महालक्ष्मीशाली होता है तथा राजलक्ष्मी को भोगता है।
10. मेषलग्न में मंगल मकर या कुम्भ राशि में हो तथा शनि लग्न में अर्थात् मेष राशि में हो तो जातक आयु के 33वें वर्ष में पांच लाख रुपए कमा लेता है तथा शत्रुओं का नाश करते हुए एवं अर्जित धनलक्ष्मी को भोगता है। ऐसे व्यक्ति को जीवन में अचानक रुपया मिलता है।
11. मेषलग्न हो उसमें मंगल, शुक्र, गुरु तथा शनि अपनी उच्च व स्वराशियों में हो तो जातक करोड़पति होता है।
12. मेषलग्न में मंगल हो साथ में बुध, शुक्र व शनि हो तो जातक करोड़पति होता है।
13. मेषलग्न में धनेश शुक्र यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में चला गया है तो ''धनहीन योग'' की सृष्टि करता है। जिस प्रकार घड़े में छिद्र होने के कारण उसमें पानी नहीं ठहर सकता, ठीक उसी प्रकार से ऐसे जातक के पास धन नहीं ठहर पाता। सदैव रुपयों की कमी बनी रहती है। इस योग से.निवृत्ति हेतु गले में शुक्र यन्त्र धारण करना चाहिए। पाठक चाहे तो ''शुक्र यंत्र'' हमारे कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।
14. मेषलग्न में शुक्र आठवें हो परन्तु सूर्य यदि लग्न को देखता हो तो ऐसे व्यक्ति को भूमि में गढ़े हुए धन की प्राप्ति होती है। अथवा लॉटरी से रुपया मिल सकता है।
15. मेषलग्न हो, मंगल कर्मेश भाग्येश पांचवें हो तो जातक लक्ष्याधिपति बनता है।
16. मेष राशिस्थ लग्न की कुण्डली में सूर्य स्व का हो, गुरु चंद्र की युति ग्यारहवें हो तो जातक लक्ष्मीवान होता है।
17. मेषलग्न हो, चन्द्रमा जहां स्थित है यहां से 1, 4, 7, 10 में गुरु हो तो जातक भूमिपति होता है, मेयर बनता है।

18. लग्नेश 5, 9 भाव में, शुक्र ग्याहरवें एवं द्वितीयेश पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो लक्ष्मी योग होता है।

19. मेषस्थ शुक्र हो, उसे सभी ग्रह देखते हों तो गणपति योग बनता है, जातक महापराक्रमी, धनवान गुणवान एवं प्रभावशाली होता है।

20. चन्द्रमा एवं मंगल एक साथ 1, 4, 7, 10 त्रिकोण या 2, 11 भाव में हों तो जातक धनवान होता है।

21. चन्द्र-मंगल योग हो, लाभेश चतुर्थ भाव में, धनेश चतुर्थभाव में हो, चतुर्थेश शुभ स्थान में हो तो यकायक धन की प्राप्ति होती है।

22. दूसरे घर का स्वामी शुक्र पंचम में पांचवें घर का स्वामी दूसरे या दूसरे का स्वामी 11वें व 11वें का स्वामी दूसरे हो या पांचवें का स्वामी पांचवें, नवमवें का स्वामी नवमवें हो तो विशेष धन योग होता है।

23. चन्द्रमा में 3/6/10/11वें स्थान में शुभ ग्रह हों तो वसुमतियोग बनता है। इसके कारण व्यक्ति युवावस्था में ही लखपति हो जाता है।

24. मेषलग्न में मंगल मेष या मकर राशि में हों तो ''रुचक योग'' बनता है। ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ अथाह भूमि, सम्पत्ति व धन का स्वामी होता है।

25. मेषलग्न में सुखेश चन्द्रमा, लाभेश शनि यदि नवमस्थान में हो तथा नवम भाव मंगल से दृष्ट हो तो व्यक्ति को अनायास गुप्त धन की प्राप्ति होगी।

26. मेषलग्न में गुरु+चन्द्र की युति वृष, कर्क, सिंह या धनु राशि में हो इस प्रकार के गजकेसरी योग के कारण व्यक्ति को अनायास उत्तम धन की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्ति को लॉटरी, शेयर बाजार या अन्य व्यापरिक स्रोत से अकल्पनीय धन मिलता है।

27. मेषलग्न में धनेश शुक्र अष्टम में एवं अष्टमेश मंगल व धनस्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हों तो ऐसा जातक गलत तरीके से धन कमाता है। ऐसा व्यक्ति ताश, जुआ, मटका, घुड़रेस, स्मगलिंग एवं अनैतिक कार्यों से धन अर्जित करता है।

28. मेषलग्न में तृतीयेश बुध लाभस्थान में एवं लाभेश शनि तृतीय स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हों तो ऐसे व्यक्ति को भाई, मित्र एवं भागीदारों के द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

29. मेषलग्न में बलवान शुक्र के साथ यदि चतुर्थेश चन्द्र की युति हो तो व्यक्ति को माता के द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

30. मेषलग्न में यदि बलवान शुक्र की पंचमेश सूर्य से युति हो, द्वितीय भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति को पुत्र द्वारा धन की प्राप्ति होती है। पुत्र जन्म के बाद ही जातक का भाग्योदय होता है।

31. मेषलग्न में बलवान शुक्र की यदि षष्ठेश बुध से युति हो तथा धनेश शुक्र, शनि या मंगल से दृष्ट हो तो ऐसे जातक को शत्रुओं के द्वारा धन की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक

कोर्ट-कचहरी में शत्रुओं को हराता है तथा शत्रुओं के कारण ही उसे धन व यश की प्राप्ति होती है।

32. मेषलग्न में बलवान शुक्र की गुरु से युति हो तो जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है तथा उसे पत्नी, ससुराल पक्ष से धन की प्राप्ति होती है।
33. मेषलग्न में बलवान शुक्र नवमेश गुरु से युति हो तो ऐसा जातक राजा से, राज्य सरकार से, सरकारी अधिकारियों एवं ठेके से काफी धन कमाता है।
34. मेषलग्न में बलवान शुक्र की दशमेश शनि से युति हो तो जातक को पैतृक सम्पत्ति पिता द्वारा संरक्षित धन की प्राप्ति होती है अथवा पिता का व्यवसाय जातक के भाग्योदय में सहायक होता है।
35. मेषलग्न में दशम भवन का स्वामी शनि यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलता, जन्म स्थान में नहीं कमाता तथा धन की सदैव कमी बनी रहती है।
36. मेषलग्न में लग्नेश मंगल यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो एवं सूर्य तुला राशि का सातवें (केन्द्र) स्थान में हो तो व्यक्ति कर्जदार होता है तथा धन के मामले में कमजोर होता है।
37. धनस्थान में पाप ग्रह हो तथा लाभेश शनि यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो व्यक्ति दरिद्र होता है।
38. मेषलग्न में केन्द्र स्थानों को छोड़कर चन्द्रमा गुरु से यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो संकट योग बनता है जिसके कारण व्यक्ति को सदैव धन का अभाव बना रहता है।
39. मेषलग्न में धनेश मंगल अस्त हो, नीचराशि (कर्क) में हो, तथा धनस्थान एवं अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह हो तो व्यक्ति सदैव ऋणग्रस्त रहता है, कर्ज उसके सिर से उतरता नहीं।
40. मेषलग्न में लाभेश शनि यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तथा लाभेश अस्तगत हो, पाप पीड़ित हो तो जातक महादरिद्री होता है।
41. मेषलग्न में अष्टमेश मंगल वक्री होकर कहीं भी बैठा हो या अष्टम स्थान में कोई भी ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो अकस्मात धनहानि का योग बनता है। अर्थात् ऐसे व्यक्ति को धन के मामले में परिस्थितिवश अचानक भारी नुकसान हो सकता है। अत: सावधान रहे।
42. मेषलग्न में अष्टमेश मंगल शत्रुक्षेत्री, नीच राशिगत या अस्त हो तो अचानक धन की हानि होती है।

ज्योतिष में कैंसर योग

1. कर्क, वृश्चिक, मीन, मकर एवं तुला राशियों में से कोई दो राशियां यदि षष्ठेश, अष्टमेश एवं द्वादशेश के प्रभाव में हो, पापग्रसित हो तो जातक को कैंसर होता है।
2. सूर्य से छठे, आठवें एवं द्वादश स्थान के स्वामी का सम्बन्ध राहु, केतु से होने पर व्यक्ति को कैंसर होता है।
3. कर्कलग्न के अधिकांश लोगों को कैंसर होता है। कर्कलग्न में गुरु मुख्य रूप से कैंसर रोग का कारक है। गुरु कैंसर में वृद्धि कराता है। शनि, मंगल और गुरु इन तीनों का सम्बन्ध छठे, आठवें, बारहवें तथा द्वितीय स्थान के स्वामियों से होने पर जातक की मृत्यु कैंसर रोग से होती है।
4. जब मंगल या शनि के साथ नेपच्यून, प्लूटो, यूरेनस कोई भी ग्रह हो तथा मंगल शनि का परस्पर दृष्टि सम्बन्ध हो तो व्यक्ति को कैंसर होता है।
5. राहु एवं शनि की अप्रिय (मलिन) स्थिति भी कैंसर रोग की सृष्टि करती है।
6. शनि या मंगल छठे या आठवें स्थान में राहु, केतु के साथ हो तो व्यक्ति को कैंसर होने की सम्भावना रहती है।
7. द्वितीयेश आठवें हो, तथा अष्टमेश लग्न में चन्द्रमा के साथ हो, षष्ठेश 6, 8, 12वें स्थानों में पापग्रह के साथ हो तो ऐसे जातक की मृत्यु ''ब्लड कैंसर'' से होती है।
8. षष्ठेश पापग्रहों के साथ लग्न, आठवें या दसवें स्थान में बैठा हो तथा पापदृष्ट हो तो जातक को कैंसर जैसी लाईलाज बीमारी होती है।
9. सूर्य छठे, आठवें, द्वादश स्थान में पापग्रहों के साथ हो तो जातक को पेट या आंतों में अलसर होता है। यदि राहु का प्रभाव लग्न या सूर्य के साथ हो तो जातक को कैंसर होता है।
10. सूर्य पापग्रहों के साथ कहीं भी हो, षष्ठेश छठे स्थान में पापग्रस्त हो, लग्नेश या लग्न पापग्रह के प्रभाव में हो तो व्यक्ति को कैंसर होता है।
11. चन्द्रमा क्षीण बली होकर पापग्रहों की राशि में, छठे, आठवें, बारहवें हो तथा लग्न अथवा चन्द्र शनि+मंगल से दृष्ट हो तो जातक को कैंसर की संभावना रहती है।

12. षष्टेश नीच का होकर छठे, आठवें या बारहवें हो तथा चन्द्रमा और लग्न पापग्रहों के मध्य या पापग्रस्त हो तो जातक को असाध्य बीमारी होती है।
13. द्वितीय भाव में पापग्रह हो, द्वितीयेश पापग्रह से युत होकर छठे, आठवें या बारहवें भाव में हो, लग्न एवं लग्नेश निर्बल हो तो जातक को कैंसर होता है।

❑❑❑

कैंसर योग पर उदाहरण कुण्डलियां

रक्त कैंसर, जन्म-12/5/1930, समय 23.15, स्थान-मुम्बई
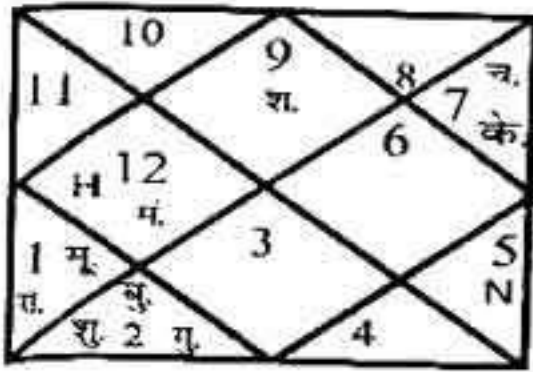
लग्न में पापग्रह है. लग्नेश गुरु षष्ठेश के साथ छठे स्थान में है। सप्तमेश बुध छठे है। सूर्य भी पापग्रसित है। चन्द्रमा भी पापग्रसित है। फलत: जातक को रक्त कैंसर हुआ। कैंसर का पता चलते ही जातक ने बहुत ईलाज कराया परन्तु छ: महीने में ही जातक की मुम्बई अस्पताल में ही मृत्यु हो गई।

रक्त कैंसर (बालारिष्ट), जन्म-5/7/1980, समय-23.00, स्थान-मुम्बई
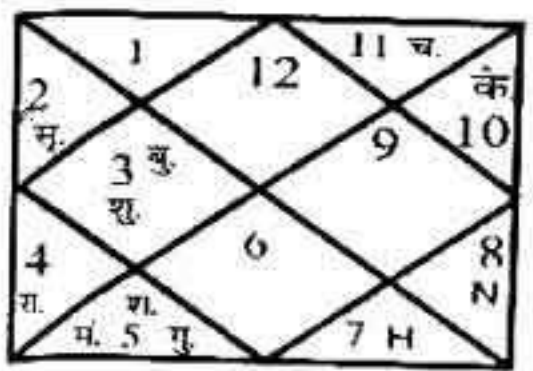
लग्नेश पापग्रह के साथ एवं पापमध्य होकर छठे स्थान में है। चन्द्रमा क्षीण बली होकर पापग्रह की राशि में बैठ कर द्वादश भाव में है। चन्द्रमा की राशि पापग्रसित है तथा चन्द्रमा के साथ षडाष्टक योग में स्थित है। चन्द्रमा द्वादशश एवं मारकेश पापी ग्रहों (शनि+मंगल) से दृष्ट है। हर्षल आठवें है। इस बालक को दो वर्ष की आयु 6 जून 1982 को पहली बार पता चला कि इसे रक्त कैंसर है। फौरन ईलाज शुरू किया परन्तु ईलाज के दौरान ही टाटा अस्पताल मुम्बई में 8 मार्च 85 को बालक की मृत्यु हो गई। इस प्रकार यह बालक मात्र पांच वर्ष से कम की आयु को ही भोग पाया। रक्त कैंसर तो एक विशेष रोग का नाम है परन्तु मृत्यु के जिम्मेदार कुण्डली में उपस्थित ''बालारिष्ट योग'' है। इसके लिए आप मेरी पुस्तक ''ज्योतिष और आयुष्य योग'' अवश्य देखें।

गुप्तांग में कैंसर, जन्म-3/4/1926, समय-7.30 प्रात:, स्थान-पूना
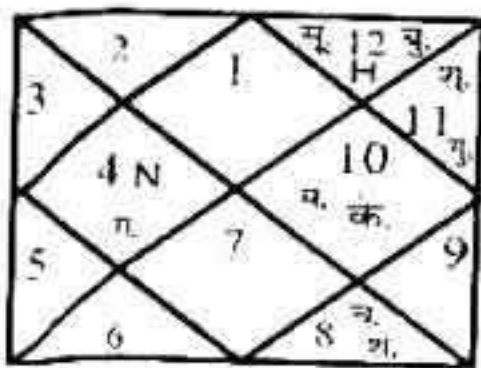
यह एक महिला की कुण्डली है। षष्ठेश बुध सूर्य के साथ नीच का होकर द्वादश स्थान में है। चन्द्रमा पापग्रह के साथ नीच का होकर आठवें है। लग्नेश मंगल पापग्रस्त है। सप्तमेश शुक्र नीचाभिलाषी है। उपरोक्त सभी योगायोग अकाल मृत्यु के लिए पर्याप्त हैं। इस महिला को मध्यम आयु में गुप्तांग में तकलीफ हुई। शीघ्र ईलाज कराया। डॉक्टर ने गुप्तांग ही निकाल कर नष्ट कर दिया। कैंसर की एक गांठ दाएं स्तन पर निकली। दायां स्तन ही काट दिया। महिला

बच गई, आज भी जीवित है। स्मरण रहे कि दाएं स्तन पर चन्द्रमा की राशि पापग्रस्त थी।

यह महिला बची क्यों? ज्योतिष की दृष्टि में यह जानना बहुत जरूरी है रोग के साथ-साथ आयुष्य योग भी देखें, तभी रोगी की आयु का पता चलेगा। यहां लग्नेश मंगल दिगबली व उच्च का होकर केन्द्रस्थ है तथा लग्नेश लग्न को देख रहा है। फिर इस महिला को अभिमंत्रित मंगल यंत्र भी दिया गया। इसके लिए आप हमारी पुस्तक ''ज्योतिष और आयुष्य'' योग पढ़ें।

स्तन कैंसर, जन्म 24/7/1962, समय-6.00 प्रातः, स्थान-जयपुर
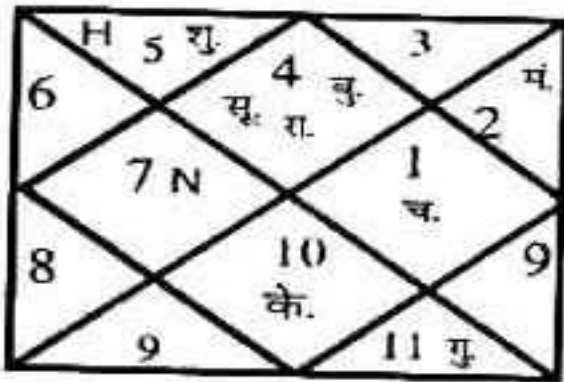
यह एक पच्चीस वर्षीय युवती की कुण्डली है। एक बार उसके सीने में दर्द उठा, एक छोटी फुन्सी स्तन पर दिखलाई दी, जांच कराने पर पता चला कि यह तो कैंसर है। जयपुर में इसका ईलाज हुआ। युवती जीवित है, विवाहित है एवं गृहस्थ सुख भोग रही है। अब कुण्डली क्या कहती है यह देखें।

सबसे पहली बात कर्कलग्न में जन्म है। लग्न में सूर्य, राहु इत्यादि पापग्रह हैं। लग्न पापग्रहो से दृष्ट है। षष्ठेश गुरु आठवें पापग्रगह की राशि में है। परन्तु चन्द्रमा उच्चाभिलाषी होकर केन्द्रस्थ होने एवं अन्य शुभ दृष्टि सम्बन्धों से युवती बच गई।

कैंसर से मृत्यु, जन्म-24/11/1904, समय-20.00, स्थान-मुम्बई
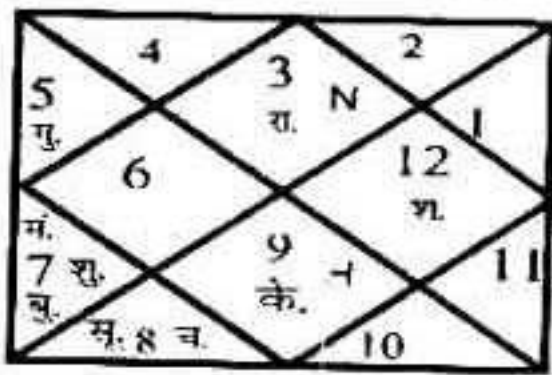
मिथुनलग्न में जन्मे प्रस्तुत जातक के फेफड़ों में कैंसर था। जातक लगातार धूम्रपान करने वाला था तथा सन् 1954 में कैंसर के द्वारा मृत्यु को प्राप्त हुआ। द्वितीयेश चन्द्रमा बलहीन नीच का होकर छठे पड़ा है। वृश्चिक का सूर्य दो पापग्रहों के मध्य पड़ा है षष्ठेश मंगल सूर्य+चन्द्र से बारहवें स्थान पर है। षष्ठेश मंगल ने द्वादशेश शुक्र से युति की है। लग्नेश ने षष्ठेश से युति की, लग्न पापग्रस्त है। अष्टमेश शनि नीचाभिलाषी है। डॉक्टरों ने इसे धूम्रपान न करने की सख्त हिदायत दी पर जातक माना नहीं और अपनी बुरी आदत के कारण मारा गया।

सम्भोग से कैंसर, जन्म-9/10/1951, समय-21.00, स्थान-जोधपुर
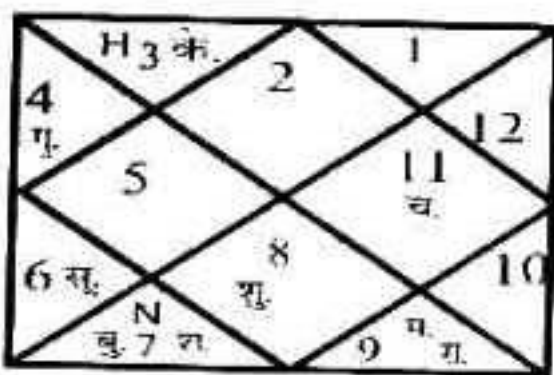
यह एक अत्यन्त सुन्दर युवती की कुण्डली है। यह युवती अत्यधिक कामुक थी तथा विवाहित होते हुए इसका परपुरुषों से संसर्ग था। अत्यधिक सम्भोग के कारण इसकी योनि में कैंसर हो गया। ईलाज के लिये मुम्बई गई। वहां इसका गुप्तांग शरीर से निकाल दिया गया। कैंसर थैरेपी हुई पर ईलाज के दौरान ही यह युवती मृत्यु को प्राप्त हुई। आइए इसका ज्योतिषीय विश्लेषण करें।

मंगल और राहु आठवें स्त्री के स्वेच्छाचारिणी एवं परपुरुषगामी बनाता है। षष्ठेश शुक्र सातवें, सप्तमेश, आठवे गुप्तांग में रोग देता है। चन्द्रमा पाप राशि में पापग्रह से दृष्ट जातक की मनस्थिति को बतलाता है। द्वितीयेश पापग्रह से युत होकर षष्ठम स्थान में है। द्वितीय भाव पापग्रस्त है। उच्च के गुरु ने इस रोग को बढ़ाया अतः कैंसर से मृत्यु हुई।

गोपनीयता भंग न हो इसलिए यहां सभी जातकों के नाम गुप्त रखे गए हैं। प्रबुद्ध पाठक इसके लिए मुझे क्षमा करेंगे। ज्योतिष में निरन्तर शोध प्रवृत्ति बढ़ाने हेतु व प्रमाणिकता की दृष्टि से कहीं कुछ कुण्डलियों में नामों का भी उल्लेख प्रसंगवश कर दिया गया है। इस संदर्भ में किसी यजमान को कोई कष्ट पहुंचा हो तो उसके लिए भी अत्यन्त विनम्र शब्दों में क्षमायाचना चाहता हूं। उपरोक्त जन्म कुण्डलियां संयोगवश किसी अन्य व्यक्ति की कुण्डली से मिल जाए तो उसके लिए लेखक, सम्पादक व प्रकाशक जिम्मेदार नहीं हैं।

❑❑❑

मूक योग पर उदाहरण कुण्डलियां

श्री जसराज अन्याव, जन्म-24/7/1934, इष्ट-3/10, स्थान-बालोतरा
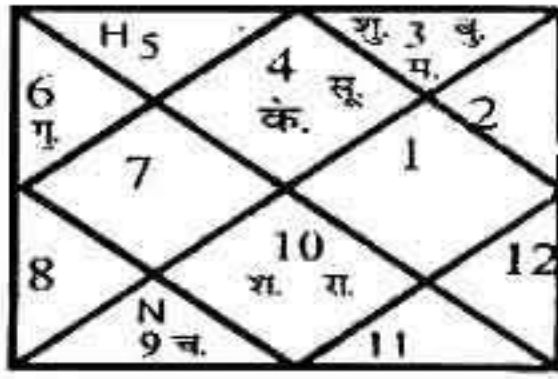
प्रस्तुत जातक जन्म से मूक (गूंगा) है। आप देखेंगे कि इस कुण्डली में वाणी का अधिपति सूर्य पापपीड़ित है। वाणीकारक बुध व्यय भाव में हो तथा कमजोर चन्द्रमा बुध को देख रहा है। फलत: जातक करोड़पति होते हुए भी गूंगा है। जीवन में सभी प्रकार के इलाज कराने पर भी मूकत्व दूर नहीं हुआ। जातकतत्त्व के सभी सूत्र इस कुण्डली पर सही रूप से घटित हो रहे हैं। जो कि ज्योतिष शास्त्र की प्रमाणिकता को स्पष्टत: उजागर कर रहे हैं। इस जातक के दो पुत्र, दो कन्याएं हैं। जिसमें से एक पुत्र, एक कन्या मूक है बाकी दो सही हैं। ज्योतिष प्रेमियों के हितार्थ मेरे व्यक्तिगत गोपनीय संकलन में से ये दोनों कुण्डलियां भी अध्ययन हेतु प्रस्तुत कर रहा हूं। जो इस प्रकार हैं।

श्री रोशन अन्याव, जन्म-23/9/1960, समय-5.50 शाम, स्थान-बालोतरा
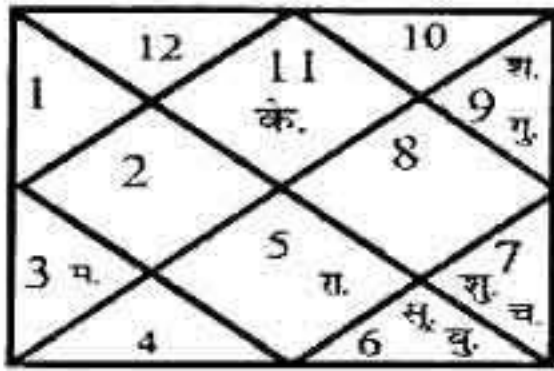
इस कुण्डली में वाणी (द्वितीय भाव) की अधिपति गुरु पापग्रस्त है। वाणी का कारक बुध आठवें है। खड्ढे में गिरा हुआ अष्टमेश व सप्तमेश सूर्य (पापग्रह) पूर्ण दृष्टि से द्वितीय स्थान (वाणी भाव) को देख रहे हैं। फलत: जातक गूंगा (मूक) है। धन स्थान का स्वामी गुरु स्वगृही होकर लाभ में उत्तम दृष्टियों वाला है सो जातक को धन की कमी नहीं है।

श्रीमति निर्मला जैन, जन्म-30/3/1963, समय-9.48, स्थान-बालोतरा
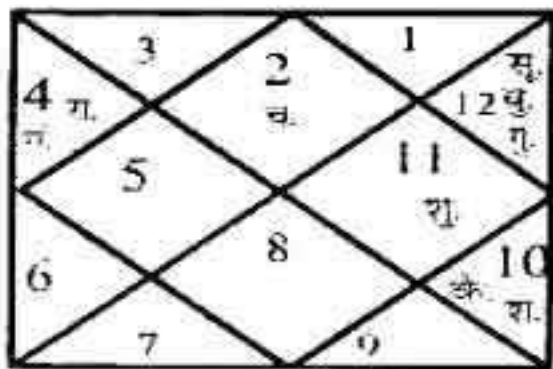
प्रस्तुत कुण्डली में द्वितीयेश एवं अष्टमेश की युति लाभ स्थान में है। अत: यह महिला भी जन्म से मूक (गूंगी) है। साथ ही वाणी का अधिपति बुध नीच राशिगत भी है। ज्योतिष विद्यार्थियों के लिए मूक योग का यह अनुपम उदाहरण है। जातक पारिजात का श्लोक भी काफी अंशों तक इस कुण्डली में फलित हो रहा है। द्वितीयेश की गुरु से युति होने पर जातक मूक होता है। यह बात भी यहां लागू हो रही है।

❑❑❑

मेषलग्न और विवाहयोग

1. मेषलग्न हो, मंगल सप्तम भाव में, शनि लग्न में हो तो जातक अवश्य ही दूसरा विवाह करता है।
2.. यदि पाप ग्रह षष्ठेश, धनेश और लग्नेश से युक्त होकर सप्तम भाव में हो तो जातक परस्त्रीगामी होता है।
3. गुरु-बुध सप्तम भाव में हो तो जातक कई स्त्रियों के साथ संभोग करता है।
4. मेषलग्न हो. शुक्र व सूर्य प्रथम या सप्तम भावस्थ हों तो जातक की स्त्री बन्ध्या होती है।
5. मेषलग्न हो, शुक्र स्व का सप्तम भवन में हो तो निश्चय ही पति से वियोग भोगना पड़ता है। अर्थात् पति-पत्नी में विच्छेद होता है।
6. मेषलग्न में शनि लग्नस्थ चन्द्रमा के साथ हो तथा सप्तम भाव में सूर्य हो ऐसे जातक के विवाह में भयंकर बाधा आती है विलम्ब से विवाह तो निश्चित है। अविवाह की स्थिति भी बन सकती है।
7. मेषलग्न में शनि द्वादशस्थ हो, द्वितीयभाव में सूर्य हो और लग्नेश मंगल निर्बल हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
8. मेषलग्न में शनि छठे हो, सूर्य अष्टम में हो एवं सप्तमेश शुक्र बलहीन हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
9. मेषलग्न में सूर्य और शनि के साथ सप्तमेश शुक्र भी हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
10. मेषलग्न में शुक्र कर्क या सिंह राशि में हो तथा सूर्य या चन्द्रमा शुक्र से द्वितीय या द्वादश स्थान में हो तो जातक का विवाह नहीं होता ।
11. मेषलग्न में सप्तमेश शुक्र के साथ सूर्य चन्द्रमा स्थित हो तो ऐसे में शुक्र अत्यन्त पापी हो जाता है। ऐसी स्थिति में प्रथम तो जातक का विवाह नहीं होता। यदि विवाह हो भी जाए तो जातक को अविवाहित की तरह जीवन यापन करना पड़ता है।
12. राहु या केतु सप्तम भाव या नवम भाव के क्रूर ग्रहों से युक्त होकर बैठे हों तो निश्चय ही जातक का विवाह विलम्ब से होता है। ऐसा जातक प्राय: अंतर्जातीय विवाह करता है।
13. मेषलग्न में द्वितीयेश शुक्र वक्री हो या द्वितीय भाव में कोई ग्रह वक्री हो तो जातक के विवाह में अत्यधिक अवरोध उत्पन्न होता है।

14. मेषलग्न में सप्तमेश शुक्र वक्री हो, सप्तम भाव में कोई भी ग्रह वक्री हो या वक्री ग्रहों की सप्तम भाव पर दृष्टि हो तो जातक के विवाह में अनेक अवरोध आते हैं। विवाह समय पर सम्पन्न नहीं होता।
15. मेषलग्न तथा चन्द्रमा एवं शुक्र लग्न में स्थित हो और उन्हें पापग्रह देखते हों तो ऐसी स्त्री परपुरुष गामिनी होती है तथा उसकी माता या मातातुल्य किसी वृद्ध स्त्री का इस कार्य में पूर्ण सहयोग रहता है।
16. मेषलग्न में राहु यदि आठवें स्थान में हो तो ऐसी स्त्री वैधव्य दु:ख को भोगती है।
17. मेषलग्न में जिस स्त्री की कुण्डली में चन्द्रमा आठवें हो तो वह स्त्री पति सुख से हीन होती है। प्राय: ऐसी स्त्री विवाह के आठवें वर्ष में विधवा होती है।
19. मेषलग्न में सातवें सूर्य शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो, तो स्त्री पति द्वारा त्याग दी जाती है उसका प्राय: तलाक होता है।
19. मेषलग्न में चन्द्रमा यदि चर (मेष, कर्क, तुला, मकर) राशि में हो, केन्द्र में पाप ग्रह, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसी स्त्री विवाह के पूर्व पर पुरुषों से संसर्ग करती है।
20. मेषलग्न में सूर्य आठवें शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसी स्त्री नित नए अलंकार व वस्त्र पहन कर परपुरुषों का संग करती है तथा कुल की मर्यादाएं तोड़ देती है।
21. मेषलग्न में सप्तमेश यदि चर राशि में हो तो स्त्री का पति परदेश में रहने वाला होगा। ऐसे में बुध व शनि यदि सप्तम में हों तो स्त्री का पति नपुंसक होगा।
22. मेषलग्न में मंगल आठवें हो तो ऐसी स्त्री मृगनयनी एवं कुटिल होती है। ऐसी स्त्री प्रेम विवाह करती है तथा स्वच्छन्द यौनाचार में विश्वास रखती है।
23. मेषलग्न में मंगल हो, सप्तमेश शुक्र, आठवें हो, सप्तम भाव में बुध हो तो ऐसी स्त्री एक के बाद दूसरा पति और दूसरे के बाद तीसरा पति करती है। इसमें आत्मनिर्णय की कमी रहती है।
24. मेषलग्न में शुक्र सप्तम में हो, शुभ ग्रह उसे देखते हों तो जातक की पत्नी अत्यन्त सुन्दर, स्त्री-धर्म परायण एवं पतिव्रता होती है तथा विवाह के बाद पति के भाग्य को चमकाती है।
25. मेषलग्न में षष्टेश बुध राहु के साथ होकर यदि लग्नेश मंगल से किसी प्रकार का संबंध करे तो ऐसा जातक नपुंसक होता है।
26. मेषलग्न में चन्द्रमा मेष का वृश्चिक राशि में हो और इन्हीं राशियों का त्रिशांश भी हो तो ऐसी कन्या विवाह से पूर्व पर पुरुष से संसर्ग करती है।
27. मेषलग्न में शुक्र चन्द्रमा साथ में कहीं भी बैठें, पापग्रहों से दृष्ट हो ऐसी स्त्री व्याभिचारणी होती है।
28. मेषलग्न में चन्द्रमा यदि (1/3/5/7/9/11) राशि में हो तो ऐसी स्त्री पुरुष की तरह कठोर स्वभाव वाली एवं साहसिक मनोवृत्ति-वाली होती है।

29. मेषलग्न में यदि सूर्य, मंगल, गुरु, चन्द्र, बुध व शुक्र बलवान हो तो ऐसी स्त्री गलत सोहबत या परिस्थित वश पर पुरुष की अंकशयिनी बन सकती है।
30. मेषलग्न में सप्तमेश शुक्र यदि चर राशि (1/4/7/10) में हो तो ऐसी स्त्री का पति निरन्तर प्रवास में रहता है।
31. मेषलग्न में चन्द्रमा एवं शुक्र लग्नस्थ पापग्रह से दृष्ट हों, तो ऐसी स्त्री अपनी माता सहित परपुरुष गामिनी होती है।
32. मेषलग्न में चन्द्र और शुक्र लग्नस्थ हों तथा पंचम स्थान पर पापग्रहों की दृष्टि हो तो वह नारी बन्ध्या होती है।
33. मेषलग्न में लग्नस्थ मंगल स्वगृही हो तो जातक के द्विभार्यायोग बनता है। ऐसा जातक दो नारियों से रमण करता है।
34. मेषलग्न में शुक्र यदि द्वितीय या द्वादश स्थान में हो तो ऐसा जातक जीवन में अनेक स्त्रियों के साथ रमण करता है।
35. मेषलग्न में सूर्य सातवें हो तो ऐसे जातक की पत्नी अल्पजीवी होती है।

❑❑❑

मेषलग्न एवं संतान योग

1. वैसे मेषलग्न अन्य सन्तति वाला है परन्तु पंचमेश सूर्य आठवें हो तो जातक के अल्प सन्तति होती है।
2. मेषलग्न में पंचमेश सूर्य अस्त या पापग्रस्त होकर छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो जातक के पुत्र नहीं होता।
3. मेषलग्न में पंचमेश सूर्य लग्न (मेष राशि) में हो तथा गुरु से युत या दृष्ट हो तो जातक के प्रथम पुत्र होता है।
4. मेषलग्न में मंगल हो, पंचम से सूर्य एवं आठवें गुरु हो तो जातक के बहुत काल के बाद (जवानी बीत जाने पर) बहुत प्रयत्न करने पर पुत्र होता है।
5. मेषलग्न में शनि हो, अष्टम में गुरु एवं मंगल, बारहवें हो तो जातक के बहुत काल के बाद (जवानी बीत जाने पर) बहुत प्रयत्न करने पर पुत्र होता है।
6. मेषलग्न में चन्द्रमा ग्यारहवें हो, लग्न में पापग्रह हों, गुरु से पांचवें स्थान में भी पापग्रह हो तो व्यक्ति की जवानी बीत जाने पर, बहुत प्रयत्न करने पर पुत्र होता है।
7. मेषलग्न में पंचमेश सूर्य लग्न में हो तथा लग्नेश मंगल पंचम स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हों तो जातक दूसरे की संतान गोद लेता है।
8. राहु, सूर्य एवं मंगल पंचम भाव में हों तो ऐसे जातक को शल्यचिकित्सा द्वारा कष्ट से पुत्र सन्तान की प्राप्ति होती है। आज की भाषा में ऐसे बालक को, ''सिजेरियन चाइल्ड'' कहते हैं।
9. मेषलग्न में पंचमेश कमजोर हो तथा राहु एकादश में हो तो जातक को वृद्धावस्था में सन्तान की प्राप्ति होती है।
10. पंचम स्थान में राहु, केतु या शनि इत्यादि पापग्रह हो तो गर्भपात अवश्य होता है।
11. मेषलग्न में लग्नेश मंगल द्वितीय स्थान में हो तथा पंचमेश, सूर्य पापग्रस्त या पापपीड़ित हो तो जातक के पुत्र उत्पन्न होने के बाद नष्ट हो जाता है।
12. मेषलग्न में शनि+मंगल पंचम भाव में बैठे हों और पंचमेश सूर्य छठे चला गया हो तो जातक को पुत्र का सुख नहीं मिलता। पुत्र उत्पन्न जरूर होता है पर कुछ कालान्तर के बाद मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।
13. मेषलग्न में पंचमेश सूर्य बारहवें शुभग्रहों से युत या दृष्ट हो तो जातक की वृद्धावस्था

में पुत्र की अकाल मृत्यु होती है। जिससे जातक को संसार से विरक्ति होकर वैराग्य की प्राप्ति होगी।

14. पंचमेश यदि वृष, कर्क, कन्या या तुला राशि में हो तो जातक को प्रथम सन्तति के रूप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।
15. मेषलग्न में पंचमेश सूर्य की सप्तमेश शुक्र से युति हो तो जातक को प्रथम सन्तति के रूप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।
16. समराशि (2, 4, 6, 8, 10, 12) में गया हुआ बुध कन्या सन्तति की बाहुल्यता देता है। यदि चन्द्रमा और शुक्र का भी पंचम भाव पर प्रभाव हो तो यह योग अधिक पुष्ट हो जाता है।
17. पंचमेश सूर्य निर्बल हो, लग्नेश मंगल निर्बल हो तथा पंचम भाव में राहु हो तो जातक के सर्पदोष के कारण पुत्र सन्तान नहीं होती।
18. पंचम भाव में राहु हो और एकादश स्थान में स्थित केतु के मध्य सारे ग्रह हों तो पद्मनामक "कालसर्प योग" के कारण जातक के पुत्र सन्तान नहीं होती। ऐसे जातक को वंश वृद्धि की चिन्ता एवं मानसिक तनाव रहता है।
19. सूर्य अष्टम हो, पंचम भाव में शनि हो, पंचमेश राहु से युत हो तो जातक को पितृदोष होता है तथा पितृशाप के कारण पुत्र सन्तान नहीं होती।
20. लग्न में मंगल, अष्टम में शनि, पंचम में सूर्य एवं बारहवें स्थान में राहु या केतु हो तो "वंशविच्छेद योग" बनता है। ऐसे जातक के स्वयं का वंश समाप्त हो जाता है। आगे पीढ़ियां नहीं चलती।
21. मेषलग्न के चतुर्थभाव में पापग्रह हो तथा चन्द्रमा जहां बैठा हो उससे आठवें स्थान में पापग्रह हो तो वंशविच्छेद योग बनता है। ऐसे जातक के स्वयं का वंश समाप्त हो जाता, उसके आगे पीढ़ियां नहीं चलतीं।
22. तीन केन्द्रों में पापग्रह हों तो व्यक्ति को "इलाख्य नामक" सर्पयोग बनता है। इस दोष के कारण जातक को पुत्र संतान का सुख नहीं मिलता। दोष निवृत्ति पर शान्ति हो जाती है।
23. मेषलग्न में पंचमेश प्रथम, षष्ठ या द्वादश भाव में हो तथा पंचम भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो "अनपत्य योग" बनता है ऐसे जातक को निर्बीज पृथ्वी की तरह सन्तान उत्पन्न नहीं होती पर उपाय से दोष शान्त हो जाता है।
24. पंचम भाव मंगल बुध की युति हो तो जातक के जुड़वा सन्तान होती है। पुत्र या पुत्री की कोई शर्त नहीं।
25. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में सूर्य लग्न में और शनि यदि सातवें हो, अथवा सूर्य+शनि युति सातवें हो, तथा दशम भाव पर गुरु की दृष्टि हो तो "अनगर्भा योग" बनता है ऐसी स्त्री गर्भधारण योग्य नहीं होती।

26. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में शनि+मंगल छठे या चौथे स्थान में हो तो "अनगर्भा योग" बनता है ऐसे स्त्री गर्भधारण करने योग्य नहीं होती।
27. शुभ ग्रहों के साथ सूर्य+चन्द्रमा यदि पंचम स्थान में हो तो "कुलवर्द्धन योग" बनता है। ऐसी स्त्री दीर्घजीवी, धनी एवं ऐश्वर्यशाली सन्तानों को उत्पन्न करती है।
28. पंचमेश मिथुन या कन्या राशि में हो, बुध से युत हो, पंचमेश और पंचम भाव पर पुरुष ग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक को "केवल कन्या योग" होता है। पुत्र सन्तान नहीं होती।
29. मेषलग्न हो, सप्तम भाव, शुक्र, शनि व राहु के प्रभाव में हो अर्थात् लग्न में शुक्र, दूसरे शनि व 12वें राहु हो तो जातक के सन्तान नहीं होती।
30. मेषलग्न में पंचमेश सूर्य द्वितीय स्थान में लग्नेश मंगल के साथ हो तथा कुम्भ का शनि पूर्ण दृष्टि से पंचम भाव की ओर देख रहा हो तो ऐसे जातक के पुत्र ही पुत्र (कम से कम पांच पुत्र) होते हैं। कोई कन्या सन्तति नहीं होती।

उदाहरण–मुरलीधर दवे 6/6/1936 समय 04.15 स्थान दुन्दाडा (बाड़मेर)

❑❑❑

मेषलग्न और राजयोग

1. पूर्ण मेषलग्न में जिसका जन्म हो और सूर्य लग्न में उच्च का हो, उच्च का गुरु कर्क के चतुर्थ भाव में बैठा हो, उच्च का मंगल मकर के दशम भाव में हो। जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
2. मेषलग्न में सूर्य-गुरु के उच्च होने पर तुला का शनि सप्तम में उच्च हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
3. मेषलग्न में सूर्य-मंगल-शनि तीनों ग्रह उच्च के हों तो, जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
4. मेषलग्न में सूर्य, गुरु, मंगल और शनि चारों ही उच्च के हों तो, जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
5. मेषलग्न में सूर्य, गुरु उच्च हों और स्वगृही चन्द्रमा गुरु के साथ हो तो, जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
6. मेषलग्न में सूर्य-शनि उच्च के हों, चन्द्रमा स्वगृही हो तो, जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
7. मेषलग्न में सूर्य मंगल उच्च के हों चन्द्रमा स्वगृही हो तो, जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
8. मेषलग्न में सूर्य उच्च का व चन्द्रमा स्वगृही हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
9. मेषलग्न में शुक्र स्वगृही सूर्य, बुध के साथ मंगल उच्च का दशम हो तो, जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
10. मेषलग्न में उच्च का मंगल, नीच का सूर्य बुध के साथ, कर्क का शनि हो तो, जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
11. मेषलग्न में गुरु भाग्य स्थान में, सूर्य, बुध सप्तम में, मंगल रिपु भाव में हो तो, जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
12. मेषलग्न में सूर्य, बुध, शुक्र सप्तम में गुरु भाग्य स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।

13. मेषलग्न में सूर्य-शुक्र सप्तम में मंगल दशम में शनि चतुर्थ में हो, तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
14. मेषलग्न में सूर्य सप्तम में, गुरु नवम में, मंगल दशम में, शनि चतुर्थ में हो, जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
15. मेषलग्न में शुक्र सूर्य सप्तम में मंगल दशम में गुरु पंचम भाव में हो तो, जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
16. मेषलग्न में सूर्य-शुक्र सप्तम में, शनि एकादश में और गुरु पंचम स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
17. मेषलग्न में सूर्य-शुक्र बुध सप्तम में शनि चतुर्थ में हो, जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
18. मेषलग्न में सूर्य-बुध सप्तम में, शनि एकादश में, गुरु पंचम में हो तो, जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
19. मेषलग्न में सूर्य-बुध सप्तम में, शनि एकादश में, गुरु पंचम में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
20. मेषका मंगल लग्न में उच्च का गुरु चतुर्थ में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
21. मेषलग्न में शुक्र-बुध सप्तम में, मंगल दशम में गुरु पंचम में हो तो, जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
22. मेषलग्न में शुक्र-बुध सप्तम, शनि एकादश में मंगल रिपु भाव में हो तो, जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
23. मेषलग्न में बुध सप्तम में मंगल दशम में शनि एकादश में गुरु पंचम में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
24. मेषलग्न में बुध, शुक्र सप्तम में, शनि एकादश में गुरु पंचम में हो तो, जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
25. मेषलग्न में सूर्य, बुध, शुक्र, सप्तम में, मंगल दश में गुरु पंचम में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
26. मेषलग्न में शुक्र सप्तम में, मंगल दशम में, शनि चतुर्थ में, गुरु पंचम में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
27. मेषलग्न में सूर्य, बुध-शुक्र सप्तम में, मंगल दशम में शनि एकादश में हो तो, जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
28. मेषलग्न में सूर्य, शुक्र सप्तम में, गुरु नवम, मंगल दशम में, शनि चतुर्थ में हो तो, जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
29. मेषलग्न में सूर्य, बुध सप्तम में, गुरु नवम में, शनि एकादश में, मंगल छठे स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।

30. मेषलग्न में सूर्य, शुक्र, बुध सप्तम में, मंगल दश में, शनि चतुर्थ में, गुरु पंचम में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
31. मेषलग्न में सूर्य-बुध-शुक्र सप्तम में, शनि एकादश में, गुरु पंचम में हो तो जातक राजा के समान ऐंश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
32. मेषलग्न में शनि बुध सप्तम में, शनि एकादश में, मंगल छठे भाव में हो तो या मेष का मंगल लग्न में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
33. मेषलग्न में उच्च का गुरु चतुर्थ में हो तो मेष का गुरु लग्न में, स्वगृही चन्द्रमा चतुर्थ में, मकर का शुक्र दशम में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
34. मेष का सूर्य गुरु लग्न में, मकर का मंगल दशम में तथा चन्द्रमा, शुक्र और बुध भाग्य स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
35. मेषलग्न में उच्च का सूर्य लग्न में, उच्च का गुरु चतुर्थ में, उच्च का शनि चन्द्रमा के साथ सप्तम भाव में हो तो मनुष्य निश्चय से बड़ा आदमी होता है और राजा का पुत्र एवं अपने पिता का राज्याधिपति पाता है।
36. मेषलग्न में उच्च का सूर्य, गुरु के साथ लग्न में हो, वृष का शुक्र दूसरे स्थान धन भाव में हो, शनि उच्च का तुला में मंगल के साथ सप्तम स्थान में हो और मीन का चन्द्रमा बुध के साथ द्वादश भाव में हो तो मनुष्य भाग्यवान तथा राज्य का स्वामी होता है।
37. मेष का सूर्य लग्न में, वृष का चन्द्रमा धन में, मिथुन का राहु परोक्रम में और कर्क का गुरु चतुर्थ में हो तो मनुष्य सरकारी नौकरी में बहुत बड़े पद को प्राप्त करता है।
38. मेषलग्न हो, लग्न में ही चन्द्रमा हो तथा चंद्र व मंगल की युति हो तो जातक अवश्य ही संसद सदस्य बनता है।
39. मेषलग्न हो तथा सूर्य उच्च का (मेष में) हो। गुरु स्वराशिस्थ नवम भावस्थ हो एवं कर्मेश मंगल उच्च का अर्थात् मंगल कुंभ का हो जो जातक राज्यपाल बनता है।
40. मेषलग्न हो तथा मंगल-गुरु का सम्बन्ध हो तो वह जातक केन्द्रीय मंत्री बन कर कई विदेश-यात्राएं करता है।
41. मेषलग्न हो, लग्न में सूर्य, मंगल, शनि, केतु इनमें से कोई हो तथा गुरु भाग्य भवन में हो तो जातक अवश्य केन्द्रीय मंत्री बनता है।
42. मेषलग्न वाले जातक की कुण्डली में 11वें भवन में यदि चन्द्रमा एवं गुरु हो, उन पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो जातक उच्च शासनाधिकारी बन कर मान पाता है।
43. चन्द्रमा लग्न में स्थित हो, शनि एकादश भाव में, सूर्य स्वराशिस्थ सन्तान भवन (5) में तथा गुरु मृत्यु भाव (8) में हो तो जातक उच्च पदासीन होता है।
44. लग्नेश व राशि लग्न में होकर 9वें चन्द्रमा हो तो जातक शासन में विरोधी दल का नेतृत्व करता है।

45. मेष लग्नस्थ जातक को पाप ग्रह नहीं देखता हो तो भी जातक उच्च पद प्राप्त करता है।
46. मेषलग्न हो तथा कर्मेश मंगल हो, छठे बुध, व्यय भाव में शुक्र हो तो जातक एम.एल.ए. बनता है।
47. मेष स्थित चन्द्रमा को गुरु पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो जातक उच्च पद की प्राप्ति करता है।
48. मेषलग्न हो तथा बुध चौथे, गुरु सातवें, शुक्र 10वें भावस्थ हो तो जातक एम.पी. बनता है।
49. मेषलग्न हो तथा समस्त शुभ ग्रह केन्द में स्थित हों तो जातक राज्यपाल बनता है।
50. मेषलग्न हो। चतुर्थेश चौथे एवं भाग्येश 10वें हो तो एवं लग्नेश बलवान हो तो जातक सेना में उच्च पद की प्राप्ति करता है।
51. मेषलग्न हो, लग्नेश लग्न को देखता हो, भाग्येश गुरु, केन्द्र या त्रिकोण में (5, 9) हो तो जातक को उच्च पद की प्राप्ति हाती है।
52. मेषलग्न हो, चतुर्थेश, पंचमेश अर्थात् सूर्य, चंद्र का योग हो तो प्रबल राजयोग बनता है।
53. जन्म लग्न मेष हो, मंगल लग्नाधिपति 5वें घर में हो तो लग्नेश की दशा में निश्चय ही राजयोग, अभ्युदयादि होता है।
54. मेषलग्न में उच्च का गुरु और मंगल तथा मेषलग्न में मंगल और गुरु हो, तो राजयोग होता है।
55. सिंह मेषलग्न में सिंह का सूर्य, गुरु, कुंभ का शनि, वृष का चन्द्रमा, वृश्चिक का मंगल, मिथुन का बुध और मेषलग्न में हो तो राजयोग होता है।

❑❑❑

मेषलग्न में आशीर्वादात्मक कुण्डली का मंगल दर्शन

॥ देवाधिदेव महादेव की कुण्डली॥

भाव	ग्रह
1	मं. सू.
2	चं.
3	रा.
4	गु.
5	
6	
7	
8	
9	के.
10	श.
11	
12	शु. बु.

वन्दे देवगुमापतिं सुरगुरुं, वन्दे जगत्कारणम्।
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं, वन्दे पशूनांपतिम्।
वन्दे सूर्य शशा.क वहि्न नयनं, वन्दे मुकुन्दं प्रियम्।
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदे वन्दे शिवं शंकरम्॥

इस संसार के आदिकारण, पार्वती के पति, समस्त देवताओं के गुरु बाघाम्बर पहनने वाले मणिधारी सर्पों के आभूषणों से सुशोभित भगवान विष्णु के परमप्रिय उपास्यदेव, सूर्य व चन्द्रमा रूपी नेत्रों को धारण करने वाले, समस्त संसार के अग्नितत्त्व को तीसरे नेत्र में स्थापित करने वाले, भक्तों के आश्रयदाता भगवान शंकर की समस्त संसार के प्राणियों का मंगल (कल्याण) करने वाले, परम सुन्दर एवं शान्ति करने वाले शंकर स्वरूप को बारम्बार नमस्कार है। ऐसे देवाधिदेव महादेव दीर्घकाल तक इस जातक की रक्षा करें।

❑❑❑

मेष लग्न में सूर्य की स्थिति

मेष लग्न में सूर्य की स्थिति प्रथम स्थान में
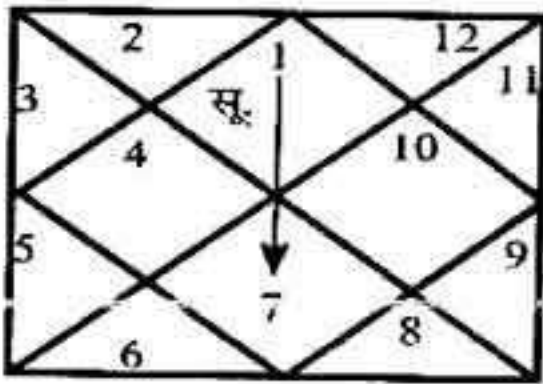
मेषलग्न में सूर्य पंचमेश (त्रिकोणपति) होने के कारण शुभफलदाई है। लग्न (प्रथम स्थान) में सूर्य मेष राशि में होने से उच्च का होगा। भृगुसूत्र के अनुसार–**'स्वोच्चे कीर्तिमान्'** जातक राजा के समान कीर्तिवान, परोपकारी एवं यशस्वी होता है। ऐसा जातक स्वतंत्र विचारों वाला एवं आरोग्यवान होता है। साधारण परिवार में जन्म लेकर भी उच्च पद को प्राप्त करता है। सिरदर्द की शिकायत रहती है। दिमाग गर्म रहता है।

निशानी–सतयुगी राजा, हकीम, लालबत्ती का हकदार।

दशा–सूर्य की दशा बहुत अच्छा फल देगी।

अनुभव–भोजसंहिता के अनुसार ऐसा जातक प्रशासनिक अधिकारी होता है। इसका पिता समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चन्द्र**–सूर्य के साथ यदि चन्द्रमा हो तो जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या प्रात: 6 से 8 बजे के मध्य होगा। जातक धनी व सुखी होगा। उसकी पत्नी सुन्दर होगी। यह युति प्रबल राजयोग कारक है।
2. **सूर्य+मंगल– किम्बहुना योग**–सूर्य के साथ यदि लग्नेश मंगल हो तो, 'रुचक योग' भी बनेगा। जातक राजा होगा। विधायक, सांसद, मंत्री या श्रेष्ठ राजनीतिज्ञ होगा। यह युति प्रबल राजयोग कारक है।
3. **सूर्य+बुध**–सूर्य के साथ बुध हो तो 'बुधादित्य योग' बनेगा। यह एक प्रकार का राजयोग है।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ भाग्येश गुरु जातक को भाग्यशाली बनाएगा। जातक को सही भाग्योदय प्रथम पुत्र जन्म के बाद होगा।

5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ स्वगृहाभिलाषी होगा। ऐसे जातक की पत्नी सुन्दर होगी व तेज स्वभाव की होगी।
6. **सूर्य+शनि–नीचभंग राजयोग**–सूर्य के साथ यदि शनि हो तो नीचभंग राजयोग बनेगा। इससे शनि का नीचत्व भंग हो जाता है। जातक राजा होगा। विधायक, सांसद, मंत्री या श्रेष्ठ राजनीतिज्ञ होता है।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु विद्या में बाधा डालेगा। राजकाज में भी बाधा आएगी।
8. **सूर्य+केतु**–जातक को तेजस्वी वक्ता बनाएगा। ऐसा जातक पराक्रमी होगा।
9. सूर्य लग्न में तथा चन्द्रमा चौथे हो तो यह भी एक उत्तम राजयोग की सृष्टि करेगा। ऐसे जातक का जन्म वैशाख शुक्ल अष्टमी प्रात: 6 से 8 बजे के मध्य को होगा।
10. सूर्य लग्न में तथा मंगल दसवें, गुरु चौथे या नवमें हो तो यह जबरदस्त राजयोग होगा। व्यक्ति मिनिस्टर (राजा) होगा। लालबत्ती का स्वामी होगा।

प्रथम भाव में सूर्य का उपचार–

1. माणिक रत्न का लॉकेट "सूर्य यंत्र" साथ जड़वाकर पहने।
2. यदि जातक अपने पैतृक मकान में हैण्डपम्प लगाए तो सूर्य का दुष्प्रभाव नष्ट होगा।
3. परोपकार एवं सेवा का कार्य अधिक करे।

मेषलग्न में सूर्य की स्थिति द्वितीय स्थान में
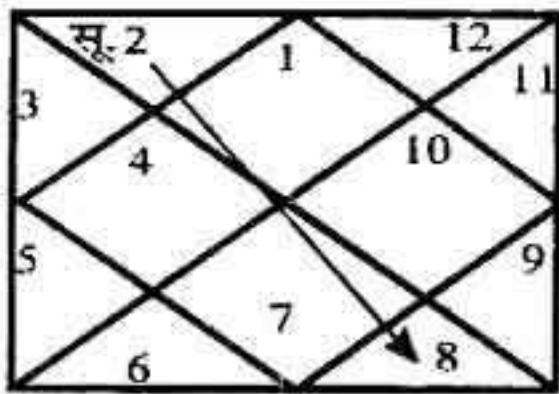
मेषलग्न में सूर्य पंचमेश (त्रिकोणपति) होने के कारण शुभफलदाई है। द्वितीय स्थान में सूर्य वृषभ राशि में होगा। ऐसा जातक समाज में इज्जत-मान पाने वाला, दस्तकार, फैक्ट्री का मालिक, राजदरबार (सरकार) से मान-सम्मान पाने वाला यशस्वी जातक होता है। ऐसा व्यक्ति भाग्यशाली होता है पर अपने कुटुम्ब के सदस्यों से वैमनस्य रखता है। इस जातक का धन शुभ मार्ग, शुभ कार्य में खर्च होता है। गृह द्वार पर (घोड़े) बड़े-बड़े वाहन खड़े होकर घर की शोभा बढ़ाते हैं।

निशानी–अपने भुजा बल का स्वामी। प्रथम पुत्र जन्म के बाद जातक का भाग्योदय होगा।

अनुभव–भोजसंहिता के अनुसार जातक की वाणी अभिमानी व कटाक्ष वाली होती है।

दशा–सूर्य की दशा बहुत अच्छी जाएगी। धन की प्राप्ति होगी। सन्तति सुख भी मिलेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चन्द्र**–सूर्य के साथ यदि चन्द्रमा हो तो जातक को '**माता की सम्पत्ति**' मिलेगी। जातक धनवान होगा। उसका पुत्र भी धनवान होगा। ऐसे जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या रात्रि 4 बजे के आसपास होगा। यह युति प्रबल राजयोग कारक है।

2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ यदि लग्नेश मंगल हो तो जातक स्व पराक्रम से खूब धन कमाएगा। जातक का परिश्रम सार्थक रहेगा।
3. **सूर्य+बुध**–सूर्य के साथ बुध हो तो **'बुधादित्य योग'** बनेगा। यह पंचमेश सूर्य की षष्टेश+तृतीयेश बुध के साथ युति होगी। बुध स्वगृही होगा। ऐसा जातक पराक्रमी होगा परन्तु धीरे-धीरे, अटक-अटक कर बोलेगा।
4. **सूर्य+गुरु**–जातक भाग्यशुक होगा। तीर्थयात्रा धार्मिक कार्य में रुपया कमाएगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ यदि शुक्र हो तो **'पुत्रमूल धनयोग'** बनेगा। जातक पुत्र द्वारा धन, यश व कीर्ति को प्राप्त करेगा।
6. **सूर्य+शनि**–सूर्य के साथ शनि, पिता की मृत्यु के बाद जातक का भाग्योदय कराता है।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु धन के घड़े में छेद, धन की बरकत नहीं। पुत्र खर्चीले स्वभाव का होगा।
8. **सूर्य+केतु**–जातक की वाणी घमण्डी होगी पर अचानक बोला गया वचन सत्य हो जाएगा।

द्वितीय भाव में सूर्य का उपचार–

1. मुफ्त का माल नहीं खाना चाहिए
2. मुफ्त का दान नहीं ले।
3. नारियल का तेल या बादाम का तेल धर्म स्थान पर चढावे।
4. आदित्य हृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

मेषलग्न में सूर्य की स्थिति तृतीय स्थान में
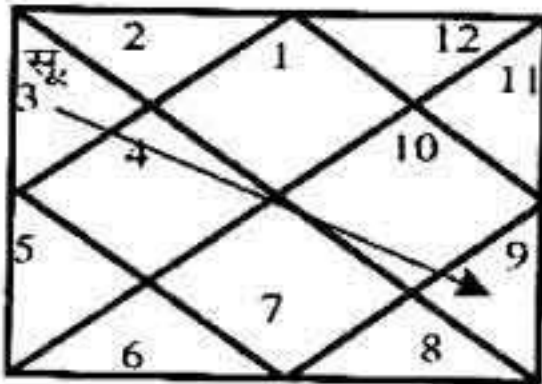
मेषलग्न में सूर्य पंचमेश (त्रिकोणपति) होने के कारण शुभफलदाई है। तृतीय स्थान में सूर्य मिथुन राशि में मित्रक्षेत्री होगा। राजदरबार (सरकार) में मुकदमे में हमेशा जीत पाने वाला, दृढ़ निश्चयी, भाइयों-कुटम्बियों में मान पाने वाला, पिता की सम्पत्ति पाने वाला, गणित का जानकार ज्योतिष का विद्वान एवं महान पराक्रमी होगा।

अनुभव–'भोज संहिता' के अनुसार ऐसे जातक के मित्र धनी होते हैं। भाई प्रभावशाली पद पर होते हैं। जातक साहसी होगा। उसे धर्मगुरु के रूप में यश मिलेगा।

निशानी–धन का राजा, स्वयं कमाकर खाने वाला 'अनुजरहित' ज्येष्ठनाशः (भृगुसूत्र) घर में आप बड़ा होगा। ज्येष्ठ भाई का नाश होगा।

दशा–सूर्य की दशा उत्तम फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चन्द्र**–सूर्य के साथ यदि चन्द्रमा हो तो जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या

रात्रि को 2 से 4 बजे के बीच होगा। जातक पराक्रमी होगा पर पीठ पीछे इसकी बुराई होती रहेगी पर जातक मित्रों को वशीभूत करने में समर्थ होगा।

2. **सूर्य+मंगल**–ऐसा जातक पराक्रमी होगा। पर भाइयों में नहीं बनेगी।
3. **सूर्य+बुध–बुधादित्य योग**–पंचमेश व तृतीयेश की युति मित्रों से लाभ दिलाएगी। कुटम्ब-परिवार में प्रतिष्ठा रहती है। जातक महान पराक्रमी होता है। ऐसा जातक बहु प्रजावान सन्तति वाला होता है।
4. **सूर्य+गुरु**–जातक भाग्यशाली होगा एवं भाइयों की मदद के आगे बढ़ेगा। मित्रों की मदद रहेगी।
5. **सूर्य+शुक्र**– धनेश एवं पंचमेश की युति विवाह के बाद धन प्राप्ति कराएगी। दूसरा भाग्योदय प्रथम सन्तति के बाद होगा।
6. **सूर्य+शनि**– सूर्य शनि की युति भाइयों में मनमुटाव उत्पन्न कराएगी।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य राहु परिजनों में विग्रह कराएगा पर जातक जबरदस्त पराक्रमी होगा।
8. **सूर्य+केतु**–जातक कीर्तिवान् होगा। कुटुम्बीजनों के लिए त्याग करेगा, पर उसका फल नहीं मिलेगा।

तृतीय भाव में सूर्य का उपचार–

1. नित्य माता का आशीर्वाद लेना चाहिए।
2. माता न हो तो सास, मौसी या बुआ की सेवा कर आशीर्वाद लें।
3. अपना चाल-चलन ठीक रखे।
4. माणिक्य युक्त 'सूर्य यंत्र' धारण करें।

मेषलग्न में सूर्य की स्थिति चतुर्थ स्थान में
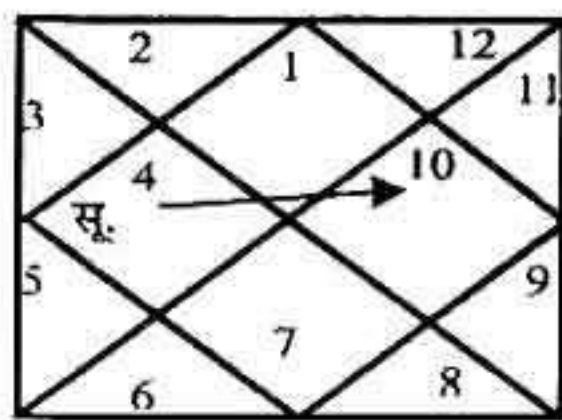
मेषलग्न में सूर्य पंचमेश (त्रिकोणपति) होने के कारण शुभफल दाई है। चतुर्थ स्थान में सूर्य कर्क राशि का होगा। ऐसा जातक राजदरबार में मान-सम्मान पाने वाला, समुद्री यात्रा या विदेश यात्रा से लाभ कमाने वाला, माता-पिता का भक्त, जमीन-जायदाद का स्वामी होता है। जातक को थोड़ा सहयोग मिलने पर सरकारी नौकरी मिल सकती है। जातक पढ़ा-लिख कर उच्च शैक्षणिक डिग्री को प्राप्त करेगा।

अनुभव–भोज संहिता के अनुसार कर्कस्थ सूर्य यदि चतुर्थ में हो तो जातक विद्यावान् होगा। उसको सरकारी नौकरी मिल सकती है।

निशानी–दूसरों के लिए जोड़-जोड़ कर मरे।

दशा–सूर्य की दशा सुख में वृद्धि करेगी। राज्य में लाभ मिलेगा। सन्तति सुख मिलेगा। विद्या में वजीफा मिलेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चन्द्र**–सूर्य के साथ यदि चन्द्रमा हो तो जातक का जन्म श्रावण कृष्ण अमावस्या की मध्य रात्रि का होगा। जातक को माता की सम्पत्ति एवं उत्तम वाहन का सुख मिलेगा। यह युति प्रबल राजयोग कारक है।
2. **सूर्य+मंगल**–जातक की माता का स्वास्थ्य गड़बड़ रहेगा। सुख-संसाधनों में कुछ न कुछ कमी बनी रहेगी।
3. **सूर्य+बुध**–सूर्य के साथ यदि बुध हो तो **'बुधादित्य योग'** बनेगा। यह पंचमेश सूर्य के साथ तृतीयेश+षष्टेश बुध की युति केन्द्रस्थान में होगी। यहां बुध शत्रुक्षेत्री होगा। जातक का पुत्र सुखी होगा, उत्तम मकान बनाएगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ गुरु हो तो **'हंसयोग'** के कारण जातक राजनीति में सक्रिय होकर उच्च पद को प्राप्त करेगा। जातक के पिता दीर्घजीवी होंगे। यदि यहां चन्द्रमा भी हो तो जातक लालबत्ती की गाड़ी का स्वामी (हकदार) होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–धनेश+पंचमेश की युति में विवाह धन की प्राप्ति होगी। प्रथम सन्तति के बाद धन और बढ़ेगा।
6. **सूर्य+शनि**–जातक के स्वय का भगीरथ पिता की मृत्यु के बाद होगा। राजपथ में लाभ होगा।
7. **सूर्य+राहु**–जातक का पिता बीमार रहेगा। या पिता का साथ कम मिलेगा।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ यदि राहु, केतु या शनि हो तो जातक की सन्तानों में केवल एक कन्या ही जीवित रह पाएगी।

चतुर्थ भाव में सूर्य का उपचार–

1. अंधों का भोजन दे।
2. शरीर पर सोना पहने।
3. सूर्य की मूर्ति या 'सुवर्ण फूल' गले में धारण करे।
4. अभिमंत्रित माणिक्य 'सूर्य यंत्र' के साथ गले में धारण करें।

मेषलग्न में सूर्य की स्थिति पंचम स्थान में
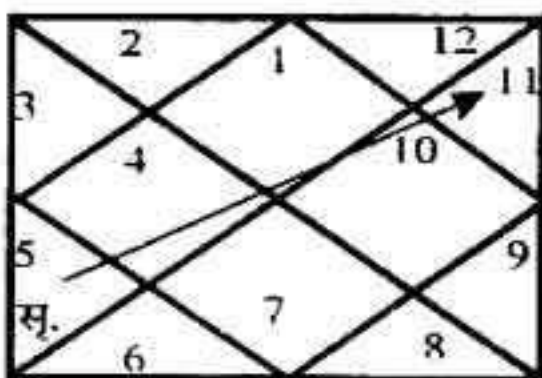
मेषलग्न में सूर्य पंचमेश (त्रिकोणपति) होने के कारण शुभफलदाई है। पांचवे स्थान में सूर्य सिंह राशि में होने से स्वगृही होगा। जातक राजा व राजा के समान प्रतापी होगा। सरकार से सम्मानित होगा। उच्च शिक्षा प्राप्त करेगा। जातक ज्योतिष, तंत्र इत्यादि गुप्त विद्याओं का जानकार होगा। जातक का भाग्योदय सन्तान (पुत्र) प्राप्ति के बाद होगा।

अनुभव–पंचमेश पंचम भाव में स्वगृही होने से 'भोज संहिता' के अनुसार जातक को

ईश्वरीय अनुकम्पा प्राप्त होती रहेगी। यह 'पूर्वपुण्य' का भी भाव है। जातक की सन्तति सम्पन्न होगी। जातक को सरकारी नौकरी मिल सकती है।

निशानी–परिवार तरक्की का मालिक।

दशा–सूर्य की दशा अति उत्तम फल देगी। जातक का भाग्योदय होगा। सरकारी क्षेत्र में सफलता, कोर्ट कचहरी में विजय मिलेगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चन्द्र**–सूर्य के साथ यदि चन्द्रमा हो तो जातक का जन्म भाद्रकृष्ण अमावस्या की रात्रि 10 बजे के लगभग होता है। जातक की माता भाग्योदय में सहायक होगी। यह युति प्रबल राजयोग कारक है।
2. **सूर्य+मंगल**–यदि लग्नेश मंगल साथ हो तो तीन पुत्रों की सम्भावना रहती है। जातक शस्त्रविद्या का जानकार होता है। जातक शत्रुओं का नाश करने में पूर्ण सक्षम होता है। यहां सूर्य के साथ मंगल की युति प्रबल राजयोग कारक है।
3. **सूर्य+बुध**– के साथ बुध हो तो **'बुधादित्ययोग'** बनेगा। यह पंचमेश सूर्य की तृतीयेश+षष्ठेश बुध के साथ युति पंचम भाव में होगी जहां सूर्य स्वगृही होगा। यह युति राजयोग प्रदाता साबित होगी। मित्रों की वजह से जातक को सफलता मिलती रहेगी।
4. **सूर्य+गुरु**–प्रथम पुत्र होगा। जातक का पुत्र धनी होगा। स्वयं आध्यात्मिक विद्या का ज्ञाता होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–विद्या से भाग्य चमकेगा। जातक का पुत्र धनी होगा।
6. **सूर्य+शनि**–जातक का भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा। सम्भवतः पुत्र सन्तति भी।
7. **सूर्य+राहु**–पितृदोष से जातक ग्रसित रहेगा। परिश्रम का फल नहीं जातक जादू-टोनों में विश्वास रखेगा।
8. **सूर्य+केतु**–जातक भूतविद्या का जानकार होगा। जातक जादू-टोनों में विश्वास रखेगा।
9. सूर्य के साथ राहु या केतु हो सर्प के शाप से पुत्र सन्तान का नाश होता है 'राहुकेतु युते सर्पशापात् सुतक्षमः' (भृगुसूत्र) परन्तु काल सर्पशान्ति से सन्तान होगी।

पंचम भाव में सूर्य का उपचार–

1. अपने वायदे-वचन के प्रति पाबन्द रहे।
2. अपनी खानदानी परम्परा को नष्ट न करे।
3. लाल मुंह के बन्दरों को गुड़-चना, फल खिलावे।
4. बजरंग बाण का पाठ करें।

मेषलग्न में सूर्य की स्थिति षष्टम स्थान में

मेषलग्न में सूर्य पंचमेश (त्रिकोणपति) होने के कारण शुभफलदाई है। षष्टम् स्थान में सूर्य कन्या राशि का होकर मित्र क्षेत्री होता है। जातक बहुत बड़े परिवार वाला, राजदरबार
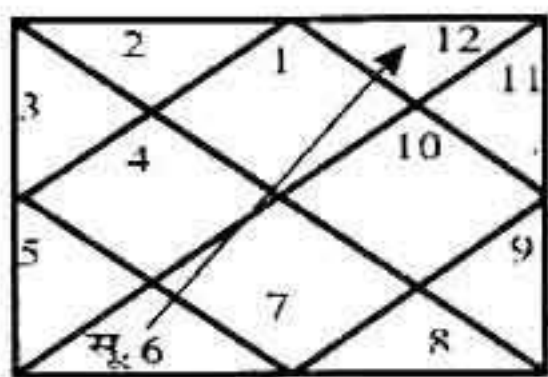
(सरकार) में सम्मान पाने वाला, मुकदमे में विजयी होगा। जातक का जन्म पिता के लिए शुभ परन्तु खुद के पुत्र सन्तति में बाधा **'पुत्रहीन योग'** के कारण हो सकता है। विद्या के लिए भी संघर्ष करना पड़ेगा पर सूर्य उपासना, आदित्यहृदयस्रोत्र के पाठ से सब ठीक होगा।

अनुभव–सूर्य की यह स्थिति 'सत्यजातकम्' के अनुसार जातक को कुटुम्ब विवाह की ओर प्रेरित करती है। सरकारी व्यक्ति के साथ झगड़ा जातक को तकलीफ में डाल सकता है।

निशानी–धन से बेफिक्र, भाग्य से सन्तुष्ट। जातक का जन्म पिता के घर से बाहर (ननिहाल) में होता है।

दशा–सूर्य की दशा मिश्रित फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चन्द्र**–यदि सूर्य के साथ चन्द्रमा हो तो जातक का जन्म अश्विन कृष्ण अमावस्या, रात्रि 9 से 8 बजे के मध्य होगा। जातक अभाग्यशाली होगा। पुत्र सुख की कमी, मातृसुख की कमी महसूस करेगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। जातक धनी होगा।
3. **सूर्य+बुध**–सूर्य के साथ यदि बुध हो तो पंचमेश सूर्य की तृतीयेश+षष्टेश बुध के साथ युति राजयोगकारक है। यहां बुध उच्च का होगा। जातक के गुप्त शत्रु बहुत होंगे। विद्या एवं पुत्र सुख में रुकावट महसूस होगी। जातक अटक-अटक कर बोलेगा। ऐसा जातक अपने कुटुम्ब में ही विवाह करेगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ गुरु **'विपरीत राजयोग'** बनाएगा। जातक धनी होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र पत्नी में नित्य कलह, आर्थिक तंगी को दिग्दर्शित करता है।
6. **सूर्य+शनि**–यदि साथ में शनि हो तो खुद की जाति में बहुत शत्रु होंगे। जातक षड्यंत्र का शिकार होगा। पिता-पुत्र की नहीं बनेगी।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु पितृदोष को बताता है। परिश्रम का लाभ नहीं शत्रु तंग करेंगे।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु संघर्षमय स्थिति, दुर्घटना योग से पांव में चोट पंहुचाएगा।
9. सूर्य के साथ राहु, केतु हों तो बीस वर्ष की आयु में नेत्र टेढ़े हो जाएंगे या नेत्र दोष होगा। शुभ ग्रह देखे तो दोष नहीं होगा। जातक सन्तानहीन हो सकता है। अथवा अदालत में दण्डित भी हो सकता है।

षष्टम भाव में सूर्य का उपचार–

1. बन्दर को चने देना चाहिए।
2. भूरी च्यूंटी को सतनाजा सप्तधान डालना चाहिए।

3. माता के पांव धोकर आशीर्वाद लेना।
4. सूर्य को लाल पुष्प या कुंकुम डालकर अर्घ्य दे।
5. शत्रुनाश के लिए आदित्य हृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।
6. नेत्रपीड़ा की निवृति हेतु 'नेत्रोपनिषद' का पाठ करें।

मेषलग्न में सूर्य की स्थिति सप्तम स्थान में
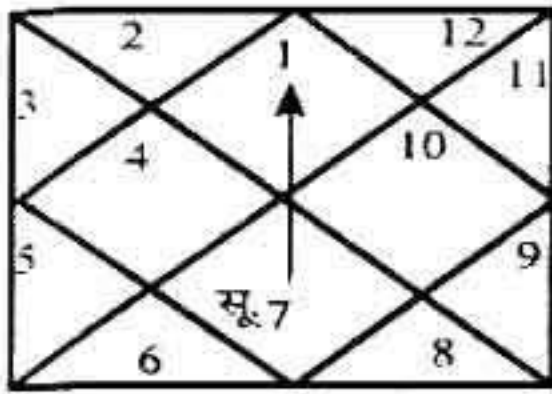
मेषलग्न में सूर्य पंचमेश (त्रिकोणपति) होने के कारण शुभफलदाई है। सप्तम स्थान में सूर्य तुला राशि के नीच का होगा। जातक अभिमानी होगा। उसका विवाह विलम्ब से होगा। पच्चीसवें वर्ष जातक देशान्तर में जाएगा। विवाह के बाद किस्मत चमकेगी। जातक मुकदमे में समझौता करने वाला होता है।

अनुभव–ऐसे जातक का पुत्र विदेश जाकर धनी, मानी व दानी होता है। भोज संहिता के अनुसार पंचमेश नीच का होकर यदि सप्तम भाव में हो तो जातक अपनी पत्नी को शक की नजर, नीची नजर से देखेगा।

निशानी–कम कबीला, डरता-डरता रहे।

दशा–सूर्य की दशा उत्तम फल देगी। जातक 24 वर्ष की आयु के वाद उन्नति पथ पर आगे बढ़ना शुरू हो जाएगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चन्द्र**–सूर्य के साथ यदि चन्द्रमा हो तो जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या को सायं 6 से 7 बजे के मध्य होगा। जातक सुखी व सम्पन्न व्यक्ति होगा। यह युति राजयोग कारक है।
2. **सूर्य+मंगल**– की युति यहां राजयोग कारक साबित होगी। लग्नेश का लग्न को देखना बहुत बड़ी बात है। जातक को परिश्रम का लाभ मिलेगा।
3. **सूर्य+बुध**–यदि सूर्य के साथ बुध हो तो **'बुधादित्य योग'** बनेगा। वस्तुत: यह पंचमेश सूर्य की तृतीयेश+षष्टेश बुध के साथ युति होगी। युति केन्द्रवर्ती होने से जातक राज्यतुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा। जातक के मित्र शक्तिशाली होंगे। जातक को परिजनों एवं मित्रों से लाभ मिलता रहेगा।
4. **सूर्य+गुरु**– यहां भाग्येश+पंचमेश की युति जातक का भाग्योदय विवाह के बाद एवं दूसरा भाग्योदय प्रथम पुत्र के बाद होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ यदि शुक्र हो तो भी नीचभंग राजयोग बनेगा। **'पुत्रमूल धनयोग'** के कारण जातक को पुत्र द्वारा धन, यश व कीर्ति की प्राप्ति होगी। ससुराल से धन मिलेगा। विवाह के तत्काल बाद किस्मत चमकेगी।

6. **सूर्य+शनि–नीच भंग राजयोग**–सूर्य के साथ शनि हो तो सूर्य का नीचत्व भंग होकर नीचभंग राजयोग बनेगा। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को प्राप्त करेगा। मुकदमे में जीत मिलेगी।
7. **सूर्य+राहु**–पत्नी से झगड़ा, गृहस्थ जीवन कलहपूर्ण रहेगा। पत्नी घमण्डी होगी।
8. **सूर्य+केतु**–दाम्पत्य जीवन में विवाद की स्थिति रहेगी।
9. यदि सूर्य के साथ राहु, केतु हो तो जातक अभक्ष्य भक्षण करेगा। अपनी स्त्री से द्वेष करेगा। उसके दो पत्नियां होंगी।

सप्तम भाव में सूर्य का उपचार–

1. रात को रोटी आदि पकाने के बाद आग गैस, चूल्हा स्टोव से दूध बहावे या छींटे दे।
2. रविवार के दिन जमीन में तांबे के टुकड़े दबाना चाहिए।
3. भोजन करने के पूर्व भोजन का कुछ अंश आहुति के रूप में अग्नि में डाले तो सूर्य का दोष कम होगा।
4. माणिक सहित शुद्ध स्वर्ण-पत्र पर मण्डित सूर्य की मूर्ति गले में धारण करें।

मेषलग्न में सूर्य की स्थिति अष्टम स्थान में
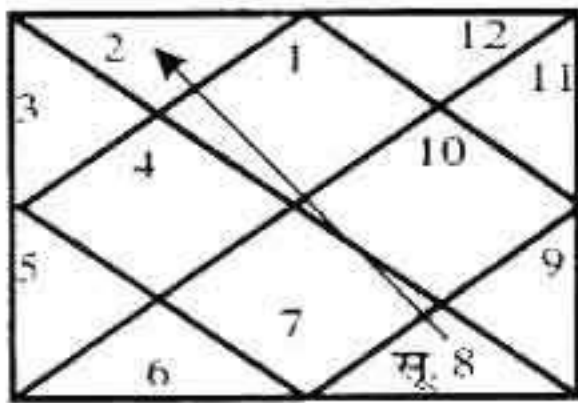
मेषलग्न में सूर्य पंचमेश (त्रिकोणपति) होने के कारण शुभफलदाई है। अष्टम स्थान में सूर्य वृश्चिक राशि का होगा। ऐसा जातक अल्पपुत्र व नेत्ररोगी होगा। उजड़े हुए को बसाने वाला, दूसरों का सच्चा हमदर्द होगा। जातक तपस्वी होगा एवं गुप्त विद्याओं का जानकार होगा।

अनुभव–पंचमेश सूर्य यदि अष्टम स्थान में हो तो जातक का पुत्र दुर्भाग्यशाली होगा। जातक की वाणी में कटुता रहेगी।

निशानी–तपस्वी राजा, सांच को आंच।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चन्द्र**–सूर्य के साथ यदि चन्द्रमा हो तो जातक का जन्म मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या का सायं 4 से 6 बजे के मध्य का होगा। जातक की माता को कष्ट होगा। चन्द्रमा यहां नीच का होने से सुख में भी कमी आएगी। वाहन दुर्घटनाग्रस्त होगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य-मंगल युति यहां निरर्थक होगी। यदि इन दोनों के साथ राहु भी हो तो जातक को किसी कोमल पर वैवाहिक सुख नहीं मिलेगा। प्रथम तो सन्तति नहीं होगी, अगर होगी तो [illegible] होगी। सूर्य के साथ यदि मंगल हो तो दसवें वर्ष में सिर पर चोट लगेगी। जातक अल्पसन्तति व अल्पायु होगा। सूर्य की उपासना, श्री हनुमान जी की उपासना से आयु बढ़ेगी।

3. **सूर्य+बुध**–सूर्य के साथ बुध हो तो **'बुधादित्ययोग'** बनेगा पर यह पंचमेश सूर्य की युति तृतीयेश+षष्टेश बुध के साथ अष्टम भाव में होगी। जातक अटक-अटक कर बोलेगा, पराक्रम भंग होगा फिर भी कोई काम जीवन में रुका हुआ नहीं होगा। जातक प्रभावशाली होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–गुरु के कारण **'विपरीत राजयोग'** बनेगा। जातक धनवान होगा पर दुश्मन बहुत होंगे।
5. **सूर्य+शुक्र**–सप्तमेश आठवें शत्रु ग्रह के साथ होने में विलम्ब विवाह का योग बनेगा। गृहस्थ जीवन में कलह-संघर्ष का साम्राज्य रहेगा। धन की तंगी रहेगी।
6. **सूर्य+शनि**–सूर्य के साथ शनि व्यापार में नुकसान दिलाएगा। दुर्घटना योग भी बनता है। पैरों में चोट पंहुच सकती है।
7. **सूर्य+राहु**–यह युति दुर्घटना कारक है। जातक की हड्डिया जरूर टूटेगी। दुश्मनों द्वारा शारीरिक चोट सम्भव है।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य केतु की युति षड्यंत्र की द्योतक है। जातक के विद्याध्यन में बाधा आएगी एवं सन्तान कहने में नहीं रहेगी।

अष्टमभाव में सूर्य का उपचार:

1. दक्षिण दिशा के दरवाजे वाले मकान में नहीं रहना चाहिए
2. मकान में प्रवेश द्वार वास्तुदोष नाशक गणपति लगावें।
3. ससुराल के घर में न रहे।
4. बड़े भाई और गाय की सेवा करने से सूर्य का अशुभत्व नष्ट होगा।
5. सूर्य का स्वर्णफूल गले में धारण करे।
6. चोरी ठगी से दूर रहे अन्यथा नुकसान उठाना पड़ेगा।
7. शत्रुमय नाश हेतु आदित्य हृदय-स्तोत्र का नित्य पाठ करे।
8. नेत्रपीड़ा से बचने हेतु 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करे।

मेषलग्न में सूर्य की स्थिति नवम स्थान में
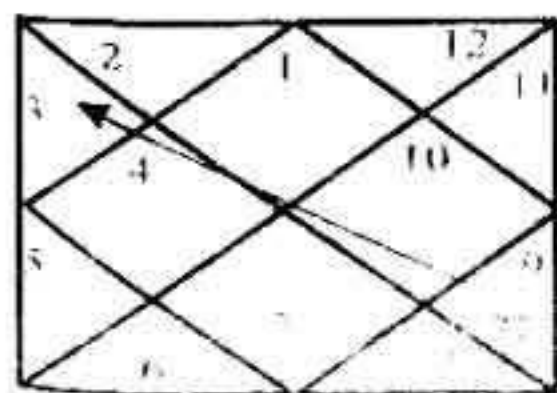
मेषलग्न में सूर्य पंचमेश (त्रिकोणपति) होने के कारण शुभफलदाई है। नवम स्थान में सूर्य धनु राशि का होगा। ऐसा जातक राज दरबार में लाभ पाने वाला, धार्मिक कार्यों में रुचि रखने वाला 'मर्यादित रहता भक्त:' होता है। जातक मेहनत से अपनी किस्मत का [illegible] चमकाने वाला, [illegible] प्राप्त करने वाला [illegible] परिवार का पोषक होता है।

अनुभव–पंचमेश सूर्य नवम स्थान में होने से जातक का पिता महान दानी व यशस्वी होगा। जातक को देवकृपा मिलती रहेगी।

पुत्रेशे नवम याने शोभनं समुदीरितम्।
तत्रैव शुभयोगश्चेत् तथापि कीर्तिमान्भवेत्

–सत्यजातकम अनु./09

'भोज संहिता' के अनुसार जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी।

निशानी–लम्बी उम्र, सूर्य ग्रहण के बाद का सूर्य, जातक साहसी होगा।

दशा–सूर्य की दशा बहुत अच्छा फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चन्द्र**–सूर्य के साथ चन्द्रमा हो तो जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या दोपहर 2 से 4 बजे के मध्य होगा। जातक को माता-पिता दोनों का सुख व प्यार मिलेगा। पिता की सम्पत्ति मिलेगी। यह युति राजयोग कारक होगी।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल हो तो यह युति राजयोग कारक है। यदि यहां गुरु भी हो तो जातक लालबत्ती वाली गाड़ी का हकदार होगा।
3. **सूर्य+बुध**–सूर्य के साथ यदि बुध हो तो '**बुधादित्य योग**' बनेगा। पंचमेश सूर्य की तृतीयेश+षष्टेश बुध के साथ युति भाग्य स्थान में होगी जहां बुध अपने घर को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। जातक परमभाग्यशाली होगा तथा कुटुम्ब-परिवार का शुभचिन्तक व सहायक होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ गुरु होने से जातक महान पराक्रमी होगा। जातक का पिता दीर्घायु वाला, जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। ऐसा जातक पैतृक व्यवसाय में रुचि रखता है।
5. **सूर्य+शुक्र**–जातक धनवान होगा तथा पत्नी व सन्तान की तरफ से सुखी होगा।
6. **सूर्य+शनि**–जातक का भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा। जातक स्वतंत्र व्यापार में आगे बढ़ेगा।
7. **सूर्य+राहु**–पिता की सम्पत्ति में बाधा या पिता की अल्पायु में मृत्यु सम्भव है। कोर्ट-केस में पराजय सम्भव है।
8. **सूर्य+केतु**–पिता की सम्पत्ति को लेकर विवाद सम्भव है।

नवम भाव में सूर्य का उपचार–

1. पीतल के बर्तनों का प्रयोग भोजनशाला में करें।
2. स्वर्ण-पत्र पर सूर्य देव की मूर्ति बनाकर गले में धारण करें।
3. सूर्य भगवान को नित्य अर्घ्य दें।
4. आदित्य हृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।
5. पिता की सेवा करें।

मेषलग्न में सूर्य की स्थिति दशम स्थान में
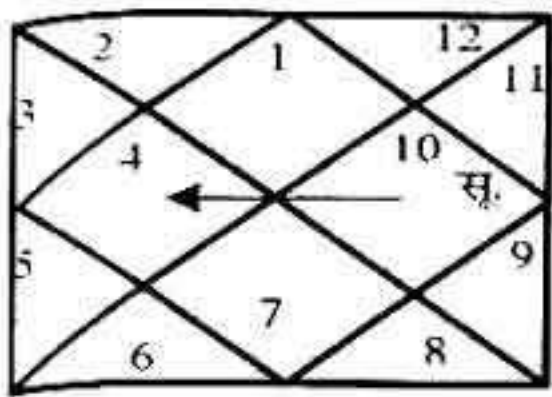
मेषलग्न में सूर्य पंचमेश (त्रिकोणपति) होने के कारण शुभफलदाई है। दशम स्थान में सूर्य मकर राशि का शत्रुक्षेत्री होगा। जातक राजा, राजा तुल्य प्रतापी होगा। बड़ा नेता होगा। बड़े मकान व बड़े वाहन का स्वामी होगा। अठ्ठारहवें वर्ष में विद्या की लाईन पकड़ कर जातक ख्यातिवान होगा। जातक की सन्तति उत्तम होगी। जातक को कमाने हेतु बहुत परिश्रम करना पड़ेगा।

अनुभव—सत्यजातकम् के अनुसार पंचमेश सूर्य यदि दशम भाव में हो

पुत्रेशे दशमयाते पुण्यकृत्स भविष्यति।
धर्मशालामन्दिराणां जीर्णोद्धारमाचरेत्।। *—सत्यजातकम् य.5/9*

ऐसा जातक किसी मन्दिर, धर्मशाला एवं परोपकार के महान कार्य अपने हाथ से करता है।

निशानी—धन का मालिक मगर वहमी।

दशा—सूर्य की दशा अच्छा फल देगी। राज (सरकार) में मान-सम्मान मिलेगा। सन्तान पक्ष में भी लाभ होगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चन्द्र**— सूर्य के साथ यदि चन्द्रमा हो तो जातक का जन्म माघकृष्ण अमावस्या को मध्य दिन में होगा। यहां से चन्द्रमा अपने ही घर को पूर्ण दृष्टि में देखेगा फलत: जातक को उत्तम वाहन, मकान व नौकर चाकर का पूर्ण सुख मिलेगा। यह युति राजयोगकारक है।
2. **सूर्य+मंगल**— यदि सूर्य के साथ मंगल हो तो **'रुचक योग'** के कारण जातक निश्चय ही राजा (राज्याधिकारी) आई. एस., आर. एस. अफसर होगा। यहां यदि शनि भी हो तो जातक लालबत्ती की गाड़ी का मालिक होगा।
3. **सूर्य+बुध**—सूर्य के साथ यदि बुध हो तो **'बुधादित्य योग'** बनेगा। सूर्य की तृतीयेश+षष्टेश बुध के साथ युति होगी। युति केन्द्र में होने में बलवान है। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य भोगेगा। यहां चन्द्रमा अपने घर को पूर्ण दृष्टि में देखेगा फलत: माता की सम्पत्ति मिलेगी। वाहन सुख मिलेगा। खेती की जमीन से लाभ होगा। राज (सरकार) में सम्मान होगा।
4. **सूर्य+गुरु**—यहां गुरु जातक को राजकीय सम्मान दिलाएगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी।
5. **सूर्य+शुक्र**—जातक को पत्नी व संतान का पूर्ण सुख मिलेगा। जातक परिवार का नाम रोशन करेगा।
6. **सूर्य+शनि**—यहां शनि के कारण **'शशयोग'** बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं वैभवशाली होगा परन्तु किस्मत पिता की मृत्यु के बाद चमकेगी।

7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु सरकार से दण्ड दिला सकता है।
8. **सूर्य+केतु**–ऐसे जातक को सरकारी व्यक्ति धोखा देंगे।

दशम भाव में सूर्य का उपचार–

1. ऐसा जातक नीले, काले कपड़े न पहने न ही इस रंग के रुमाल भी पास में रखे।
2. बुजुर्गी मकान में हेण्डपम्प लगावे।
3. भूरी भैंस या भूरा बछड़ा पाले।
4. नंगे सिर न रहे। शिखा रखे या लाल, सफेद, पीले रंग की टोपी या साफा बांधे।
5. नेवला पाले।

मेषलग्न में सूर्य की स्थिति एकादश स्थान में
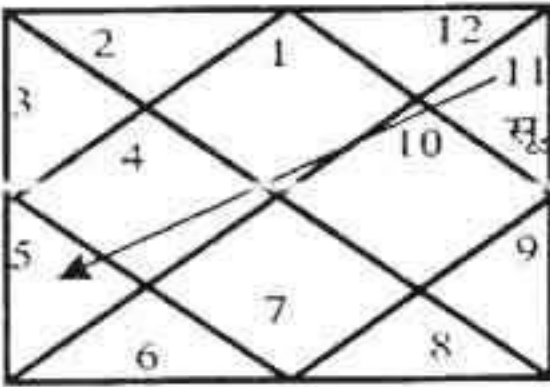
मेषलग्न में सूर्य पंचमेश (त्रिकोणपति) होने के कारण शुभफलदाई है। एकादश स्थान में सूर्य कुम्भ राशि में शत्रुक्षेत्री होगा। ऐसा जातक गुप्त व रहस्यमय विद्याओं का जानकार विख्यात तान्त्रिक व ज्योतिषी होता है। ऐसा जातक शाकाहारी, ईमानदार, भाई बन्धुओं का सेवक होता है। डॉक्टरी या मेडिकल लाईन में रुचि रखने वाला होता है। जातक धनवान होता है तथा बुरे कामों से दूर रहने वाला होता है तथा दूसरों के लिए अपना सबकुछ दांव में लगा देता है।

निशानी–पूर्ण धर्मी, मगर अपनी ही ऐश पसन्द।

अनुभव–पंचमेश यदि लाभस्थान में हो तो जातक अपने पुत्र से धन, यश, कीर्ति अर्जित करेगा। उसके मित्र प्रभावशाली व धनवान होंगे। उसे व्यापार में अचानक भारी लाभ होगा।

दशा–भोज संहिता के अनुसार सूर्य की महादशा शुभ फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चन्द्र**–सूर्य के साथ चन्द्रमा हो तो जातक का जन्म फाल्गुण कृष्ण अमावस्या को प्रात: 9 से 11 बजे के मध्य होगा। सूर्य शत्रुक्षेत्री होकर अपने घर को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। जातक प्रजावान होगा। उसके पुत्र व पुत्री दोनों सन्तति होंगी। सन्तान आज्ञाकारी होगी। जातक उच्च शैक्षणिक डिग्री प्राप्त करेगा। विद्या फलवती होगी।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य+मंगल युति यहां राजयोग कारक है। यदि यहां शनि भी हो तो जातक लाल बत्ती की गाड़ी का उम्मीदवार होगा।
3. **सूर्य+बुध**–सूर्य के साथ यदि बुध हो तो **'बुधादित्य योग'** बनेगा। पंचमेश सूर्य की तृतीयेश +षष्ठेश बुध के साथ एकादश स्थान में युति सार्थक होगी। सूर्य यद्यपि शत्रुक्षेत्री है तथापि जातक को पुत्र सन्तति का लाभ देगा। जातक प्रजावान होगा।
4. यदि सूर्य के साथ बुध हो तो जातक को कुष्ठ रोग होने की सम्भावना रहती है। शुभ दृष्टि हो तो निवृत्ति होगी।

'षष्ठेशयुते कुष्ठरोगयुतः शुभदृष्टियुते निवृत्तिः' (भृगुसूत्र)

5. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ गुरु जातक को आध्यात्मिक विद्या का धनी बनाएगा। जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि एवं पुत्र सुख मिलेगा।
6. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र जातक की रुचि कला-संगीत, फिल्म क्षेत्र में बढ़ाएगा एवं उसमें सफलता भी देगा।
7. **सूर्य+शनि**–सूर्य के साथ यदि शनि हो तो जातक को देवता की कृपा से सिद्धि मिलती है। उसे पूर्ण शय्यासुख मिलता है। यदि अन्य बाधा (ऑपरेशन इत्यादि) न हो तो पांच पुत्रों की प्राप्ति होती है। पच्चीसवें वर्ष में वाहन मिलता है।
8. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ व्यापार में नुकसान कराएगा। एक बार सम्पूर्ण व्यापार बदलना पड़ेगा।
9. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु सरकारी पराजय, उद्योग में घाटे का संकेत देता है।

एकादश भाव में सूर्य का उपचार–

1. शराब, मांस-मछली खाना छोड़ दें।
2. सुवर्ण पत्र पर सूर्य की मूर्ति बनवाकर गले में धारण करें।
3. मूली का दान रात्रि में सिरहाने रखकर सुबह मंदिर में देना।
4. झूठा खाना व झूठ बोलना दोनों से परहेज रखे।
5. जीवित बकरा कसाई से छुड़ावे। जीवनदान करें।

मेषलग्न में सूर्य की स्थिति द्वादश स्थान में
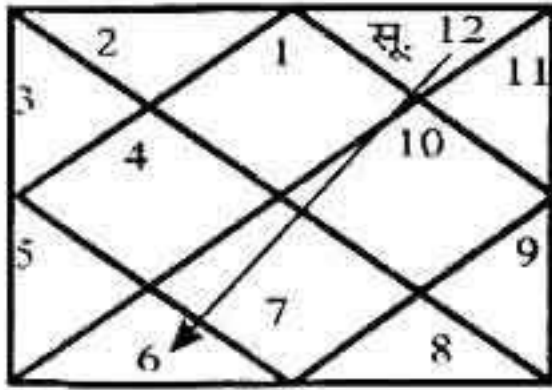
मेषलग्न में सूर्य पंचमेश (त्रिकोणपति) होने के कारण शुभफलदाई है। द्वादश स्थान में सूर्य मीन राशि का होने से मित्रक्षेत्री है। ऐसा जातक विदेशी व्यापार में रुचि रखने वाला (Export-Import) होता है। जातक विदेश यात्राएं करता है। जन्मभूमि से दूरस्थ प्रदेशों-विदेशों में कमाता है। जातक गूढ़ व रहस्यमय विद्याओं का जानकार होता है।

अनुभव–सत्यजातकम् के अनुसार–'पुत्रेशे द्वादशस्थे ब्रह्मध्यान परो भवेत्।'

पंचमेश यदि द्वादश स्थान में हो तो जातक पुत्र के दुःख (मृत्यु) से सन्यासी हो जाता है। सूर्य बारहवें टेक्स व फाईन के रूप में जातक को दण्ड दिलाता है। 'भोज संहिता' के अनुसार यदि सरकारी अधिकारी में झगड़ा हुआ तो जातक को जेल भी हो सकती है।

निशानी–सुख की नींद, मगर पराई आग में जल मरने वाला।

दशा–सूर्य की दशा मिश्रित फलकारी होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चन्द्र**–सूर्य के साथ यदि चन्द्रमा हो तो जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या दिन

को 7.30-9 बजे के मध्य होगा। जातक को नेत्रपीड़ा हो सकती है। खासकर वामनेत्र (left eye) में। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा।

2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल **'लग्नभंग योग'** एवं **'विपरीतराज योग'** दोनों बनाएगा। फलतः जातक धनवान होगा। परन्तु प्रथम प्रयास में सफलता नहीं मिलेगी।
3. **सूर्य+बुध**–सूर्य के साथ यदि बुध हो तो **'बुधादित्य योग'** बनेगा। पंचमेश सूर्य की तृतीयेश+षष्ठेश के साथ युति बारहवें स्थान में है। दोनों की दृष्टि छठे स्थान पर है फलतः रोग व शत्रु का नाश करने में यह युति फलदायक है। जातक यात्राओं में ज्यादा रहता है।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ यदि गुरु हो तो स्वगृही होगा जातक धार्मिक यात्राओं, तीर्थ यात्राओं, परोपकार के कार्य, धर्मशाला, मन्दिर निर्माण व प्रतिष्ठा पर रुपया खर्च करता है।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ यदि शुक्र हो तो जातक के पुत्र या शिष्य बलवान होते हैं। जिनके कारण वह विदेश जाता है।
6. **सूर्य+शनि**–सूर्य के साथ यदि शनि हो तो जातक का बिना आंगन का मकान होता है। दिमागी खराबी का तनाव अधिक रहेगा।
7. **सूर्य+राहु**–विद्या बाधा, संतान में बाधा आएगी। उपाय कराना जरूरी है।
8. **सूर्य+केतु**–जातक को व्यर्थ का यात्राएं बहुत होगी। पुत्र संतान को लेकर चिन्ता बनी रहेगी।

द्वादश भाव में सूर्य का उपचार–

1. मशीनरी के काम न करें।
2. मकान में आंगन जरूर रखना एवं सूर्य की रोशनी आनी चाहिए।
3. भूरी चींटी को कीडी नगरा देवें।
4. बिजली का सामान मुफ्त न लेना, बिजली चोरी न करना।
5. गले में सुवर्णफूल पहने।
6. रविवार के नियमित व्रत करें।
7. माणिक्य युक्त 'सूर्य यंत्र' गले में पहने।
8. गुड़ की 11 डलियां रविवार के दिन चलते पानी में बहावे।
9. घर का आंगन खुला रखें तो सूर्य देवता प्रसन्न रहेंगे।
10. रविवार के दिन चारपाई या पलंग के पायों में सात तांबें की कील लगावें। नींद अच्छी आएगी।

मेषलग्न में चन्द्रमा की स्थिति

मेषलग्न में चन्द्रमा की स्थिति प्रथम भाव में
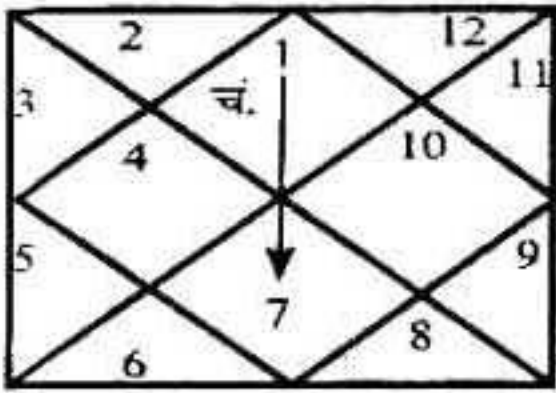
मेषलग्न में चन्द्रमा केन्द्राधिपति होने के कारण, लग्नेश मंगल का मित्र होने के कारण शुभफलदाई है। चन्द्रमा यहां मेष राशि होकर लग्न में बैठा है। उच्चाभिलाषी है एवं सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है।

ऐसा जातक धनवान होता हुआ माता का सेवक होता है। स्त्री व माता की सलाह मानकर चलने वाला, चाल-चलन का नेक जातक होता है। जातक योग क्रोधी होगा।

निशानी–जातक के घर की रसोई में चांदी के बर्तन होते हैं। चन्द्रमा की चांदनी जातक को प्रिय लगेगी। जातक शास्त्रज्ञ होगा।

दृष्टि–चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से शुक्र की तुला राशि को मित्र दृष्टि से देखेगा। जातक की पत्नी सुन्दर होगी। जातक को सम्पूर्ण स्त्री सुख मिलेगा।

विशेष–माता के जीवित रहने तक जर दौलत का स्वामी होगा।

दशा–'भोजसंहिता' के अनुसार चन्द्रमा की दशा शुभ फल देगी। चूंकि चन्द्रमा उच्चाभिलाषी होगा अत: जातक चन्द्रमा की दशा में विशेष महत्वाकांक्षी होगा।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र+सूर्य**–यदि चन्द्र के साथ सूर्य हो तो जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या की प्रात: का होगा तथा जातक उच्च राज्याधिकारी होगा क्योंकि सूर्य यहां त्रिकोणाधिपति होकर उच्च का होगा।
2. **चन्द्र+मंगल**–चन्द्रमा के साथ मंगल होने से **'महालक्ष्मी योग'** एवं **'कचक योग'** बनेगा। 28 वर्ष की आयु में जातक धन कमाना शुरू कर देगा। ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली एवं वैभवशाली होगा।

   'लग्नेशे बलरहिते व्याधिवान्' लग्नेश मंगल यदि बलरहित है तो जातक सदैव रोग से ग्रसित रहेगा।

   'लग्नेश शुभदृष्टे आरोग्यवान्' लग्न या लग्नेश मंगल पर शुभ ग्रहों की दृष्टि होगी तो जातक सदैव हृष्टपुष्ट व आरोग्यवान होगा।

3. **चन्द्र+बुध**–चन्द्रमा के साथ बुध जातक का जीवन संघर्षमय बनाएगा। भाई-बहनों से विचार कम मिलेंगे।

4. **चन्द्र+गुरु** –गुरु+चन्द्र की युति लग्न में **'गजकेसरी योग'** के साथ जबरदस्त राजयोग प्रदाता होगी।

5. **चन्द्र+शुक्र**–चन्द्रमा के साथ शुक्र होने से जातक स्वयं सुन्दर होगा एवं उसका जीवन साथी भी सुन्दर होगा। जातक सुखी जीवन जीएगा। जातक के पास दो गाड़ियां होगी।

6. **चन्द्र+शनि**–चन्द्रमा के साथ शनि नीच का होगा। ऐसा जातक व्यापारी होगा पर उसकी सोच नकारात्मक होगी। जातक ईर्ष्यालु स्वभाव का होगा।

7. **चन्द्र+राहु**–चन्द्रमा के साथ राहु होने से जातक झगड़ालू (लड़ाकू) स्वभाव का होगा। हठी होगा, बात का धनी होगा। विचारों में उतार-चढ़ाव ज्यादा आएंगे।

8. **चन्द्र+केतु**–चन्द्रमा के साथ केतु होने से जातक थोड़ा क्रोधी स्वभाव का होगा। पत्नी से विचारधारा कम मिलेगी।

प्रथम भाव में चन्द्रमा का उपचार–

1. चांदी के बर्तन में खाना पीना करें, तो भाग्य पलटेगा।
2. बट के वृक्ष को सोमवार के दिन कभी-कभी पानी डालें।
3. माता की सेवा करे एवं माता से आशीर्वाद रूप में (चावल, चांदी) लेना।
4. विवाह 24 वर्ष के बाद ही करना चाहिए।
5. यदि मानसिक तनाव ज्यादा है तो पलंग के चारों पायों में चार तांबे की कीले सोमवार को लगा दे तो जातक को अच्छी नींद आएगी।

मेषलग्न में चन्द्रमा की स्थिति द्वितीय भाव में
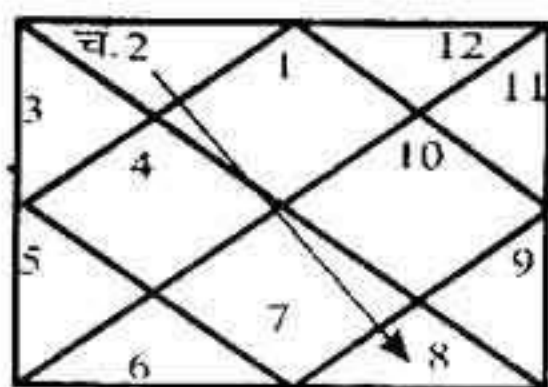
मेषलग्न में चन्द्रमा केन्द्राधिपति होने के कारण एवं लग्नेश मंगल का मित्र होने के कारण शुभफलदाई है। चन्द्रमा वृष राशि में होकर दूसरे स्थान में होने से उच्च का होगा। उच्च के चन्द्रमा की दृष्टि अष्टम स्थान पर होगी। ऐसा व्यक्ति सकारात्मक विचारों वाला, रोते हुए को हंसाने वाला, मीठी वाणी बोलने वाला, विनम्र स्वभाव का व्यक्ति होता है। 24 वर्ष की आयु में जातक कमाना शुरू कर देगा। अपनी खुद की माया स्वयं पैदा करेगा।

निशानी–जन्म छत पर होगा। सफेद वस्तुओं के व्यापार से लाभ होगा। जातक को पिता या ससुराल से धन सम्पत्ति मिलेगी।

विशेष–'भावाधिये बलयुते अनेक वाहन सिद्धि:' चतुर्थ भाव का स्वामी होकर बलवान होने से जातक के पास उत्तम वाहन होता है।

दशा—भोजसंहिता के अनुसार चन्द्रमा की दशा जातक को धनवान व सुखी बनाएगी। चन्द्रमा की दशा में 'मोती', 'चन्द्रयन्त्र' के साथ पहनने से ज्यादा अनुकूल फल मिलेंगे।

दृष्टि—उच्च के चन्द्रमा की पूर्ण दृष्टि अष्टम भाव में अपनी नीच वृश्चिक राशि पर होगी। यह दृष्टि जातक को दीर्घायु प्रदान करेगी। रोग से लड़ने की शक्ति देगी।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चन्द्र+सूर्य**—चन्द्रमा के साथ सूर्य हो तो जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या ब्रह्ममुहूर्त 4 से 5 के मध्य होगा। जातक का भाग्योदय पुत्र जन्म के बाद होगा। यह युति प्रबल राजयोग कारक है।
2. **चन्द्र+मंगल**—चन्द्रमा के साथ मंगल हो तो **'महालक्ष्मी योग'** बनेगा। जातक अपने परिश्रम से खूब धन कमाएगा।
3. **चन्द्र+बुध**—चन्द्रमा के साथ बुध धन के मामले में थोड़ा संघर्ष रहेगा। जातक अपनी बात को खुद ही काट देगा।
4. **चन्द्र+गुरु**—चन्द्रमा के साथ गुरु होने पर **'गजकेसरी योग'** बनेगा। सुखेश व भाग्येश की युति जातक को सफल व्यक्ति बनाएगी।
5. **चन्द्र+शुक्र**—यदि चन्द्रमा के साथ शुक्र हो तो **'किम्बहुना योग'** बनता है। अर्थात् इससे अधिक और क्या? चन्द्रमा उच्च का एवं शुक्र स्वगृही। बलवान धनेश की चतुर्थेश से युति होने पर **'मातृमूलधन योग'** बनता है अर्थात् जातक को माता या ननिहाल की सम्पत्ति मिलती है। जातक अत्यधिक धनवान होता है।
6. **चन्द्र+शनि**—चन्द्रमा के साथ शनि होने से जातक धनवान होगा। सुखेश दसमेश के प्रति जातक को बड़ा व्यापारी बनाएगी।
7. **चन्द्र+राहु**--चन्द्रमा के साथ राहु होने से जातक की वाणी छल प्रपंच वाली होगी। धन के घड़े में छेद होने धन संग्रह में बाधा आएगी।
8. **चन्द्र+केतु**--चन्द्रमा के साथ केतु होने से धनसंग्रह में बाधा रहती है। जातक मधुर वक्ता होते हुए वाणी व्यंग्यात्मक एवं दम्भपूर्ण होती है।

   यदि चन्द्रमा पूर्ण बली हो तो जातक बहुत धनवान होगा।

   इस चन्द्रमा के साथ कोई भी शुभग्रह हो तो 'शुभयुते बहुविद्यवान' जातक उच्च शैक्षणिक डिग्री प्राप्त करेगा। शास्त्रों का ज्ञाता होगा। यदि पापग्रह हो 'पापयुते विद्याहीन:' तो विद्या में रुकावट आएगी।

द्वितीय भाव में चन्द्रमा का उपचार—

1. माता का आशीर्वाद पैरी पैना कहकर लेना।
2. माता की सेवा करें एवं माता से आर्शीर्वाद रूप में (चावल, चांदी) लेना।
3. घर में घंटी, शंख न रखना।

4. मकान की नींव में चांदी का सिक्का दबाना।
5. मानसिक तनाव ज्यादा हो तो मोती के साथ 'चंद्र यंत्र' पहने।

मेषलग्न में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में
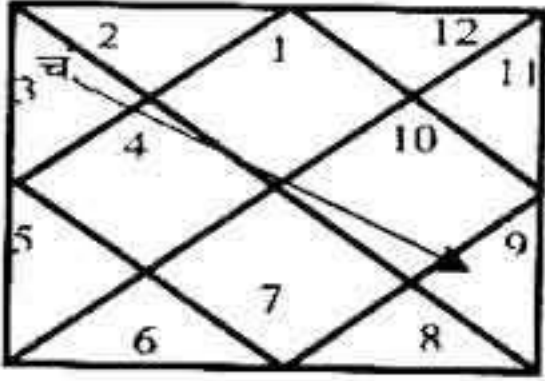
मेषलग्न में चन्द्रमा केन्द्राधिपति होने के कारण एवं लग्नेश मंगल का मित्र होने के कारण शुभफलदाई है। तृतीय स्थान में चन्द्रमा मिथुन राशि में शत्रुक्षेत्री होगा। यहां चन्द्रमा व्यथित रहेगा। ऐसा जातक लम्बी यात्राएं करने वाला, भाई-बहन का पालन-पोषण करने वाला। जातक कल्पना शक्ति से कमाने वाला, लेखक, फिल्म डायरेक्टर, अच्छा तैराक व खिलाड़ी हो सकता है। भाग्य स्थान पर चन्द्रमा की दृष्टि होने के कारण आयु के 16 एवं 24 वर्ष महत्त्वपूर्ण होंगे।

निशानी—जातक लम्बी उम्र का मालिक होगा।

अनुभव—जातक के पीठ पीछे बुराई होगी। जातक के परिजन एवं मित्र विश्वासनीय नहीं होंगे।

दृष्टि—यहां मिथुन राशि गत चन्द्रमा की दृष्टि भाग्य भवन में धनु राशि पर होगी। चन्द्रमा की यह दृष्टि जातक के भाग्योदय में सहायक होगी। जातक को पिता की सम्पत्ति मिल सकती है।

दशा—भोजसंहिता के अनुसार चन्द्रमा की दशा अच्छी जाएगी परन्तु 30% प्रतिकूल फल भी मिलेंगे।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चन्द्र+सूर्य**—चन्द्रमा के साथ यदि सूर्य हो तो जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या की रात्रि दो बजे के आस-पास होगा। जातक को भाइयों की मदद रहेगी।
2. **चन्द्र+मंगल**—यदि चन्द्र के साथ मंगल हो तो **'लक्ष्मी योग'** बनेगा। जातक 28 वर्ष बाद धनवान होगा।
3. **चन्द्र+बुध**—चन्द्रमा के साथ यदि बुध हो तो कुटुम्ब में कलह रहेगा। परस्पर शत्रुग्रहों की युति से मित्र एवं कुटुम्बी पीठ पीछे बहुत बुराई करेंगे। जातक की बहनों की संख्या अधिक होगी।
4. **चन्द्र+गुरु**—चन्द्रमा के साथ यदि गुरु हो तो **'गजकेसरी योग'** बनेगा फलत: जातक को पिता का धन मिलेगा। पत्नी ससुराल से लाभ, व्यापार से लाभ होगा।
5. **चन्द्र+शुक्र**—धनेश+सप्तमेश शुक्र की युति मित्रों से लाभ दिलाएगी। जातक सुखी होगा। जातक अपने पुरुषार्थ में अपना मकान बनाएगा।

6. **चन्द्र+शनि**–सुखेश एवं दसमेश+लाभेश की युति में जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक सुखी होगा।
7. **चन्द्र+राहु**–सुखेश चन्द्र के साथ राहु होने से मकान के प्रति विवाद रहेगा। पूर्ण सुख में कुछ न कुछ कमी महसूस होती रहेगी।
8. **चन्द्र+केतु**–सुखेश चन्द्र के साथ केतु होने से जातक महान पराक्रमी होगा।

तृतीय भाव में चन्द्रमा का उपचार–

1. लड़की के जन्म पर चन्द्र की चीजों दूध, चावल, चांदी का दान करना।
2. घर आये मेहमान को दूध पिलाना।
3. लड़के के जन्म पर सूर्य की चीजों कनक, तांबा का दान करना।
4. कंवारी कन्याओं का पूजन करना।

मेषलग्न में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में
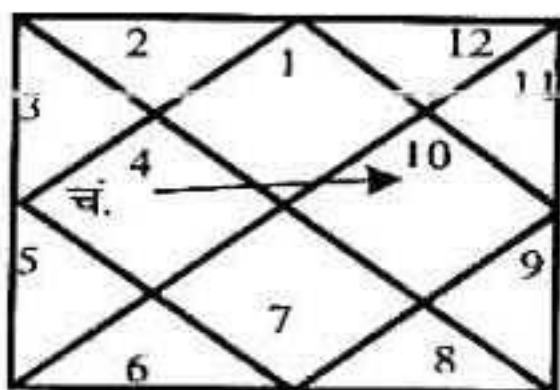
मेषलग्न में चन्द्रमा केन्द्राधिपति होने के कारण एवं लग्नेश मंगल का मित्र होने के कारण शुभफलदाई हैं। चन्द्रमा चौथे स्थान में कर्क राशि का होकर स्वगृही होगा तथा दशम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। ऐसा जातक बुजुर्गों के व्यापार से लाभ कमाने वाला, जमीन जायदाद का स्वामी होता है। ऐसे जातक के पास 'अनेक वाहन सिद्धि' अनेक उत्तम वाहन होते हैं।

यामिनीनाथ योग–यहां चन्द्रमा केन्द्रवर्ती होने से जातक की पत्नी एवं पुत्री आज्ञाकारी होगी। जातक जलीय पदार्थ से धन कमाएगा। यात्रा से धन कमाएगा। जातक सेल्समैन के रूप में ज्यादा सफल होगा। जातक उद्योगपति होगा। वस्त्र-व्यवसाय से कमाएगा।

निशानी–खर्चने पर और बढने वाली आय की नदी जातक स्वयं सुन्दर होगा।

अनुभव–भोजसंहिता के अनुसार जातक अच्छी शिक्षा प्राप्त करेगा। उसके दांत श्वेत व चमकीले होंगे। जातक का हृदय मजबूत होगा।

दृष्टि–स्वगृही चन्द्रमा की पूर्ण दृष्टि शनि की मकर राशि (दशम भाव) पर होगी। यह दृष्टि जातक को राज्य (सरकार) से लाभ दिलाने में सहायक है।

दशा–चन्द्रमा की दशा अत्यन्त शुभफल देगी।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र+सूर्य**–यदि चन्द्रमा के साथ सूर्य हो तो जातक का जन्म श्रावणकृष्ण अमावस्या रात्रि 12 बजे के लगभग होगा। जातक बड़ा उद्योगपति होगा।
2. **चन्द्र+मंगल**–नीचभंग राजयोग यदि चन्द्रमा के साथ मंगल हो तो **'नीचभंग राजयोग'** की

सृष्टि होगी। '**महालक्ष्मी योग**' भी बनेगा। जातक को भूमि-भवन लाभ होगा। वह भूस्वामी होगा। धनवान होगा। यहां मांगलिक दोष समाप्त होगा।

3. **चन्द्र+बुध**–चन्द्र, बुध की युति से जातक पुराना वाहन खरीदेगा एवं पुराने मकान में रहेगा। पर मध्य आयु के बाद वाहन भी दो होंगे एव मकान भी दो होंगे।
4. **चन्द्र+गुरु–किम्बहुना योग**–चन्द्रमा के साथ यदि गुरु हो तो यह योग बनेगा अर्थात् चन्द्रमा स्वगृही एवं गुरु उच्च का इससे अधिक और क्या चाहिए? यह स्थिति केसरी योग, गजकेसरी योग एवं हंस योग बनाती है। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य एवं प्रभाव वाला होगा।
5. **चन्द्र+शुक्र**–ऐसे जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक के पास उत्तम श्रेणी का वाहन होगा। जिस मकान में वो रहेगा, वह सुन्दर होगा।
6. **चन्द्र+शनि**–चन्द्रमा के साथ शनि यहां राजयोग बनाता है। जातक ठेकेदारी के काम में धन कमाएगा। **पद्मसिहासन योग** भी बनता है।
7. **चन्द्र+राहु**–चन्द्रमा के साथ राहु माता की अचानक मृत्यु एवं अचानक वाहन दुर्घटना का संकेत भी देता है।
8. **चन्द्र+केतु**–चन्द्रमा के साथ केतु हृदयरोग, फेफड़ों में बीमारी देगा।
9. **सूर्य+चन्द्र+गुरु** की युति चतुर्थ भाव में सर्वोच्च राजयोग बनाती है।

चतुर्थ भाव में चन्द्रमा का उपचार:

1. सुबह काम करते समय दूध का कुम्भ रखना।
2. दूध का दान देना या घर आए मेहमान को दूध या खीर खिलाना।
3. व्यापार माता के साथ हिस्सादारी में करना।
4. विशेष शनियोग हेतु नवरत्नजड़ित 'चन्द्रयंत्र' पहने।

मेषलग्न में चन्द्रमा की स्थिति पंचम भाव में
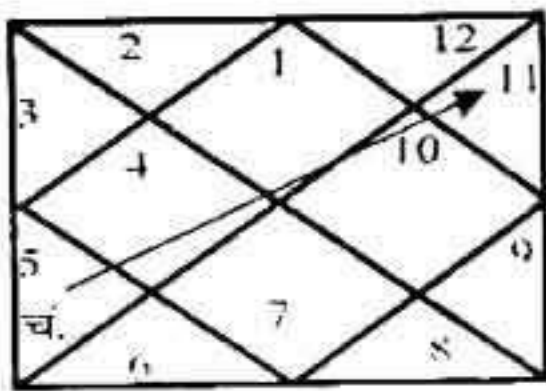
मेषलग्न में चन्द्रमा केन्द्राधिपति होने के कारण एवं लग्नेश मंगल का मित्र होने के कारण शुभफलदाई है। पंचम स्थान में चन्द्रमा सिंह राशि में होगा। जिसका स्वामी सूर्य त्रिकोणधिपति होने से मेषलग्न वालों के लिए योगकारक होकर शुभफलदाई है। जातक राजा की किस्मत वाला होता है तथा राजदरबार में बड़ी भारी इज्जत पाता है। जातक धर्मात्मा होता परोपकारी होता है। जातक की संतान बहुत तरक्की करे। चन्द्रमा की दृष्टि लाभ स्थान पर होने से जातक की सलाह लाभकारी होगी। जातक लम्बी आयु वाला होगा।

विशेष–ऐसा जातक हठ पर आने पर किसी के आगे झुकेगा नहीं। चतुष्पादलाभ द्वायम्, जातक के पास पशु या चार पहियों का वाहन होगा। स्त्री भी हो सकती है।

निशानी—बच्चों के दूध की माता व आत्मिक प्रेम की नदी अथवा जुड़वा बच्चे घर में हों। साधारण अवस्था में जातक की स्वयं का एक पुत्र, एक कन्या होगी।

अनुभव—जातक अधैर्यशाली, शीघ्र भड़कने वाला, क्रोधी होगा।

दृष्टि—पंचमस्थ चन्द्रमा की दृष्टि शनि की कुम्भ राशि (लाभ स्थान) पर होगी। यह दृष्टि व्यापार-व्यवसाय के लिए लाभप्रद है।

दशा—चन्द्रमा की दशा जातक को प्रजावान बनाएगी। उसे व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा। 'भोजसंहिता' के अनुसार दशा का शुभत्व सूर्य की स्थिति पर निर्भर करेगा।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र+सूर्य**—यदि चन्द्रमा के साथ सूर्य हो तो जातक को पुत्र एवं पुत्री दोनों की प्राप्ति होगी। दोनों तेजस्वी होंगे। ऐसे जातक का जन्म भाद्रकृष्ण अमावस्या को रात्रि दस बजे के आसपास होगा। यह युति प्रबल राजयोग कारक है।
2. **चन्द्र+मंगल**—चन्द्रमा के साथ यदि मंगल हो तो **'लक्ष्मी योग'** बनेगा। जातक लक्ष्मीवान् होगा।
3. **चन्द्र+बुध**—चन्द्रमा के साथ बुध दो कन्या देगा। जातक साइंस का विद्यार्थी होगा। शल्य चिकित्सा में रुचि लेगा। यदि जातक महिला है तो ऑपरेशन से संतान होगी।
4. **चन्द्र+गुरु**—चन्द्रमा के साथ गुरु होने से **'गज केसरी योग'** बनेगा। सुखेश व भाग्येश की युति जातक को भाग्यशाली एवं सफल व्यक्ति बनाएगी।
5. **चन्द्र+शुक्र**—चन्द्रमा के साथ शुक्र माता से, पत्नी से धन दिलाएगा। स्त्री मित्रों से लाभ, जातक को कन्या सन्तति अधिक होगी।
6. **चन्द्र+शनि**—चन्द्रमा के साथ कन्या सन्तति की बाहुल्यता देगा। पुत्र सन्तति में रुकावट एवं विद्या में भी बाधा डालेगा।
7. **चन्द्र+राहु**—चन्द्रमा के साथ राहु माता के श्राप से वंशवृद्धि में रुकावट बताता है। विद्या में बाधा का संकेत देता है।
8. **चन्द्र+केतु**—चन्द्रमा के साथ केतु विद्या में संघर्ष एवं मातृ-पितृ दोष से जातक को कष्ट होने का संकेत देता है।

पंचम भाव में चन्द्रमा का उपचार–

1. जंगल-पहाड़ की सैर करेगा तो उत्तम रहेगा।
2. कोई भी नया काम प्रारम्भ करने के पहले परिपक्व व्यक्ति से सलाह लेकर काम करें।
3. मोती युक्त 'चन्द्र यंत्र' धारण करें।

मेषलग्न में चन्द्रमा की स्थिति षष्टम भाव में

मेषलग्न में चन्द्रमा केन्द्राधिपति होने के कारण एवं लग्नेश मंगल का मित्र होने के कारण शुभफलदाई है। यहां छठे भाव में चन्द्रमा कन्या राशि में होने से शत्रुक्षेत्री होगा। व्यथित व
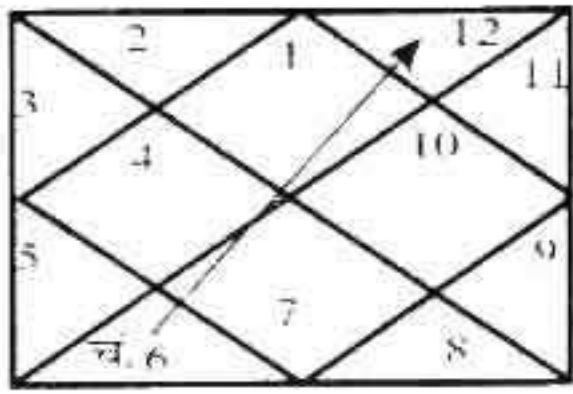
दुःखी होगा। ऐसे जातक का जन्म वृद्धा, बहन व लड़की के लिए शुभ होता है। जातक परोपकारी एवं दयालु होता है। तड़पते के मुंह में पानी डालने वाला, सच्चा हमदर्द होता है। जातक के नौकरी या व्यापार में बारम्बार बदलाव आता रहता है। चन्द्रमा की दृष्टि खर्च (व्यय) स्थान पर होने के कारण जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। यात्राएं अधिक करेगा। विदेश भी जाएगा।

निशानी–धोखे की माता एवं खारा कड़वा पानी जातक की माता अल्पायु होगी या बीमार रहेगी। जातक नकारात्मक सोच वाला होगा। जातक को रक्तचाप होगा।

अनुभव–जातक रोगी होगा। जातक की मां रोगी होगी। मंगल की स्थिति इस पर ज्यादा रोशनी डालेगी। जातक निराशावादी होगा।

दृष्टि–यहां से चन्द्रमा नीचराशिगत होकर मीन राशि (द्वादश भाव) को देखेगा। चन्द्रमा की यह दृष्टि द्वादश भाव के शुभफलों में वृद्धि करेगा। बाहरी यात्राएं सार्थक रहेंगी।

दशा–चन्द्रमा की दशा प्रतिकूल रहेगी। **'भोजसंहिता'** के अनुसार शुभ की शुभ स्थिति एवं चन्द्रमा पर शुभ ग्रहों की दृष्टि प्रतिकूलता में कमी लाएगी। यदि चन्द्रमा की राशि (चतुर्थ स्थान) पर शुभग्रह हो तो भी चन्द्रमा की दशा में शुभत्व आएगा।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र+सूर्य**–चन्द्रमा के साथ यदि सूर्य हो तो जातक का जन्म अश्विन कृष्ण अमावस्या की रात्रि 8 बजे के आसपास होगा। जातक को सन्तान सम्बन्धी चिन्ता रहेगी। विद्या में रुकावट आएगी। सरस्वती का मन्त्र धारण करने से लाभ होगा।
2. **चन्द्र+मंगल**–चन्द्रमा के साथ **लग्नभंग योग** के साथ **विपरीत राजयोग** भी बनाता है। ऐसा जातक धनी होगा। सुखी होगा पर मानसिक अशान्ति रहेगी।
3. **चन्द्र+बुध**–यदि चन्द्रमा के साथ बुध हो तो **'पराक्रमभंग योग'** बनेगा। जातक षड्यन्त्र का शिकार होगा। मित्र व रिश्तेदार दगा देंगे। जिससे कीर्तिभंग होगी। जातक बदनाम होगा।
4. **चन्द्र+गुरु**–चन्द्रमा के साथ गुरु हो तो **'गजकेसरी योग'** बनेगा। परन्तु भाग्यभंग योग, सुखभंग योग के कारण यह युति ज्यादा सार्थक नहीं होगी।
5. **चन्द्र+शुक्र**–यदि चन्द्रमा के साथ शुक्र नीच का हो तो 'षट्त्रिंशद् वर्ष विधवासंगमी' **हो** 36वें वर्ष में विधवा स्त्री के साथ सम्भोग करेगा।
6. **चन्द्र+शनि**–चन्द्रमा के साथ **'राजभंग योग'** एवं **'लग्नभंग योग'** बनाएगा। ऐसा जातक मानसिक तनाव में रहेगा तथा धन को लेकर परेशान रहेगा।
7. **चन्द्र+राहु**–राहु की स्थिति यहां शुभद है। पर ग्रहणयोग के कारण जातक सदैव तनावग्रस्त रहेगा।

8. **चन्द्र+केतु**—केतु की युति के कारण हल्की दुर्घटना का योग बनता है। तेज वाहन स्वयं न चलावे।
9. यदि चन्द्रमा के साथ राहु या केतु हो तो जातक को धन कमाने हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा। जातक रोगी होगा।

षष्टम भाव में चन्द्रमा का उपचार—

1. अपना भेद किसी को न बताओ
2. घर में खरगोश की पालना करें।
3. मंत्रपूत मोती जड़ा हुआ 'चन्द्र यंत्र' गले में धारण करें।

मेषलग्न में चन्द्रमा की स्थिति सप्तम भाव में
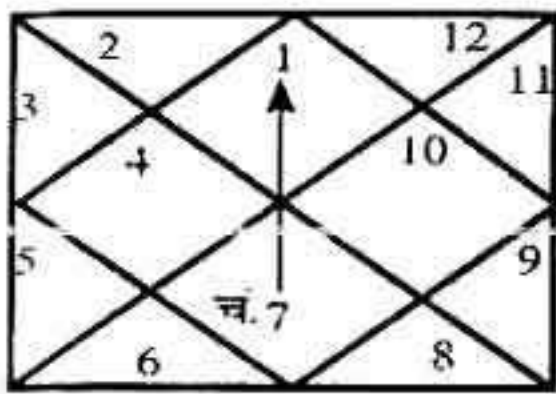
मेषलग्न में चन्द्रमा केन्द्राधिपति होने के कारण एवं चन्द्रमा लग्नेश मंगल का मित्र होने के कारण शुभ फलदाई है। चन्द्रमा यहां सप्तम भाव में तुला राशि का होगा। जातक धन-दौलत की कमी न पाने वाला, किसी के आगे हाथ न फैलाएं। स्त्री सुन्दर और शुभलक्षणों से युत होगी। चन्द्रमा यदि पूर्णबली है तो जातक के पत्नी जीवन भर साथ निभाएगी। 'क्षीणचन्द्रे कलत्रनाश:' चन्द्रमा यदि निर्बल है तो पत्नी की छोटी आयु में मृत्यु होगी।

दृष्टि—चन्द्रमा की पूर्ण दृष्टि लग्न पर है फलत: ऐसे जातक को परिश्रम का लाभ होगा। उसकी विद्या फलवती होगी। 24 वर्ष के बाद जातक आगे बढ़ेगा। जातक नित नए विषय की खोज करेगा।

निशानी—बच्चों की माता खुद लक्ष्मी अवतार, जातक ज्योतिष या अध्यात्म विद्या का ज्ञाता होगा। जातक मौत के समय अपने घर पर होगा। सूर्य, चन्द्र दोनों की दृष्टि लग्न पर होने से जातक की माता व पुत्र दोनों तेजस्वी होगें।

अनुभव—'भोजसंहिता' के अनुसार चन्द्रमा की यह स्थिति जातक को गुप्त धन देगी एवं ऐसे जातक को स्त्री-मित्रों से ज्यादा लाभ होगा। जातक को ससुराल में भूमि मिलेगी।

दशा—चन्द्रमा की दशा शुभफल देगी। शुक्र की अच्छी स्थिति शुभत्व में वृद्धि करेगी।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चन्द्र+सूर्य**—यदि चन्द्रमा के साथ सूर्य हो तो जातक का जन्म कार्तिककृष्ण अमावस्या की सायं काल सूर्यास्त के समय का होगा। जातक प्रशासनिक कार्यों में रुचि लेगा तथा अच्छा प्रशासक, प्रबन्धक एवं वक्ता साबित होगा।
2. **चन्द्र+मंगल**—चन्द्रमा के साथ मंगल हो तो **'महालक्ष्मी योग'** बनेगा। लग्नाधिपति योग के कारण जातक खूब धन कमाएगा। यहां मांगलिक दोष समाप्त होगा।

3. **चन्द्र+बुध**–ऐसे जातक का जीवनसाथी सुन्दर होगा। जातक स्वयं अपने कुल का नाम रोशन करेगा। पराक्रमी होगा।
4. **चन्द्र+गुरु**–चन्द्रमा के साथ गुरु होने से '**गजकेसरी योग**' बनेगा। सुखेश चन्द्रमा की भाग्येश गुरु के साथ यह युति जातक का पराक्रम बढ़ाएगी। जातक के व्यक्तित्व में निखार आएगा। उसे व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा।
5. **चन्द्र+शुक्र**–यदि चन्द्रमा के साथ शुक्र है तो जातक के दो स्त्री होंगी। 'भावाधिपे बलयुते स्त्रीद्वयम्' तथा अनेक स्त्रियों से सम्पर्क होगा।
6. **चन्द्र+शनि**–चन्द्रमा के साथ शनि उच्च का होने से '**शशयोग**' बनेगा। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य, वैद्य, वर्चस्व को प्राप्त करेगा। माता एवं पत्नी से सुखी होगा।
7. **चन्द्र+राहु**–चन्द्रमा के साथ राहु जीवन साथी में मतभेद, माता को पीड़ा देगा।
8. **चन्द्र+केतु**–चन्द्रमा के साथ केतु जीवन साथी के साथ मारपीट एवं माता को चोट पहुंचाता है।
9. यदि चन्द्रमा के साथ अन्य शुभ ग्रह है तो राजा की कृपा से धन लाभ होगा 'राजप्रसाद लाभ:' जातक को राजकीय सम्मान मिलेगा।
10. यदि चन्द्रमा के साथ राहु या केतु है तो जातक के माता का मृत्यु वाहन से होगी। (सत्यजातकम् अ. 7/श्लोक 7)

सप्तम भाव में चन्द्रमा का उपचार–

1. विवाह के दिन ससुराल से पत्नी के वजन का दूध, पानी या चावल लाना या पहले लाकर खाना।
2. चांदी के बर्तन में खाना-पीना शुभ रहेगा।
3. क्लेश दूर करने के लिए 'चन्द्र यंत्र' धारण करें।

मेषलग्न में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में
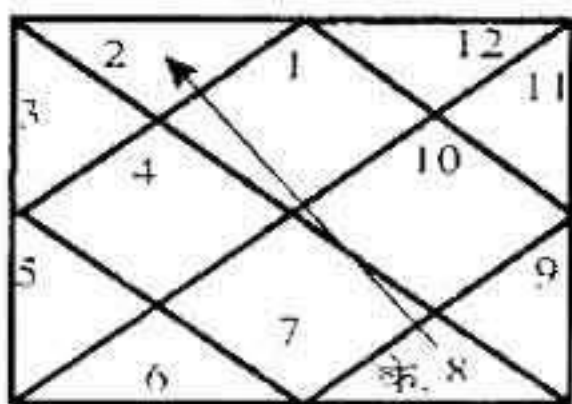
मेषलग्न में चन्द्रमा केन्द्राधिपति होने के कारण एवं लग्नेश मंगल का मित्र होने के कारण शुभफलदाई है। चन्द्रमा अष्टम भाव में वृश्चिक राशि का होगा जो कि इसकी नीचराशि है। जातक माता-पिता का सेवक होगा। इसे बुजुर्गों की सम्पत्ति मिलेगी। ससुराल से सम्बन्ध स्थापित होने के बाद किस्मत चमकेगी। जातक यात्राओं एवं जलीय संसाधनों में धन कमाएगा।

दृष्टि–चन्द्रमा में खड्डे होते हुए भी उसकी दृष्टि उच्च की धन स्थान पर है। जातक महत्वाकांक्षी होगा एवं यदि लग्नेश मंगल बलवान हो तो जातक खूब धन कमाएगा।

निशानी–मुर्दा माता, जला दूध। अपनी किस्मत आप चमकाए।

अनुभव–'भोजसंहिता' के अनुसार जातक झगड़ालू व ईर्ष्यालु होगा। तिक्त (खट्टा) व चटपटा भोजन पसन्द करेगा। जातक अपनी शक्ति का उपयोग नकारात्मक रूप से करेगा। ऐसे जातक की जमीन पर दूसरे लोग कब्जा करेंगे।

दशा–चन्द्रमा की दशा मिश्रित फल देगी।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र+सूर्य**–चन्द्रमा के साथ सूर्य हो तो जातक का जन्म मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या को सायं 4 से 6 के मध्य होगा। जातक की माता को कष्ट होगा या जातक को भूमि का नुकसान होगा। जातक को वाहन दुर्घटना का भी भय बना रहेगा।
2. **चन्द्र+मंगल**–यदि चन्द्र के साथ मंगल हो तो **'नीचभंगराज योग'** एवं क्रमशः **'महालक्ष्मी योग'** की सृष्टि होगी तो चन्द्रमा का नीचत्व भंग हो जाएगा। जातक धन एवं पृथ्वी का स्वामी होगा। धनवान पुरुष होगा।
3. **चन्द्र+बुध**–चन्द्रमा के साथ विषभोजन का भय देता है। बदहजमी की शिकायत रहेगी। बुध यहां **विपरीतराज योग** की सृष्टि भी करता है। ऐसा जातक धनी होगा।
4. **चन्द्र+गुरु**–चन्द्रमा के साथ गुरु **'गजकेसरी योग'** बनाएगा। परन्तु यह युति ज्यादा सार्थक नहीं होगी। जातक पारिजात के अनुसार ऐसे जातक की मृत्यु **'क्षयरोग'** से होगी। गुरु यहां **'विपरीत राजयोग'** बना रहा है। जातक धनी होगा।
5. **चन्द्र+शुक्र**–चन्द्रमा के साथ शुक्र **'राजभंग योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बनाएगा। ऐसा जातक ईर्ष्यालु होगा। उसे ठेकेदारी में नुकसान भी होगा।
6. **चन्द्र+शनि**–चन्द्रमा के साथ शनि **'राजभंग योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बनायेगा। ऐसा जातक ईर्ष्यालु होगा। उसे ठेकेदारी में नुकसान भी होगा।
7. **चन्द्र+राहु**–चन्द्रमा के साथ राहु गुप्तांग में बीमारी एवं दुर्घटना योग बनाता है। जातक के माता की अचानक मृत्यु घातक बीमारी से होगी।
8. **चन्द्र+केतु**–चन्द्रमा के साथ केतु जातक को शल्यचिकित्सा का भय देगा। जीवन में आपरेशन जरूर होगा। हृदय रोग का भय रहेगा।
9. शुक्र की स्थिति यदि अच्छी हो तो विवाह के बाद किस्मत चमकेगी। यदि धनस्थान में शुक्र हो तो जातक उत्तम वाहन (लक्जरी कार) उत्तम भवन (तीन मंजिला) एवं उत्तम नौकर-चाकर के सुखों से मुक्त होकर माता, मौसी या सासु की सेवा करेगा।

अष्टम भाव में चन्द्रमा का उपचार–

1. श्राद्ध या बुजुर्गो के नाम पर दान देना।
2. पनीर/दूध के पानी का इस्तेमाल करना, दूध पीना निषेध।
3. अस्पताल या शमशान में कुआं या हैण्डपम्प लगाना।
4. 'चन्द्र यंत्र' धारण करना।
5. बच्चों व बुजुर्गो के पांव धोयें।

मेषलग्न में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में
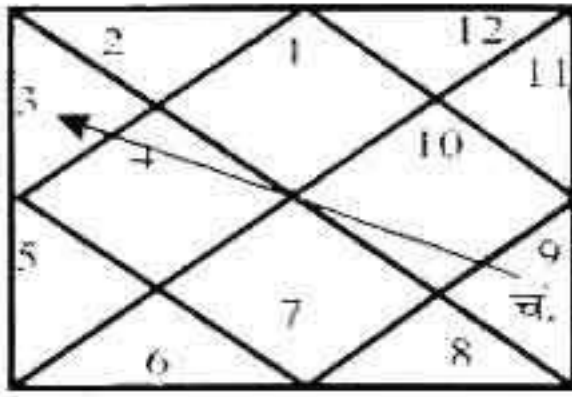
मेषलग्न में चन्द्रमा केन्द्राधिपति होने के कारण लग्नेश मंगल का मित्र होने के कारण शुभफलदाई है। नवम स्थान में चन्द्रमा धनु राशि में होगा जो उसे मित्र ग्रह की शुभराशि है। ऐसा जातक बहुत बड़ा धर्मात्मा, पुण्यात्मा एवं ज्ञानी होता है। 'बहुश्रुतवान् पुण्यवान' ऐसा जातक तीर्थयात्राएं करता है। जातक ईमानदार एवं व्यवहारिक होता है तथा समाज में, राजनीति से उच्च पद प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है।

दृष्टि–धनराशि गत चन्द्रमा की पूर्ण दृष्टि पराक्रम स्थान पर है। जातक अपने भाई-बहनों एवं परिजनों से बहुत स्नेह रखेगा। जातक जनसम्पर्क सघन होगा। उसे पत्रकारिता एवं नित नए विषयों के अनुसंधान की रुचि रहेगी।

निशानी–दु:खियों का रक्षक, समुद्र। ऐसे जातक के पुत्र सन्तति जरूर होगी। सन्तान सुपुत्र कहलाएगा।

अनुभव–जातक को सच्चाई की बात पर तुरन्त क्रोध आएगा परन्तु क्रोध क्षणिक होगा।

दशा–'भोजसंहिता' के अनुसार चन्द्रमा की दशा अत्यन्त शुभफल देगी। यदि गुरु की स्थिति इस कुण्डली में शुभ हो तो दशा का शुभत्व 20% और बढ़ जाएगा।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र+सूर्य**–चन्द्रमा के साथ सूर्य हो तो जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या की दोपहर में 2 से 4 बजे के मध्य होगा। जातक को माता-पिता दोनों का सुख मिलेगा। खासकर पैतृक सम्पत्ति मिलने का योग है। यह युति प्रबल राजयोग कारक है।
2. **चन्द्र+मंगल**–चन्द्रमा के साथ मंगल हो अथवा चन्द्रमा के सामने मंगल हो तो **'लक्ष्मीयोग'** बनेगा। जातक खूब धन कमाएगा।
3. **चन्द्र+बुध**–चन्द्रमा के साथ बुध जातक को महान पराक्रमी बनाएगा। मित्रों से लाभ रहेगा।
4. **चन्द्र+गुरु**–यदि चन्द्रमा के साथ गुरु हो तो **'गजकेसरी योग'** बनेगा। नवम भाव में गुरु स्वगृही होकर बलवान रहेगा। फलत: दोनों शुभ ग्रहों की दृष्टि लग्न स्थान, पराक्रम स्थान एवं पंचम भाव पर रहेगी। फलत: प्रथम सन्तति के बाद जातक का विशेष भाग्योदय होगा। राजनीति में जीत होगी। सन्तान आज्ञाकारी होगी। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी।
5. **चन्द्र+शुक्र**–चन्द्रमा के साथ शुक्र होने से जातक को माता-पिता द्वारा रक्षित धन मिलता है। उत्तम वाहन का योग बनता है।

6. **चन्द्र+शनि**–चन्द्रमा के साथ शनि होने से जातक महत्वाकांक्षी होगा। व्यापार में खूब ध न कमाएगा।
7. **चन्द्र+राहु**–चन्द्रमा के साथ राहु भाग्योदय हेतु संघर्ष कराएगा पर किस्मत मेहनत के बाद चमकेगी।
8. **चन्द्र+केतु**–चन्द्रमा के साथ केतु जातक सफलता देता है पर सफलता प्रथम प्रयास से नहीं मिलती।

नवम भाव में चन्द्रमा का उपचार–

1. धर्म-कर्म और तीर्थ यात्रा में रुचि लें।
2. 'चन्द्र यंत्र' धारण करना।

मेष लग्न में चन्द्रमा की स्थिति दशम भाव में
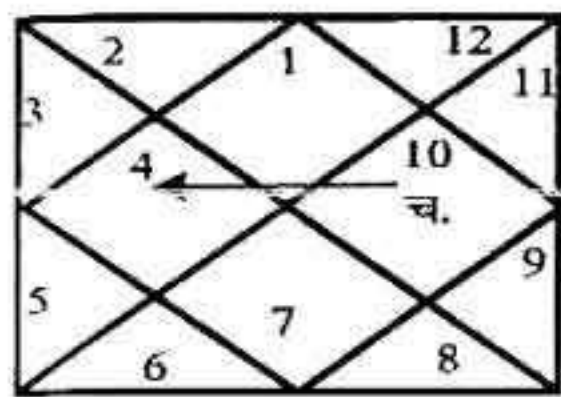
मेषलग्न में चन्द्रमा केन्द्राधिपति होने के कारण एवं लग्नेश मंगल का मित्र होने के कारण शुभफलदाई है। दशम भाव में चन्द्रमा मकर राशि में होगा। मकर राशि का स्वामी शनि मेषलग्न वालों के लिए अशुभ फलकर्त्ता है। फिर भी ऐसा व्यक्ति भंवर में फंसी हुई नैया को पार लगाने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति परिश्रमी, कार्यशील, धार्मिक, साहसी, धनवान एवं महत्वाकांक्षी होता है।

दृष्टि–मकर राशि गत चन्द्रमा की पूर्ण दृष्टि चतुर्थ भाव अपने स्वयं के घर पर होने से जातक को उत्तम वाहन एवं भवन की प्राप्ति होती है। उसे सभी कार्यों में बराबर सफलता मिलती है।

निशानी–जहरीला पानी, जातक घूमता रहेगा। यात्राओं में ज्यादा रस लेगा।

दशा–चन्द्रमा की दशा बहुत अच्छी जाएगी। 'भोजसंहिता' के अनुसार यदि शनि की स्थिति शुभ हो तो शुभत्व 20% और बढ़ जाएगा।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र+सूर्य**–चन्द्रमा के साथ सूर्य हो तो जातक का जन्म माघ कृष्ण अमावस्या को मध्य दिन में होगा। यहां से चन्द्रमा अपने घर को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलतः जातक को उत्तम वाहन मकान का, नौकर-चाकर का पूर्ण सुख मिलेगा। जातक को सन्तानें पढ़ी-लिखी होंगी। यह युति प्रबल राजयोग कारक है।
2. **चन्द्र+मंगल**–यदि चन्द्रमा के साथ मंगल हो तो जातक महाधनी होगा। **'रुचक योग'**, **'महालक्ष्मी योग'** के कारण जातक बड़ी भूमि-भाव एवं सम्पत्ति का स्वामी होगा। राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा। यदि यहां गुरु चौथे व सूर्य लग्न में हो तो जातक मिनिस्टर होगा। लाल बत्ती के गाड़ी का स्वामी होगा।

3. **चन्द्र+बुध**–चन्द्रमा के साथ बुध जातक को पराक्रमी बनाएगा। जातक अपने कुल का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।
4. **चन्द्र+गुरु**–यदि चन्द्रमा के साथ गुरु हो तो **'गजकेसरी योग'** बनेगा। दोनों शुभ ग्रहों की दृष्टि धनस्थान, चतुर्थभाव एवं षष्टम् स्थान पर होगी। ऐसे जातक को ननिहाल व माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक धनवान होगा। दीर्घजीवी होगा।
5. **चन्द्र+शुक्र**–चन्द्रमा के साथ शुक्र जातक को चार पहियों का वाहन देगा।
6. **चन्द्र+शनि**–यदि चन्द्रमा के साथ शनि हो तो **'शशयोग' पद्मसिहांसन योग'** योग के कारण जातक साधारण परिवार में जन्म लेकर भी कीचड़ में कमल की तरह उच्च पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।
7. **चन्द्र+राहु**–चन्द्रमा के साथ राहु व्यापार में नुकसान देगा। माता को बीमारी व कष्ट देगा।
8. **चन्द्र+केतु**–चन्द्रमा के साथ केतु जातक को हृदय रोग या भारी बीमारी देगा पर उससे बचाव होता रहेगा।

दशम भाव में चन्द्रमा का उपचार–

1. रात को दूध नहीं पीना, क्योंकि यह दूध जहर का काम करेगा।
2. 'चन्द्र यंत्र' धारण करना।

मेषलग्न में चन्द्रमा की स्थिति एकादश भाव में
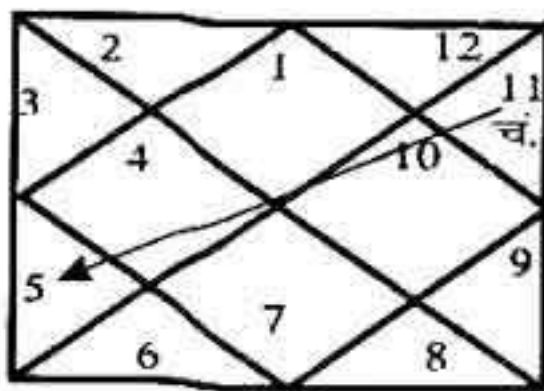
मेषलग्न में चन्द्रमा केन्द्राधिपति होने के कारण एवं मंगल का मित्र होने के कारण शुभफलदाई है। एकादश स्थान में स्थित चन्द्रमा कुम्भ राशि में होगा। कुम्भ राशि का स्वामी शनि मेषलग्न के लिए अशुभ फलकारी माना गया है। ऐसा जातक उदार हृदय एवं मधुर व्यवहार वाला होता है। जातक राज्याधिकारी, वकील, सामाजिक कार्यकर्त्ता, मकान-वाहन सुख से युक्त दूरदर्शी होता है।

दृष्टि–कुम्भ राशि में स्थित चन्द्रमा की पूर्व दृष्टि पंचम भाव पर है। फलत: जातक को विद्या में सफलता मिलेगी। जो भी कार्य हाथ में लेंगे, उसमें सफलता मिलेगी।

निशानी–सब कुछ होते हुए भी न के बराबर। कन्या सन्तति जरूर होगी।

अनुभव–जातक हवाई यात्रा अवश्य करेगा क्योंकि चन्द्रमा वायुभाजक राशि में होकर लाभस्थान में है।

दशा–चन्द्रमा की दशा में जातक प्रजावान होगा। विद्यावान होगा। भोजसंहिता के अनुसार उसे चन्द्र सम्बन्धी शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र+सूर्य**–चन्द्रमा के साथ सूर्य हो तो जातक का जन्म फाल्गुन कृष्ण अमावस्या को प्रात: 9 से 11 बजे के मध्य होगा। सूर्य शत्रुक्षेत्री होकर अपने घर को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। जातक प्रजावान होगा। उसे पुत्र-पुत्री दोनों प्रकार की सन्तति मिलेगी। जातक की सन्तानें उच्च शिक्षा प्राप्त करेगी।
2. **चन्द्र+मंगल**–चन्द्रमा के साथ मंगल **'लक्ष्मी योग'** बनाता है। जातक व्यापार में उच्च पद की प्राप्त करेगा, उद्योगपति होगा।
3. **चन्द्र+बुध**–चन्द्रमा के साथ बुध कन्या सन्तति की बाहुल्यता देगा। जातक लंगोट का कच्चा होगा।
4. **चन्द्र+गुरु**–यदि चन्द्रमा के साथ गुरु हो तो **'गजकेसरी योग'** बनेगा दोनों शुभ ग्रहों की दृष्टि पराक्रम स्थान, पंचम स्थान एवं सप्तम स्थान पर होने से जातक का प्रथम भाग्योदय विवाह के बाद, दूसरा भाग्योदय प्रथम सन्तति के बाद होगा। जातक अपने परिजनों व मित्रों के प्रति समर्पित भाव रखेगा।
5. **चन्द्र+शुक्र**–चन्द्रमा के साथ शुक्र कन्या सन्तति की बाहुलता देगा। जातक बड़े उद्योग का स्वामी होगा। जातक विलासी होगा। धनी होगा।
6. **चन्द्र+शनि**–यदि चन्द्रमा के साथ शनि हो तो जातक धनवान होगा। व्यापारी होगा। उसके कन्या सन्तति जरूर होगी।
7. **चन्द्र+राहु**–चन्द्रमा के साथ राहु होने से जातक अपनी उम्र में बड़ी स्त्री के साथ संभोग करेगा।
8. **चन्द्र+केतु**–चन्द्रमा के साथ केतु जातक को भगम्या स्त्री से रमण कराएगा।
9. यदि चन्द्रमा के साथ अन्य पापग्रह हो तो–'पापयुते सप्तविंशति वर्षे विधवासंगमेन जन विरोधी' विधवा स्त्री के सम्भोग से जनविरोध का सामना करना पड़ेगा।

एकादश भाव में चन्द्रमा का उपचार–

1. भैरों के मंदिर में दूध देना।
2. बच्चों को 121 पेडे या रेवडी बांटना।
3. 'चन्द्र यंत्र' धारण करना।

मेषलग्न में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में
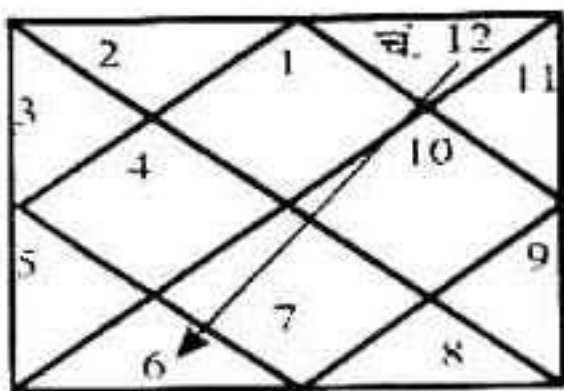
मेषलग्न में चन्द्रमा केन्द्राधिपति होने के कारण एवं लग्नेश मंगल का मित्र होने के कारण शुभफलदाई है। यहां चन्द्रमा बारहवें स्थान पर होने से मीन राशि में होगा। मीन राशि का स्वामी गुरु मेषलग्न के लिए योगकारक होकर चन्द्रमा का मित्र है। ऐसा जातक राजदरबार, कोर्ट-कचहरी में विजय पान

वाला, ज्योतिष, तन्त्र-मन्त्र, गुप्त विद्याओं को जाने वाला, बुजुर्गों का नाम रोशन करने वाला, विदेशों में जाकर अपनी किस्मत चमकाने वाला परम तेजस्वी व्यक्ति होता है।

दृष्टि—मीन राशिगत चन्द्रमा की दृष्टि छठे भाव में होने पर से जातक को दीर्घायु बनाता है। ऐसा जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में पूर्ण सक्षम होता है।

निशानी—तूफान में बस्तियां उजाड़ने वाला दरिया।

अनुभव—जातक विदेश यात्रा, समुद्री यात्रा अवश्य करेगा। भोजसंहिता के अनुसार बाएं नेत्र की रोशनी जरूर कम होगी। ज्यादा प्रतिकूल स्थिति में एक आंख नष्ट भी हो सकती है। व्ययभाव गते चन्द्रः वामचक्षु नश्यति।

दशा—चन्द्रमा की दशा मिश्रित फल देगी। 50% शुभ 50% अशुभ। यदि गुरु की स्थिति शुभ हो तो दशा पूर्णतः अनुकूल हो जाएगी। यदि चन्द्रमा की राशि (चतुर्थ स्थान) में शुभ ग्रह तो दशा 60% शुभ फलदाई होगी। यदि चन्द्रमा शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो 70% शुभफल देगा। चन्द्रमा यदि पाप पीड़ित हुआ तो 40% प्रतिकूल फल देगा।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चन्द्र+सूर्य**—चन्द्रमा के साथ सूर्य हो तो जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या के दिन को 7.30 से 9.30 बजे के मध्य होगा। जातक को नेत्र पीड़ा होगी। जातक काना भी हो सकता है पर खर्चीले स्वभाव का अवश्य होगा।
2. **चन्द्र+मंगल**—चन्द्र+मंगल युति से **'लक्ष्मी योग'** बनेगा। जातक धनवान होगा। इस युति के मांगलिक दोष भी समाप्त हो जाएगा।
3. **चन्द्र+बुध**—चन्द्रमा के साथ बुध **'विपरीतराज योग'** की सृष्टि करेगा। जातक धनवान होगा एवं धार्मिक कार्यों में धन स्वयं करेगा।
4. **चन्द्र+गुरु**—यदि चन्द्रमा के साथ गुरु हो तो **'गजकेसरी योग'** बनता है। गुरु यहां स्वगृही होगा। दोनों शुभग्रहों की दृष्टि चतुर्थ भाव, षष्टम भाव एवं अष्टम भाव पर होगी। फलतः जातक दो मंजिला भवन 32 वर्ष की आयु में बनायेगा। जातक दीर्घजीवी होगा एवं अपने शत्रुओं का मान-मर्दन करने में सक्षम होगा।
5. **चन्द्र+शुक्र**—यदि चन्द्रमा के साथ शुक्र हो तो **'मातृमूलधन योग'** की सृष्टि होगी। माता, मकान, वाहन द्वारा धन प्राप्ति होगी जातक अनेक नौकरों का स्वामी होगा।
6. **चन्द्र+शनि**—चन्द्रमा के साथ शनि **'राजभंग योग'** एवं **लाभभंग योग** बनाता है। जातक का धन खर्च होता रहेगा।
7. **चन्द्र+राहु**—चन्द्रमा के साथ राहु यात्रा व्यय कराएगा। जातक पंखचक होगा।
8. **चन्द्र+केतु**—चन्द्रमा के साथ केतु जातक हवाई यात्रा करेगा। पर जबान का सच्चा नहीं होगा।
9. चन्द्रमा बारहवें और शुक्र द्वितीय स्थान में हो तो जातक की दोनों आंखों की रोशनी चली जाएगी।

द्वादश भाव में चन्द्रमा का उपचार–

1. चावल, चांदी, दूध आदि का दान करना।
2. सच्चा मोती दूध रंग धारण करना, मोती के अभाव में चांदी धारण या चंद्र यंत्र पहनना।
3. दूध का बर्तन रात को सिरहाने रखकर सुबह वटवृक्ष में डालना।
4. सोमवार का व्रत रखना।
5. शिवजी की उपासना करना।

❑❑❑

मेषलग्न में मंगल की स्थिति

मेषलग्न में मंगल की स्थिति प्रथम भाव में
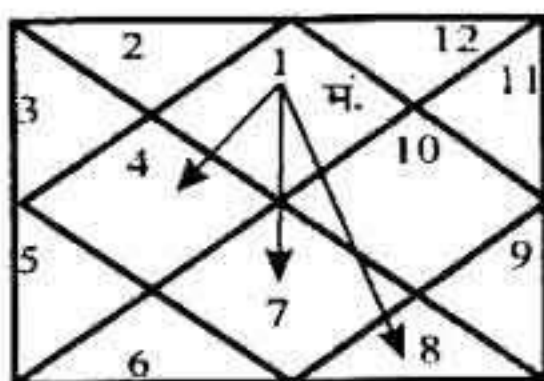
मेषलग्न में मंगल लग्नेश व अष्टमेश होता है पर यहां लग्नेश होने से मंगल को अष्टमेश को दोष नहीं लगेगा। ऐसा व्यक्ति बहुत ही शक्तिशाली, प्रसिद्ध एवं नेतृत्व शक्ति युक्त सफल नेता या प्रशासक होता है।

रुचकयोग–मेषलग्न में मंगल स्वगृही लग्न में होने के कारण 'रुचक योग' बना।

परिणाम (Result) –ऐसा व्यक्ति जिला, शहर या गांव का प्रमुख होता है। जहां सभा इत्यादि में बैठता है, वहां की अध्यक्षता करता है। उत्तम भवन एवं वाहन का सुख उसे सहज में ही प्रप्त होता है। जीवन में सभी प्रकार के भौतिक ऐश्वर्य व संसाधनों की प्राप्ति बलपूर्वक प्राप्त करता है। मंगल की प्रधानता के कारण जातक शूरवीर व साहसी होता तथा आगे बढ़ने की तीव्र महत्वाकांक्षा इनमें कूट-कूट कर भरी होती है।

लग्न में बैठकर बलवान मंगल चौथे स्थान, सातवें स्थान एवं आठवें स्थान को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। फलत: यह दृष्टि जातक की आयु, मातृसुख एवं विवाह सुख के लिए संतोषप्रद है। **'लग्नेभौम: क्रोधी'** लग्न में मंगल होने में व्यक्ति क्रोधी होगा।

मांगलिक कुण्डली–मंगल की यह स्थिति कुण्डली को मांगलिक बनाती है। ऐसे पुरुष या स्त्री का जीवन साथी भी मांगलिक होना चाहिए। तभी विवाह सुख, गृहस्थ सुख स्थाई रहेगा अन्यथा दोनों में से एक खण्डित होगा।

निशानी–ऐसा जातक **'इंसाफ की तलवार'** होता है। जबान से निकला शब्द पत्थर की लकीर होती है। अपने वचन के लिए जातक मर मिटता है। छोटे-बड़े भाइयों की शर्त नहीं पर आप अकेला भाई नहीं होगा। चेहरे पर लाल मस्सा, शस्त्रचोट या चेचक के निशान होंगे।

व्यवसाय–प्राय: ऐसा जातक पुलिस, प्रशासन, मिल्टरी में नौकरी अथवा टैक्नीकल व मैकेनिकल व्यक्ति होता है। इन्हें प्राय: भूमि-भवन के निर्माण कार्य, लकड़ी, मशीनरी, ठेकेदारी मे लाभ होता है।

भाग्योदय–भाग्योदय प्राय: 28 वर्ष की आयु में होता है। विवाह के तत्काल बाद होता है अथवा मंगल की दशा, अंतर्दशा में होता है।

दशा–'भोजसंहिता' के अनुसार मंगल की दशा अति उत्तम फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चन्द्र–महालक्ष्मीयोग**–मंगल के साथ चन्द्रमा हो तो **'महालक्ष्मी योग'** बनेगा। जातक महाधनवान होगा। यहां मांगलिक दोष भी समाप्त होगा।
2. **मंगल+सूर्य–किम्बहुनायोग**–यदि यहां मंगल के साथ सूर्य हो तो **'किम्बहुना योग'** बनता है। इससे अधिक और क्या? सूर्य यहां उच्च का होने से जातक को एक तेजस्वी पुत्र होगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली होगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ यहां बुध होने से जातक महान पराक्रमी होगा। षष्टेश लग्नेश की युति गुप्त रोग व गुप्त शत्रुओं से भय देता रहेगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ भाग्येश गुरु होने से जातक परम भाग्यशाली होगा। पर खर्चीले स्वभाव का होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–धनेश व अष्टमेश की युति शत्रुओं से धन दिलाएगी। जातक रंगीन मिजाज का होगा किन्तु परम साहसी होगा।
6. **मंगल+शनि–नीचभंग राजयोग**–यदि यहां मंगल के साथ शनि हो तो **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। शनि का नीचत्व भंग होगा। शनि एवं मंगल परस्पर शत्रु होते हुए भी यहां अत्यन्त शुभफल देंगे। जातक दुस्साहसी एवं हठी होगा तथा राजतुल्य ऐश्वर्य भोगेगा। महिमा मण्डित होगा।
7. **मंगल+राहु**–ऐसा जातक परम तेजस्वी योद्धा होगा।
8. **मंगल+केतु**–ऐसा जातक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विजयी रहेगा। कीर्तिवन्त होगा।

प्रथम भाव में मंगल का उपचार–

1. झूठ बोलने से जातक की ताकत कमजोर होगी।
2. मुफ्त का माल करवाना न दान लेना।
3. हाथी दांत का सामान घर में न रखे।

मेषलग्न में मंगल की स्थिति द्वितीय स्थान में
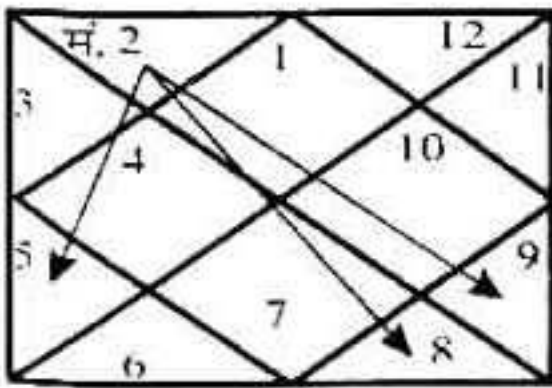
मेषलग्न में मंगल लग्नेश व अष्टमेश होता है पर मंगल को यहां अष्टमेश का दोष नहीं है। लग्नेश धनस्थान में होने से जातक धनवान होगा। जीवन में सभी प्रकार की सुख सुविधाओं को अपने प्रयत्न (पुरुषार्थ) से प्राप्त करने में सफल होगा।

निशानी–दूसरों को पालने वाला, जन्म से बड़ा भाई होगा या 28 वर्ष तक यह जन्मपयी वाला खुद बड़ा भाई बन जाएगा।

दृष्टि–मंगल की दृष्टि पंचम भाव, अष्टम भाव, एवं भाग्य (नवम) भाव पर है। फलतः जातक के कम से कम दो पुत्र (ऑपरेशन न हो तो) तीन पुत्र होते हैं। पुत्र जन्म के बाद जातक का भाग्योदय होता है।

जातक गुप्त विद्याओं, ज्योतिष मन्त्र-तन्त्र-मन्त्र का जानकार होता है। जातक साधक होगा।

दशा–'भोजसंहिता' के अनुसार मंगल की दशा अति उत्तम फल देगी। इस दशा में जातक का सम्पूर्ण भाग्योदय होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चन्द्र**–मंगल के साथ यदि चन्द्रमा हो तो **'महालक्ष्मी योग'** बनेगा। जातक महाधनी होगा। इसे माता की सम्पत्ति मिलेगी। मकान-वाहन का सुख उत्तम होगा। यहां मांगलिक दोष समाप्त होगा।
2. **मंगल+सूर्य**–पंचमेश लग्नेश की युति धनस्थान में व्यक्ति को महाधनी बनाएगी। ऐसा विद्या व हुनर के माध्यम से आगे बढ़ता है।
3. **मंगल+बुध**–तृतीयेश धनस्थान में लग्नेश के साथ हो तो व्यक्ति अपना पराक्रम बढ़ाने में, इष्ट-मित्रों में धन खर्च करता है।
4. **मंगल+गुरु**–भाग्येश, लग्नेश की युति धनस्थान में व्यक्ति को पुरुषार्थ के द्वारा धन दिलाती है। खासकर मध्यम आयु में व्यक्ति धनी होता है।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ यदि यहां शुक्र हो तो बलवान धनेश की लग्नेश के साथ युति के कारण जातक स्वपराक्रम से अर्जित धन-वैभव को भोगेगा। भाग्योदय विवाह के बाद होगा।
6. **मंगल+शनि**–दसमेश, लाभेश शनि की लग्नेश से युति धनस्थान में होने से व्यक्ति व्यापार से खूब धन कमाता है पर धन खर्च होता चला जाता है।
7. **मंगल+राहु**–यदि मंगल के साथ राहु हो तो पत्नी की मृत्यु पहले होगी।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु धनस्थान में जातक के जीवन में स्थाई धन के एकत्र में बाधक है।

द्वितीय भाव में मंगल का उपचार–

1. लाल या नारंगी रंग का सुगंधित रुमाल पास रखना।
2. बच्चों को दोपहर समय चना-गुड़ बांटना।
3. घर में मृगछाला (हिरण की खाल) रखें।
4. मूंगा युक्त 'मंगल यंत्र' धारण करें।
5. ऋणमोचन मंगल स्तोत्र पढ़े।

मेषलग्न में मंगल की स्थिति तृतीय स्थान में
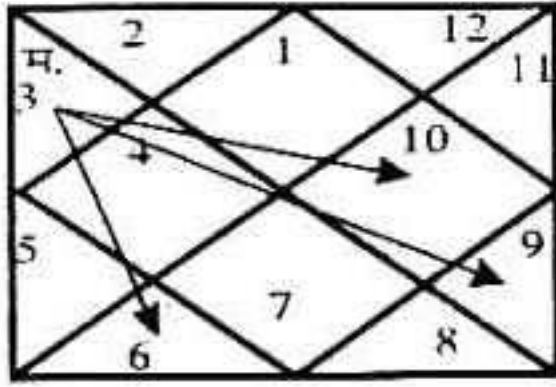
मेषलग्न में मंगल लग्नेश व अष्टमेश होता है पर लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगता। मंगल मिथुन राशि में है। जो इसकी मित्र राशि नहीं है। मंगल यहां मिश्रित फलकारी है।

दृष्टि–तृतीय स्थान में मंगल होने से इसकी दृष्टि छठे भाव, नवमभाव एवं दशम भाव पर होगी। ऐसा जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होता है। भाग्योदय 28 वर्ष के बाद एवं पिता का सम्पत्ति भी 32 वर्ष बाद मिलेगी।

निशानी–चिड़िया घर का कैदी शेर, जिसको अपनी ताकत का पता नहीं। बहन-भाई जरूर होंगे।

अनुभव–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनराशिगत तृतीयस्थ मंगल जातक को महान पराक्रमी बनाता है। परन्तु जातक कुछ डरपोक किस्म का होता है। भाई-बहन के साथ सम्बन्ध अच्छे नहीं होते क्योंकि मंगल बुध का शत्रु है।

दशा–मंगल की महादशा से जातक का सम्पूर्ण भाग्योदय होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चन्द्र**–मंगल के साथ यदि चन्द्रमा हो तो **लक्ष्मी योग** बनेगा। जातक धनवान होगा। उसके नजदीकी रिश्तेदार भी धनवान होंगे।
2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ पंचमेश सूर्य की प्रति व्यक्ति को पराक्रमी बनाएगा। इष्ट मित्रों से, राजदरबार से जातक लाभान्वित होता रहेगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ स्वगृही बुध, जातक को महान पराक्रमी बनाता है। जातक व्यवहार कुशल एवं यशस्वी होगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ गुरु होने से कुटम्बी, मित्रों द्वारा धन व यश की प्राप्ति सम्भव है।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ, धनेश+सप्तमेश शुक्र विवाह के बाद जातक का पराक्रम बढ़ाएगा।
6. **मंगल+शनि**– मंगल के साथ शनि के कारण जातक पराक्रमी तो होगा पर भाइयों में नहीं बनेगी। मित्रों से झगड़ा रहेगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु मित्रों से दगा मिलेगा। कुटम्बीजनों से विवाद बना रहेगा।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु व्यक्ति को धर्म ध्वज बनाएगा। कुटुम्बीजनों में विरोध रहेगा।

तृतीय भाव में मंगल का उपचार–

1. हाथी दांत पास रखे।
2. चांदी का छल्ला बायें हाथ में पहनें।
3. ध्यान रहे तोंद न बढ़े।

मेषलग्न में मंगल की स्थिति चतुर्थ स्थान में
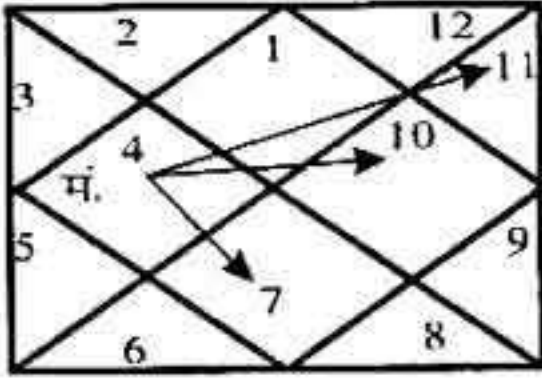
मेषलग्न में मंगल लग्नेश व अष्टमेश होता है पर लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगता। मंगल यहां कर्क राशि में है जो उसके मित्र की राशि है। ऐसा व्यक्ति पराक्रमी एवं निडर होगा। जातक दूसरों का हितैषी, वाहन सुख वाला होता है। बालक के जन्म से माता को तकलीफ होती है।

निशानी–भाई की स्त्री धनी, अपनी मां, नानी, सास सब पर मौत तक भारी पड़ेगी। आप बेशक जन्म से छोटा हो मगर इस पत्री वाला 28 साल की आयु तक खुद बड़ा भाई हो जाएगा।

दृष्टि–कर्कस्थ मंगल की दृष्टि सप्तमभाव, दशम (राज्य) भाव एवं एकादश भाव पर है। ऐसे जातक का विवाह के बाद भाग्योदय होगा। जातक नौकरी या व्यवसाय जो भी करे, उससे 28 से 32 वर्ष के भीतर खूब तरक्की होगी। जातक न्यायप्रिय एवं सच्चाई का साथ देने वाला व्यक्ति होगा।

अनुभव–ऐसे जातक का तत्काल भाग्योदय विवाह के बाद होगा।

दशा–'भोजसंहिता' के अनुसार मंगल की महादशा उत्तम फलकारी साबित होगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चन्द्र–नीचभंग राजयोग**–यदि यहां मंगल के साथ चन्द्रमा हो तो **'नीचभंग राजयोग'** के साथ-साथ **'यामिनीनाथ योग'** एवं **'महालक्ष्मी योग'** बनेगा। जातक को माता की सम्पत्ति स्नेह विशेष मिलेगा। जातक पृथ्वीपति (land lord) होगा। **'महालक्ष्मी योग'** यहां ज्यादा मुखरित होगा तथा मांगलिक दोष भी समाप्त होगा।
2. **मंगल+सूर्य**–पंचमेश सूर्य केन्द्र में होने से जातक विद्यावान् होगा। मां बीमार रहेगी परन्तु घर सुख-सुविधाओं से भरपूर होगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध यहां शत्रुक्षेत्री होगा। जातक की माता अल्पायु होगी। जातक स्वयं को हृदय सम्बंधी शल्य चिकित्सा करानी पड़ेगी।
4. **मंगल+गुरु–नीचभंग राजयोग**–यदि यहां मंगल के साथ उच्च का गुरु हो तो नीचभंग राजयोग बनेगा मंगल का नीचत्व समाप्त होगा। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा। 'हंस योग' के कारण जातक गांव का प्रमुख होकर ऊंची प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र जातक को एकाधिक वाहन एवं नौकरों का सुख देगा।

6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि जातक को सरकारी नौकरी या ठेकेदारी में लाभ दिलाएगा।
7. **मंगल+राहु**–माता की अल्पायु में मृत्यु का संकेत देता है।
8. **मंगल+केतु**–माता को गम्भीर बीमारी एवं जातक के लिए भी शल्य चिकित्सा का योग बनाता है।
9. **मंगल+गुरु**+चन्द्रमा की युति कर्क राशि में हो तो यह प्रबल राजयोग होगा जातक लालबत्ती की गाड़ी का हकदार होगा।

चर्तुथ भाव में मंगल का उपचार–

1. घर में दक्षिणी दरवाजा, कीकर, बेर, बबूल या केक्टस हो तो फौरन हटाए।
2. काला, काना, नि:स्तान, गंजा या विकलांग से दूर रहे।
3. दूध में मीठा डालकर बरगद के वृक्ष में चढ़ाये 28 मंगलवार तक।
4. संतान की रक्षा के लिए मिट्टी के पात्र में शहद या मंगलवार के दिन वीरान जगह में दबा दें।
5. पेट, मस्से या चर्मरोग जैसी बीमारी से बचने के लिए 28 मंगलवार तक गीली मिट्टी का तिलक लगाये।

मेषलग्न में मंगल की स्थिति पंचम स्थान में
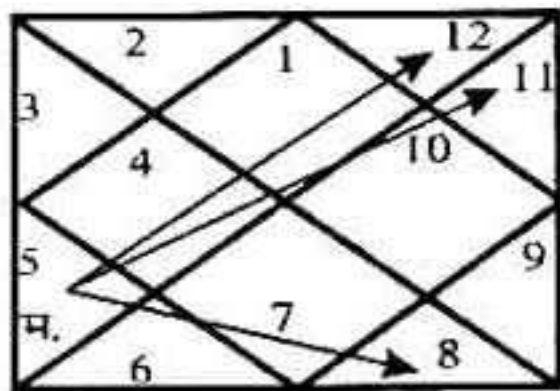
मेषलग्न में मंगल लग्नेश व अष्टमेश होता है पर लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगता। मंगल यहां सिंह राशि में है। जिसका स्वामी सूर्य शुभफलदायक है। जातक पहलवानी, व्यायाम में रुचि रखने वाला शरीर-बल पर ज्यादा ध्यान देने वाला होगा। जातक स्वभाव से क्रोधी होगा पर क्रोध क्षणिक होगा।

निशानी–रईसों का बाप-दादा। तृतीय भाव में बुध हो तो दो भाई। प्रथम पुत्र होगा।

दृष्टि–सिंहस्थ मंगल की अग्नि दृष्टि अष्टम भाव, लाभभाव एवं व्ययभाव पर होगी। फलत: जातक की आयु लम्बी होगी। व्यापार में लाभ होगा। जातक महत्वाकांक्षी होगा तथा अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति हेतु धन का अपव्यय करेगा। धैर्य की कमी होगी। पर जातक शूरवीर व साहसी होगा।

अनुभव–'भोजसंहिता' के अनुसार सिंहस्थ मंगल पंचमभाव में मित्र के घर में होगा। जातक को जीवन में उच्च पद या सफलता अवश्य मिलेगी।

दशा–'भोजसंहिता' के अनुसार मंगल की महादशा शुभफलदायक होगी। इस दशा में यात्रा में लाभ, व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा। उत्तम धन की प्राप्ति होगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चन्द्र**–यदि मंगल के साथ चन्द्रमा हो तो **'लक्ष्मी योग'** बनेगा। जातक धनवान होगा।
2. **मंगल+सूर्य**–यदि यहां मंगल के साथ सूर्य हो तो जातक के प्रथम पुत्र उत्पन्न होगा। पुत्र तेजस्वी होगा। जातक का जन्म श्रावण-भाद्रपक्ष माह की रात्रि को दस बजे के लगभग होगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध जातक को पुत्र के अलावा दो कन्या सन्तति देगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ भाग्येश गुरु जातक को तीन से पांच पुत्र देगा। प्रथम पुत्र होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र जातक पुत्र के अलावा कन्या सन्तति की बाहुल्यता भी देगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि जातक को उद्योगपति बनाएगा। जातक विदेशी भाषा पढ़ेगा एवं तकनीकी विशेषज्ञ होगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के मध्य राहु विद्या में बाधा। प्रथम सन्तति का गर्भपात भी करा सकता है।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु जातक की सन्तति शल्य चिकित्सा से कराएगा।

पंचम भाव में मंगल का उपचार–

1. नीम का वृक्ष लगावे।
2. रात को सिरहाने पानी रखें, सुबह किसी गमले आदि में डाले।
3. अपना चरित्र चाल-चलन ठीक रखें।

मेषलग्न में मंगल की स्थिति षष्टम् स्थान में
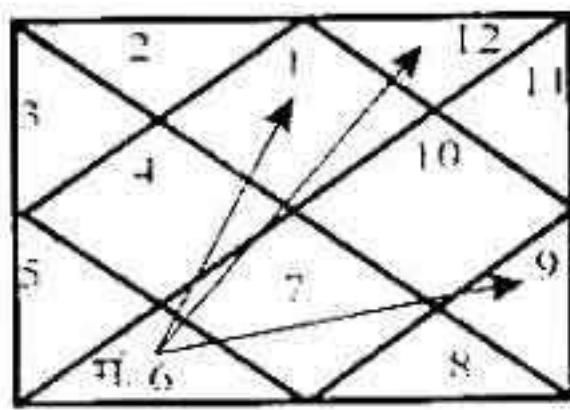
मेषलग्न में मंगल लग्नेश व अष्टमेश होता है पर लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगता। यहां छठे स्थान में मंगल कन्या राशि होकर नपुसंक होगा। बुध की राशि में मंगल प्रसन्न नहीं रहता। जातक का जीवन संघर्षमय रहता है। जातक शत्रु से-परेशान रहता है। शरीर में रोग की सम्भावना रहती है। पशु व वाहन के कारोबार में जातक नुकसान उठाता है।

निशानी–साधु-साध्वी का स्वभाव जो अपने आपको कष्ट देना ज्यादा पसन्द करते हैं एक अकेला ही धर्मवीर होगा। सत्यजातकम् के अनुसार ऐसा व्यक्ति सेना का अधिकारी होगा। पुत्र का जन्म 34 वर्ष की आयु के बाद होगा।

दृष्टि–कन्या राशि में स्थित मंगल की दृष्टि भाग्य भवन, व्यय भवन एवं लग्न स्थान पर